Argh Sandika

जयतु शारिकैः



प्रद्युम्न शिखरासीनां मातृ चक्रोपशोभिताम ।
पाठेश्वरीं शिला रूपां शारिकां प्रणमाम्यहम् ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(नौ तरंगों का संग्रह)

चौथी बार

प्रकाशक :

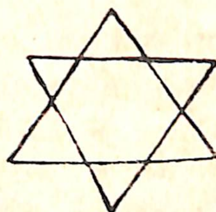
श्री श्री जगदम्बा शारिका चक्रेश्वर संस्था-हारी पर्वत
श्रीनगर-काश्मीर

मूल्य :





Angli Pandita



जयतु शारिकै:

प्रद्यम्न शिखरासीनां मातृ चक्रोपशोभिताम् ।
पाठेश्वरीं शिला रूपां शारिकां प्रणमाम्यहम् ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(नौ तरंगों का संग्रह)

चौथी बार

प्रकाशक :

श्री श्री जगदम्बा शारिका चक्रेश्वर संस्था-हारी पर्वत
श्रीनगर-काश्मीर

मूल्य ;



मुद्रक :
बन्सी आर्ट प्रेस, फोन : 73999
नई सड़क, श्रीनगर - कश्मीर

"धार्मिक–संस्कृति और कश्मीर"

कश्मीर का प्राग् - ऐतिहासिक युग (Pre - historic - Period) उतना ही पुराना है जितनी स्वयं कश्मीर की धरती और इसका परिवेश। भूगर्भ - वैज्ञानिक खोज के अनुसार सतीसर का पानी आज से तीन – चार लाख वर्ष पहले यहां से निकास के क्रम में चालू हो चुका था। नीलमत पुराण (B. C. 200) की रचना में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है[1]। दक्ष प्रजापति के हवन की आग में झुलसी सती को उठाकर भगवान शंकर ने कश्मीर के इस अपार सरोवर में अध – जली सती के पार्थिव शरीर को प्रवाहित किया था अतः इस कारण इसका नाम सतीसर पड़ा[2]। इस सरोवर के पानी को निकास देने का प्रयत्न महर्षि कश्यप की निरंतन तपस्या का फल है। इसके अतिरिक्त 'कश्मीर' देशवाचक नाम भाषात्मक तीन बिन्दुओं पर आधारित हैं।

"क + अश्म + ईर"

'क' का अर्थ है पानी, 'अश्म' का अर्थ है पत्थर या पहाड़ और 'ईर[3]' का अर्थ है बहना या निकास देना अतः महर्षि कश्यप ने पहाड़ों के बीच रुके हुए पानी को तपस्या के प्रभाव से निकास दिया और उसका नाम कश्मीर [क + अश्म + ईर = कश्मीर] पड़ा। कश्यप आर्यों की एक शाखा थी, जिनका विस्तार रूस के कास्पियन सागर (caspian sea) से लेकर कश्मीर तक था। और इनके प्रमुख नगर काश्यप स्थान[4] (काफिरिस्तान)

---

1 नीलमत पुराण :- श्लोक 45-70, 127, 150-240.
2 नीलमत पुराण :- श्लोक 127.
3 नीलमत पुराण :- श्लोक 226-227.
4 थामस वाट्टरस :- ऑन युवान च्वांगस ट्रेवल इन इण्डिया-122.

सिन्धु - कश्यप[5] (हिन्दू कुश) कश्यप - गृह[6] (काशगर) और कश्नीर आदि। यही कारण है कि कश्मीर की वैदिक तथा शैवी कर्मकाण्डीय व्यवस्था के प्रेरक ऋषि लौगाक्षि ने डंके की चोट की तरह इस बात को दोहराया है– "सरिताम् काश्यपीनांसरितो यज्ञकीर्तिम् इच्छमानानाम्"[7]। (यह सूक्त (वैदिक) उन - काश्यपियों के निमित्त है जो यज्ञ कीर्ति की इच्छा को प्राथमिकता देते है।) कश्मीर की इष्ठ देवी शारदा है और शारिका पर्वत के चक्रेश्वरी पीठ से उसका स्थान पश्चिम में पड़ता है। वास्तव में दोनों शक्ति पीठों में शिला (चट्टान) का ही भव्य स्वरूप है। अन्तर मात्र इतना ही कि शारिका–पर्वत पर चक्रेश्वरी स्वयं मौन यन्त्र स्वरूप में विराजमान है और शारदा शक्ति पीठ में मुखर वाणी स्वरूप सरस्वती है। भक्तजन शारिका के चक्रेश्वर शक्ति पीठ में श्री यन्त्र की तपस्या किया करते थे और तपस्या का वरदान शारदा के शक्ति पीठ के पास मिलता था[8]। शारिका पर्वत के नीचे वितस्ता का प्रवाह है और शारिदा भगवती के नीचे मधुमती नदी का प्रवाह है। नीलमत पुराण के आधार पर कश्यप ऋषि ने सारे देवी देवताओं को कश्मीर बुलाया और सबों ने अपना अपना स्थान यहाँ अपनाया। यही कारण है कि कल्हण राजतरंगिणी में लिखते है "तिलांशोऽपि न यत्रास्ति पुण्यास्ती र्थैवहिष्कृत"[9]। (कश्मीर प्रदेश का कोई भी ऐसा स्थान नही है जहाँ पर तीर्थ नही है)

---

5 गिलगित मैनस्क्रप्ट-212. 6 गिलगित मैनस्क्रप्ट-107.

7 लौगाक्षि पद्धति (लौगाक्षिकषिका समय 400 B.C. है)

8 शारदा महात्म्य पटल 3. 9 कल्हण : राजतरंगिणी 138.

कश्मीर देश स्वयं माँ भगवती का स्वरूप है। यह बात स्वय भगवान श्री कृष्ण ने कश्मीर में आकर, राजा दामोदर की विधवा रानी यशोवती को कश्मीर के राजसिंहासन पर बिठाते समय इस प्रकार से कही थी "कश्मीर: पार्वती तत्र[10]" (कश्मीर की धरती स्वयं में पार्वती का स्वरूप है) धर्म और धार्मिक अनुष्ठानों की दृष्टि से कश्मीर शाक्त-धर्म का अनुयायी हराप्पा को संस्कृति के साथ-साथ हो रहा है। शाक्त संप्रदाय की मान्यता हैं कि यह सारा ब्रह्माण्ड मात्र एक अपार सक्रिय-चेतना का प्रवाह है[11] (The entire Cosmic-universe is creative-conscious flow) श्री अभिनव गुप्त[12] ने अपने तंत्रालाक में इस अपार की महाशक्ति को द्वादशकाली के प्रतीक के रूप में इसका विभाजन 360° अंशो या डिग्रियों में आकर इसके स्वरूप का अपार वर्णन किया है जैसे: द्वादशकालो का स्वरूप 12 की गिनती है। प्रतिपद्य (एकं) से अमावस्या तक 15 की गिनती बनतो हैं और फिर प्रतिपद्य से पूर्णिमा तक 15 को गिनती बनती है इस प्रकार से $15 + 15 = 30 \times 12 = 360°$ अंश, इस प्रकार हमारी पृथ्वी की अंश-रेखा बनती है। यही द्वादशकाली प्रथमतः सृष्टि (creation) स्थिति (Preservation) और संहार (Distruction) करती रहती है, (क) I सृष्टि + सृष्टि, II सृष्टि + स्थिति, III सृष्टि+ संहार (ख) I स्थिति + सृष्टि, II स्थिति + स्थिति, III स्थिति + संहार।

---

10 कल्हण : राजतरंगिणी 1.72, 11 शिवदृष्टि-17.

12 अभिनवगुप्तपाद : तत्रलोक, चौथा अह्निक.

ग) I संहार + संहार, II सहार+सृष्टि, III सहार+स्थिति। इस प्रकार से काल-चक्र का बनना और बिगड़ना निरन्तर चलता रहता है। कश्मीर का प्राचीनतम धर्म इसी दर्शन पर आधारित है। जो कलान्तर में वेदिक धर्म के साथ मिलकर एक नये स्वरूप में उभर आया।

शारिका पर्वत पर अवस्थित चक्रश्वरी महायंत्र का सिद्धपीठ ब्रह्माण्ड - व्यापी शक्ति (Cosmic - universal energy) का एक स्वयभू: (Automatic) स्वरूप है। इस महाशक्ति पीठ के चारों ओर आठ भैरवों का निवास है। भैरव का सामान्य अथ है :- "भ" भरण (सृष्टि या creation) "र" रमण (स्थिति या Preservation) और "व" वमन (सहार या Destruction)। भरवों की संख्या आठ हैं, इस का तात्पय है: पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर तथा चार कोण, जसे पूर्वोत्तर कोण, पश्चिमोत्तर कोण, वगैरा। इस तरह इनकी गिनती आठ बनती है। इन आठों भैरवों में पूर्णराज भरव सदा चक्रश्वरी महायंत्र के सामने रहकर लगातार प्रवाहित - जल से अभिषक करता रहता है। चक्रेश्वरी महायत्र के बायें तरफ दक्षिण दिशा में काल शक्ति महाकालो का निवास रहता है और उत्तर में महायंत्र के दाये तरफ शारिका अर्थात विकास और समृद्धि देवी का निवास रहता है और पूर्व में सिद्धलक्ष्मी का निवास है। शीतला आदि देवियाँ भी पीठ के आस पास रहती है[13]। चक्रेश्वरी यंत्र के पास दक्षिण के द्वार पर गणनायक

13 यामिनो तत्र.

गरणपति का वास होता है और उत्तर के आस-पास वामदेव या वामकेश्वर का स्थान होता है। चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ का मुख पश्चिम की तरह् बना रहता हे क्योंकि हमारी पृथ्वी माता भी अपने दैनिक शक्ति प्रवाह को अपने अक्ष (Axis) पर पश्चिम से पूर्व की ओर परिक्रमा (Rotation) करती है। इसी परिक्रमा को कश्मीर के तांत्रिक क्रम-स्तोत्र में अस्तोदित (Rotation) का नामकरण दिया गया है। शाक्त-तंत्र शास्त्र के आधार पर जहाँ भी इस प्रकार का चक्रेश्वरी महायंत्र होता है उस प्रदेश में आंशिक शक्तियों या भगवतियों का स्थायी आवास आवश्यक होता है। जैसे चण्डी, दुर्गा, उमा, राज्ञा बाला, त्रिपुरा, भुवनेश्वरी, सरवस्ती, भद्रकाली, ज्वाला, भर्ग शिखा तथा त्रिसन्ध्या भगवती आदि। यामिनी तंत्र के आधार पर कश्मीर में इन सब ही शक्तियों का भव्य निवास है यही कारण है समूचे भारत में "चक्रेश्वरी महा श्री यंत्र" मात्र कश्मीर में ही है। महाकवि बिल्हरण ने 'विक्रमाङ्कदेव चरित' में कश्मीर के प्रद्युम्नपीठ के चक्रेश्वरी महा श्री यंत्र को इन शब्दों में अपनी भावना प्रकट की है "यत् प्रद्युम्नक्षितिधरनिभादुत्तमाङ्गं बिभर्ति"[14] (शारिका पर्वत का प्रद्युम्नपीठ महायंत्र गर्व से सिर उठाये हुए है)

यामिनी तंत्र के आधार पर चक्रेश्वरी महायंत्र के पादतल (bottom) में पूर्व और पश्चिम की दिशाओं में निरन्तर जल कुण्ड का प्रवाह होना आवश्यक है। शारिका

14 बिल्हरण : बिक्रमाङ्कदेव चरित, सर्ग 18, 15, (10th century A. D.)

पर्वत के पश्चिम में पूर्णराज भैरव का जल-कुण्ड है और पूर्व में पुष्कर बल (पोखरी बल) का जल कुण्ड है [कश्मीरी भाषा में जहां भी पानी या पानी का प्रवाह होता है, वहां बल साथ जुडा रहता है जेसे देवीबल, यारबल, नागबल हजरत बल आदि]

पौराणिक कथा के आधार पर मां शारिका (मैना, कश्मीरी हॉर) का स्वरूप धारण करके अपनी चोंच से मेरु पहाड़ के एक बड खण्ड को उठाकर उस भयंकर राक्षस के उपर फेंका जिसके फलस्वरूप वह राक्षस वही नीचे दबकर मर गया। शारिका महात्म्य और सोमदेव के कथा सरित सागर में इस प्रकार की कथाएँ मिलती है। नीलमत पुराण (200 B C.) में शारिका पर्वत के चक्रेश्वरी महाश्रीयंत्र का ऐतिहासिक साक्ष्य इस प्रकार से मिलता हैं :-

आषाढ नवमी चैव यशोविजयकांक्षमि।
पूजनीया महाशक्ति चक्रेशयंत्र वासिनी॥ १७

[यश और विजय की कांक्षा रखने वाले मनुष्यों को आषाढ शुक्लपक्ष नवमी (9th day of Bright fort night of Ashadha) को चक्रेश्वरी महायंत्र की पूजा करनी चाहिए]

नीलमत पुरान से लेकर कश्मीर के सब ही संस्कृत इतिहासकारों ने शारिका पर्वत और चक्रेश्वरी महायंत्र का साक्ष्य प्रस्तुत किया है। इस में कल्हण, जोनराज, श्रीवर और शुक विशेष उल्लेखनीय है। प्रवरसेन द्वितीय के समय कल्हण लिखते हैं :-

---

15 शारिका महात्म्य. 16 सोमदेव : कथासरित सागर 73, 109.
I7 नीलमत पुराण.

"श्री पर्वते पाशुपतव्रतिवे षस्तमागतम्"[18] ॥ [उसी समय श्री पर्वत अर्थात् शारिका पर्वत के निवासी तथा पाशुपत मत के व्रत के व्रती अश्वपाद नाम के सिद्ध ने अपने मेहमान राजपुत्र प्रवरसेन को भोजन के लिए कन्दमूल देते हुए इस प्रकार कहा]

'श्री पर्वत' शारिका पर्वत का दूसरा नाम है, जिसका संबन्द महाश्रीयंत्र से है। यहां इस बात का संकेत देना आवश्यक बनता है कि मुगल सम्राट अकबर द्वारा बनवाई गई बड़ी दीवार[19] या कलाई से पहले देवी आंगन का इलाका "सिद्धगिरि पाद"[20] तक फैला था। 'सिद्धगिरि' स्थान वाचक नाम भाषा के अपभ्रश के कारण आज 'सज़गँरी' मोहल्ला है। जहाँ पर पूर्णराज भैरव का मन्दिर और अमृत-कुण्ड (चश्मा) है। देवी कांगन और सज़गरी मोहल्ले के बीच का इलाका आजकल 'हवल' कहलाता है। शक्तितंत्र के आधार पर इसका प्राचीन नाम "शवर"[21] था जो आज 'हवल' कहलाता है। शवर शब्द का सवन्ध पाशुपत से है। अतः हवल का इलाका पाशुपत संप्रदाय का एक पावन तीथ सगम रहा है। पंचस्तवी में इसका साक्ष्य इस प्रकार से

18 कल्हण : राजतरंगिणी 3 267.

19 अबुल फज़ल :- अकबर नामा 1084-85.

20 कल्हण : राजतरंगिणी 3 378 [कश्मीरी भाषा में 'द' का परिवर्तन 'ज़' में हुआ करता जैसे संस्कृत सिद्धकथा (सीधी बात) किन्तु कश्मीरी 'स्येजकथ' (सीधी बात)]

21 सस्कृत में 'शवर' का अर्थ शिकारी। कश्मीरी अपभ्रंश में संस्कृत भाषा की 'श' ध्वनि 'ह' में बदलती और 'र' 'ध्वनि' 'ल' में बदलती है। इस प्रकार सस्कृत 'शवर' 'हवल' में उभर आया है।

मिलता है :- "शिवामन्वग्यान्तीम् शवरमहमन्वेमि शवरीम्"[22] [शिकारी रूप शिव के पीछे-पीछे चलती हुई—शिकारिनी का रूप धारण किए हुए शिव शक्ति स्वरूप माँ भगवती को बार बार प्रणाम करता हूं] कश्मीर के महाराजा रणादित्य के राजकाल का वर्णन करते हुए कल्हण कहते है :-

रणारम्भास्वामिदेवौ दम्पतिभ्यां व्यधीयत्।
मठः पाशुपताभ्यां च ताभ्यां प्रधुम्नमूर्धनि[23] ।।

[इस प्रकार रणादित्य और उसकी महारानी ने रणारम्भा स्वामी तथा रणारम्भा देव नाम के दो मन्दिर बनवाये और पाशुपत संप्रदाय के साधकों के लिए प्रधुम्न शिखर पर एक मठ का निर्माण किया]

चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ का प्राचीनतम नाम 'प्रधुम्न - पीठ' रहा है। जैसे "प्रधुम्नपीठे स्थिता"[24] (प्रधुम्नपीठ पर ठहरी हुई)। पचस्तवी में भी चक्रेश्वरी शक्तिपीठ का नाम "प्रधुम्नसीम्नि" ही मिलता है[25]। कई टीकाकार भ्रम के कारण 'प्रधुम्न' का अर्थ कामदेव या भगवान श्री कृष्ण के पोते अनिरुद्ध से जोड़ते है जो सरासर गलत है क्योंकि शाक्तमत श्री कृष्ण से भी प्राचीन रहा है। इस तथ्य को गीता जी में भगवान श्री कृष्ण स्वयं "मम योनि महत्ब्रह्म" (मेरी शाक्त योनि ही विशाल ब्रह्म है) कहकर स्वीकारते है। वास्तव में संस्कृत भाषा में 'धुम्नम्' का अर्थ है— शक्ति, चेतना, सत्ता या बहूमूल्य संपत्ति (Energy, Strength,

---

22 पंचस्तवी : सकलजननीस्तवः, स्तव 55.

23 कल्हण : राजतरंगिणी 3.460.   24 शक्तितंत्र.

25 पंचस्तवी : चर्चस्तव 2.14

power valuble Property) "द्युम्न" के आगे का 'प्र' उपसर्ग (Preflex) है। संस्कृत में 'प्र' का प्रयोग उत्कर्ष (Exalation) के लिए होता है जैसे :- ताप (आंच) प्र+ ताप=प्रताप (विशेष आंच) इस प्रकार से 'प्रद्युम्न' का अर्थ है "ब्रह्माण्ड व्यापी अपार चेतना" Infinite casmic conscious enegrgy)। यह एक अद्भुत आश्चर्य का विषय है कि कश्मीर के इतिहासकारों ने शक्ति चक्र चक्रेश्वरी सिद्धपीठ का नाम 'प्रद्युम्न' ही प्रस्तुत किया है। कल्हण[26] ने प्रद्युम्न-मूर्धनि तथा प्रद्युम्नपीठ, जोनराज[27] ने प्रद्युम्नाद्रि तथा प्रद्युम्न-गिरि, श्रीवर ने प्रद्युम्नशिखर[28]। सोमदेव ने भी अपने कथासरित[29] सागर में शारिका पर्वत के लिए प्रद्युम्न पीठ का ही नाम दिया है। जोनराज सुलतान बडशाह के दरबारी इतिहासकार रहे है (1420 59 A.D.) उनका कहना है कि सुलतान बडशाह ने प्रद्युम्न पीठ की तलहटी में ही अपने नये नगर का निर्माण करना चाहा। जोनराज के कहने का तात्पर्य यह कि सुललान बडशाह ने शारिका पर्वत के प्रद्युम्नपीठ की छात्र छाया में अपने नये नगर का निर्माण करना चाहा[30]।

कश्मीर के शाक्त सप्रदाय (cult) का सीधा संबन्ध विनष्ट हराप्पा की संस्कृति से है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण

---

26 कल्हण : राजतरंगिणी 3.460, 7.1616
27 जोनराज : राजतरंगिणी–589
28 श्रीवर : जैनराजतरंगिणी–1.7.104; 2.88
29 सोमदेव : कथासरित सागर 73,109.
30 जोनराज : राजतरंगिणी - 589.

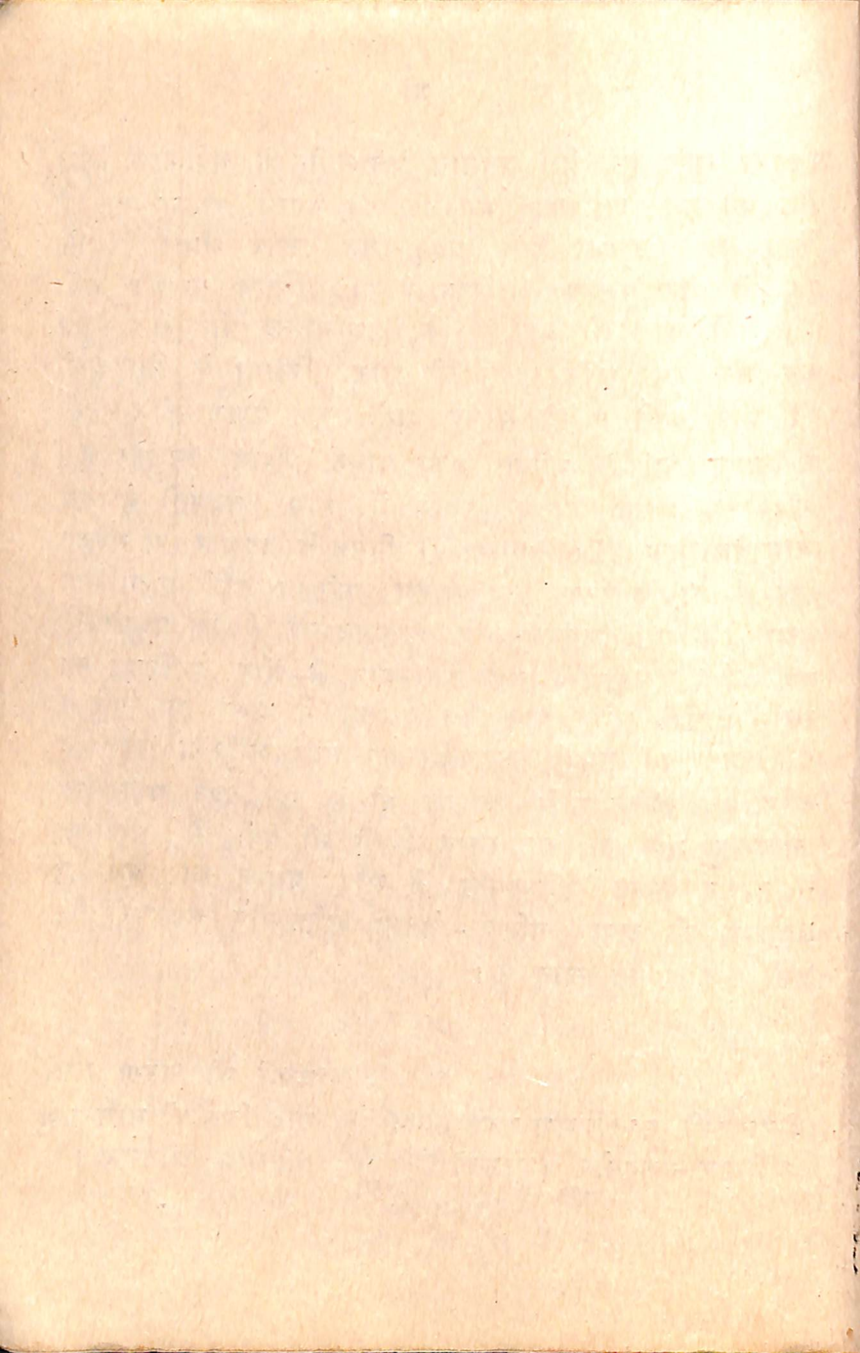
हेरत (शिवरात्रि) के पर्व पर पूजा जाने वाला सन्प-पोतल (स्थाणु-पुत्तल) है क्योंकि हराप्पा की खुदाई में भी पक्की मिट्टी के 'सन्यपुतल' एवं 'सन्यवारी' आदि बडी तेदाद में मिले है। यह एक स्वीकृत तथ्य है कि मोहन - जो - दारो और हराप्पा के लोग शिव और देवी पूजा के उपासक कश्मीरियों की तरह ही रहे है। इस कारण हेरत, हार मण्डल, हार-गिन्दुन और हांग (मैना) आदि उनके ही धार्मिक उत्सव रहे है और इस प्रकार हराप्पा से कश्मीर तक एक ही धार्मिक संस्कृति के लोग आज से 5000 वर्ष पहले रहा करते थे।

अन्त में चक्रेश्वरी के महाश्रीयंत्र के बारे में कुछ कहना आवश्यक बनता है। चक्रेश्वरी महापीठ शिला के रूप में विधमान है और शिला पर विभिन्न प्रकार के त्रिकोण, पञ्चकोण, षट्कोण, अष्टकोण, दशकोण, द्वादशकोण, तथा षोडशकोण गोलाकार वलयों की तीन जोड़ियां इसके अतिरिक्त दक्षिण में गणेश जी का सिर, तथा तीन स्थानों पर मैना (हॉर) की अकृतियां है। इसके अतिरिक्त बीच-बीच में मोहन-जो-दारो के आकार के अक्षर और ब्राह्मी लिपि के अक्षर और वर्ण उकेरे या खुदे (Carved) हुए मिलते है। अश्चर्य तो इस बात का है कि प्रत्येक खींची हुई रेखा एक तो स्पष्ट और सीधी खींची हुई है और प्रत्येक बिन्दु पर कोण का निर्माण करती है। एक व्यवस्थित श्रीयंत्र, जैसा कि बंगाल आसाम, केरल कर्णाटक और मध्य भारत के शाक्त पीठों में मिलता है, कश्मीर के प्रधुम्नपीठ का चक्रेश्वरी यंत्र उनसे यथार्थ में भिन्न है। हमे संयम से इस बात को नये सिरे से समझना है कि कहीं किसी अन्धकार के युग में हमारी अतीत की

परंपरा लुप्त हुई है। वर्तमान प्रद्युम्नपीठ के चक्रेश्वरी सिद्ध पीठ को हम शारिका भगवती का स्थान समझ बैठे है किन्तु सबसे उलझा हुआ प्रश्न यह उभर आता है कि एक ही पीठ पर दो शारिकाओं का अस्तित्व सम्भव नही है। सही बात तो यह है कि प्रद्युम्नसिद्ध पीठ से उत्तर कर जब हम उत्तर दिशा की ओर परिक्रमा के लिए आगे की ओर बढते है तो सामने दायें तरफ पहाड़ की तलहटी के ऊपर 'हांरी' भगवती का पावन स्थान मिलता है। कश्मीरी भाषा में 'श' ध्वनि में प्राय: बदलती है इस भाषावैज्ञानिक (Lenguistics) नियम के आधार पर संस्कृत 'शारी' या 'शारिका' का स्वरूप हारी या हॉरी या हारिका हुआ है। अतः प्रथमतः हमे यह समझना है कि प्रद्युम्नपीठ का स्थान चक्रेश्वरी यंत्र का स्थान है और शारिका का स्थान 'हॉरी' का स्थान है। वास्तव में अगर हम फिर से इस बात को समझे कि पर्वत का नाम शारिका पर्वत है और वह इतिहास से स्वीकृत भी है रहा प्रश्न शाक्तपीठ चक्रश्वर यंत्र का, वह स्थान किसी भी देवी से संबन्धित न होकर केवल प्रद्युम्नपीठ है और प्रद्युम्न का अर्थ है ब्रह्माण्ड की अपार सक्रिय - चेतना शक्ति और चक्रश्वरी पीठ इसी का शक्ति स्रोत है।

सन्तों की चरण धूलि
डा० त्रिलोकी नाथ गंजू
82 सत्थू श्रीनगर।

होराष्टमी सप्तर्षिशुभ संवत् 5059
श्रीनगर - कश्मीर (भारत)



वर्ण क्रमानुसार भजन सूची

भजन	पृष्ठ	लीला	रचयिता	
		उ		
४२	73	उत्तम भाव सहज़ यज्ञस	...स्व० श्री सहज़ानन्द	
६३	149	ओम परवुन ह्स. ताजदार	... ,, ,, आफताब जी	
		ओ		
७८	131	ओस कस रूज़ित अन्दरी वैर	...मा० प्रेमनाथ जी 'प्रेमी'	
४६	88	क्याह सन. गोम तत मंवित सुखस (वाक्य)	...स्व० श्री टीका लाल	
		क		
४०	68	करा इयि म्य कुन गिंदुन दिमस चंदन हार	... ,, ,, वासुदेव जी	
६७	153	कर सन. कुनुय बनि स.ति तस	...श्री नीलकंठ जी	
१११	169	कर सना ह्यियि ज़न्म यत हृदयस अदर श्री कृष्ण०	...स्व० श्री ज़िन्दा कौल	
३६	67	करसै सो.नि पोशन माल.	... ,, ,, वासुदेव जी	
८६	144	कमल रूपी चरण चा'निय रटोय शरण च्य आये	— ,, ,, कृष्ण दास	5
४७	86	कलज़ुग नहीं करजुग है यह (हिन्दी)	—स्व० स्वामी रामतीर्थ जी	
६१	106	कस क्याह ज़ेनुन छु यमि ससा'री	स्व श्री लछमण जी	
६७	113	करुम म्य हे प्रभो! मंगल	,, ,, ठाकुर जी	
१६	33	कृपा करत हरि हरै	,, ,, कृष्ण दास	6
३०	50	कृष्ण. छुक मज़ हनि ह्नि लो लो	,, ,,	
६२	108	कासि यम. मय. चोन प्रेयम त. लोलो	,, ,, परमानन्द जी	3

ह

श्री गणेशाय नमः

आदि शक्ती हुन्दुय टोठ संतान।
महा गणपत जय जयकार॥

त्रि नेत्र धारी छुक च. एक दन्तो
ड्यूकि छुय शूभान चन्द्रम तार
गज़ मुख बाल चन्द्र लम्भूदरो। महा०

सिज हंदि दात छुख च. विनायको
वल्लभा ह्यथ गगुर वाहन
दीवन हंदे चय सिद्धि दातो।
महा गणपत जय जयकार॥



नमः शिवाय

तारि छुस गोमुत तार दिम भवसर.
शंकर ईन्य आर म्योनुय॥

१ यावुन ह्यथ गोम यिथ प्योम बुजर
स्वप्न वथ ओस लुकचार म्योनुय
न्यथ हाव शिव रूप मंज चिथ मन्दिर.। शंकर०

२ माया ज़ाल वठ रठ चठ अकि दर.
लबि कनि थव परिवार म्योनुय
अन्तर मुख रोज़ सुख भर. दुःख हर. शंकर०

३ वैराग्य मछ जोर सु.ति त्याग खंजर.
देह अभिमान मद मार म्योनुय
जिन्द थव वांसि सू.ति सेज़र त. पजर.। शंकर०

४ वासनायि म्यानि मंज बस प्रकृति पर.
पछि़ सुस्त थव आचा़र म्योनुय
लछि़ प्यठ प्योमुत छुस करतम खर.। शंकर०

५ क्या कर सारे वांसि कोर म्य गर. गर.
कस अकिस वोत उपकार म्योनुय
नशनिक वेल. पशनुय व्ययि अरसर.। शंकर०

६ वासनायि अरखोरस करनाव अर.
च़न्दुन कर दिवदार म्योनुय
यारि ह्यु सब्ज कर अद वन्दस दर.। शंकर०

७ अन्न दात जानि मंज ख्यन चन उदर
सु आहार पूर्ण बेचा़र म्योनुय
असत्वुथ च्य कुन कर शांती श्रोक पर.। शंकर०

८ सास व-ज़ उलट रायि कोह् जन गयि खर.
वास कचि ह्यु विस्तार म्योनुय
दय छुक त लय कर निर्णय-नय स्वर.। शंकर०

९ प्राख जन्मचि खंडिथय आधि गयि खर.
अति क्या पकि वाटजार म्योनुय
थोद तुल त. पथर प्योमुत प्यठ थर.। शंकर०

१० प्रारब्ध फल बूगनुय छुम त. क्या कर.
पोत फेरनस छुन वार म्योनुय
प्रानि वैर मंज़ कड नवि धैर्य सू.ति दर.। शंकर०

११ दोह आयि छोय दित अन्दर त न्यब्र.
अज़ ननि कुस आसि यार म्योनुय
परद थव कोंग पोश हरद क्यथ गछ़ भर. । शंकर०

१२ छ्योट त. श्रूच़ मत. बुछत. अछत. म्योनुय घर.
शिव लूक ह्यु बनि द्वार म्योनुय
यमदूत खोचन सू.ति अभय बर. । शंकर०

१३ छ़िट वासना म्यानि छल निर्मल सर.
काम क्रोध चमार मार म्योनुय
ब्यल पत.र सू.ति वातिजे जन वर हर. । शंकर

१४ विचित्र पूज़ च्यत नेत्र कमल कर.
इन्द्रिय शुत्र रूग हार म्योनुय
ब्यल पत.र सू.ति प्रेधान करनेश्वर. । शंकर०

१५ पाद थकि पकि. पकि. नाद करत. अन्दर.
खलवत बनि दरबार म्योनुय
ज़गतचि रक्षायि हंज़ विन्था कर. । शंकर०

१६ उपकार सू.ति पननुय छुक च. वुपर
रचि वति लगि रोज़गार म्योनुय
दात नाव कडनावतम ज़गत ईश्वर. । शंकर०

१७ कम कार करनि आस गम कास दम मर.
यार छा यि भ्रम संसार म्योनुय
ही अगम अपार ही दिग्मवर हर.। शंकर०

१८ लूक हंज़ि ज्यवि परनाव परात परात
परनय महिमना – पार म्योनुय
पुष्प दन्त आचारि बन नन्दकीश्वर। शंकर०

१९ सत संग रंग दिम राय मुख भंग पर.
ध्यान सू.ति प्राण सन्दार म्योनुय
यति तति शुभ अन युथ न. वति प्यठ मर.। शंकर०

२० अज्ञान काठ ज़ालित भस्माधर
तीज़ रूप थव आकार म्योनुय
देह कतिरिस दुह कास भास भास्कर.। शंकर०

२१ चित. पीडा कास नत. यति क्या कर.
मृत विज़ि छांड हितकार म्योनुय
ही इष्टदीव भ्रष्ट प्रकृत थव म. ज़र.। शंकर०

२२ पाप ज़ाल अग्नि नेत्र सू. ति जटादर.
चय छुक व्यग्न. हस्तार म्योनुय
न्यवरथ दिम अछि क्याज़ि लगनम धर.। शंकर०

२३ शुरि त. बा'च बुछ बुछ ओश त्रावान जर.
कुस वदुन स्यद करि कार म्योनुय
यिन त्युथ मर. ध्यान. निश गछ. व्यसमरः। शंकर०

२४ वांसि हन्दि करतूत ब्रोंठकनि गयि खर.
मृत विज़ि ती निवार म्योनुय
मन निम परम सुख दिम परमेश्वर। शंकर०

२५ हे महेश ज़गत ईश हे विशेष ईश्वर.
छति कीश बोज़ ज़ार पार म्योनुय
दीश. दीश. फिर म वातनाव पननुय घर.। शंकर०

२६ मोह मस चथ छुस दूश लद फिर म्य सुर.
आशतोष केंछ.। यार म्योनुय
कृष्णस मोछ प्राव नाव अमरीश्वर.। शंकर०



फुल. वनि सोन्त. छुय म्योन सालो।
लालो अज़ वलो माल्युन म्योन।।

१ आरवल आर क'च् गयि. कमि हालो
चालि चालि ओश दारि हारान छस
यच् काल गव वुछ प्रार कूत कालो। लालो०

२ यमबरज़ल लजमच् भुमबरनि जालो
प्याल ह्यथ मसवल प्रारान छस
दूरिरुक दाग दिलस ह्यथ छुयमु लालो। लालो०

३ माय चानि सुलि विलि फोज़ि ही मालो
ल'यि लोस इ.य कर दिय दर्शुन
द्रिय चानि छम वुछ यूत नो ब. चालो। लालो०

४ रोश रोश करहै पोषन मालो
रोशि मति गमोय ना गोशन म्योन
रोशि मा पोष.नूल दोह गछि वोबालो। लालो०

५ आदनुक याद पाव बाद. मो डालो
नाद लोय कुकिलव गीविन्द गू
आदन वाजि म्यानि त्राव शुरि खयालो। लालो०

६ वा'लि वन्त. इयना ना'लि छस मालो
वा'लि छिस कनन्य ग्राय मारान
का'लि मा रा.वव कस क्या मलालो। लालो०

७ साकया प्याल चाव माला मालो
युथ न.स. बाकी रोज़ी ग्राव
मस चथ रस. रस. बन. मुतवालो। लालो०

८ सास मंज़ खास सुय रटहोन नालो
सास मलि सन्यास मेलि गोपालो
भासकर सास छुय ना'ली नालो। लालो०



१ म्य सोंगे पान. दर्शुन चोन बन्यमना शारिका दीवी
मनस मंज राग चोनुय वनि सन्यमना शारिका दीवी।

२ म्य पियिनः माज्य पायस मन, ब. करहय चात्र आराघन
म्य अन्दरी चानि लोलुक श्रेह, गन्यमना शारिका दीवी।

३ यि दिल म्योन ज़न छु क्रेन्खा अख,
लगित क्रेहज़र छु अथ प्यठ सख
अक्षर अथ पन.नि भक्ति हुन्द ख.नखना शारिका दीवी ।

४ ब. छुसना क्रूर अज्ञा'नी, स्यठा मुरखा त. अभिमानी
म्य माता गाश ज्ञानुक सु'य अन्यमना शारिका दीवी ।

५ लगान कोताह मधुर दुनिया, यि खा'ली आसवुन स्वप्ना
म्य सोरुय सिर ज़्यनुक मरनुक न. न्यमना शारिका दीवी ।

६ दिवान भ्रम आय मोह माया, दया करिना महा माया
म्य संसारच यि मोह माया छन्यमना शारिका दीवी ।

७ ब. प्रेमी छुस तसुन्द अभिलाश, करिम ना माज़्य पूरण आश
उपाया भव.सरस तरनुक करिमना शारिका दीवी ।



होश. पोश. नूल थव कन
वाणी वन हारि लोलो ॥

१ राधा कृष्ण कृष्ण वन लोलनि अशि दारि लोलो
रंग किञ तस ह्य् बन वाणी०

२ गु'ड कर मन बिंदराबन अद. नेर ब'रि त. दारि लोलो
श्याम रूप वुछ हन हन वाणी०

३ चाव वीद कामदीनन थन भखचि हंज़ि चड़वारि लोलो
चथ बनि आनन्द गण वाणी०

४ तती व्रच गूपियन कुरमुत छु मन तारि लोलो
व्यापक वासुदीवन वाणी॰

५ प्रेम. सूत्य कर मन बिन्द्रा वन नाद लायस प्यार लोलो
भक्ति भाव. अख बनि दु्ंन वाणी॰

६ बुज जसुदा छ्.स ललवन मूह पूतनायि मारि लोलो
यछ् बवि दु्ंध चन सतज़न वाणी॰

७ भक्ती मंज वन अरज़न रथ. वान सुय लारि लोलो
किसि प्यठ छुस गोवर्धन वाणी॰

८ मन. वाजे कृष्ण नाव खन धीर. अल्मास तारि लोलो
गलि पानय क्रूध. दर्योधन वाणी॰

९ हिमसाये कंसस मारन सूक्ष्म दारे तलवारि लोलो
माछि यइम राज तस ह्यु ज़न वाणी॰

१० खटय् खटय् छु नोन बासन अंदरिमि छपि छारि लोलो
चित् वुज़मल. घट कासन वाणी॰

११ वृन्दा वनकुय वन मन म्योन उच्चारि लोलो
सब्ज ज़न लगि चरणन वाणी॰

१२ दास यति राम खेलन व्यास नारुद त. लारि लोलो
बोलनावुन शुकदीव ज़न वाणी॰

३१ यूगियव भूगिथ भूगन दोपहस ब्रह्मचारि लोलो
निर्मल निष्कल निरगुण वाणी॰

१४ कृष्णस टोठ विष्णारपन नत. यति क्या लारि लोलो
जान्य मंज तस ति सोहम अन वाणी॰

ॐ महाराज्ञायै नमः

व्यज्ञान मूर्ति राज्ञा ज्योती सुज्ञान आश्राण च्य प्रज्ञावान
सत् चित् आनन्द गण उदैती कोटी सूर्यन हुंद च्य प्रकाश
सुराट भाव. किन्य फैले मची विराट रूपस बाह्य अंतर
सम्राट शक्ति सम्वित ज्योति तत् त्वमसि पद चोन विकास
पूर्णा पूर्ण. तीत सम्वित ज्योति भेदा भेद पर शिवाक्षर
खन्डाखंड अवतरणन भगवती, सत् सौ प्रकाश



अन अपीछत भावनावतम पूर्णानन्द म्य मनस
टोठि तस विन कें‌ह न ज़ानुन गव ज़ि टोठयोम दय मनस ।

१ पांन्य पानय ज़ान ज़ानिहे मानि बूज बुज़मानि हे
क्युथ त. क्या, कति तति व्यपान कव. नवि हे त.प्राणि हे
बोज़िनय बूजिथ त. रोजि नय कूच़ वाय़ वन्य नय मनस
टोठ तस विन्य कें‌ह न. ज़ानुन, गव ज़ि टोठयोम दय मनस

२ भोग भुक्ता क्षेत्र क्षेत्रज्ञ शिव शख्त. ई वुनुय
शम त. दम तय भाव भावना भक्त मुक्त ई वुनुय
चक्रवरतस त. कंगालस वयि वुंन ई वय मनस टोठ०

३ ब्रह्म निर्वाण शब्द प्रकाश अन्दर. न्यबर. अछरी
हुंल त. स्युद शुज़रिथ ओचव सू.त्य वार पाठ्यन वाश रुस्त
दगि. लोलच लगि हे क्या रगि रगि ई पै मनस टोठ०

४ जग छु संग्रामा त. मन छुय राज. अमिकुय ज़ेन वन्य
वासना न्यरवासना ह्यत अप्रमानस मेनवुन
छुन. पु'त फेरवुन वन. हा कोताह जि़ लय मनस टोठ

५ आईनस मंज वुछत केंह मा वुछ वुनिसीय रुस्तुय
आन. मंज मा मु'ख छु खटान, कांह ति अनिसुय रुस्तुय
आस मो उ'न कासती, गव खास कासिन खै मनस टोठ

६ मन व्यचारव तय मदारव सू.त्य अनुन होश. सय
मु'त लु'त लु'त होश अनुन पज़ि तिय मनोशसी
नत. क्या सुय पलज वुनुय, आसि ख्यन. ख्यन प्रिय मनस टोठ

७ शल्प शल्पत सोर कलपित कलप. कल्पांतन लगुन
पजि दु'य त्रावनि छु प्रावुण युस इ रावन अथि युन
व्यापि कुस तस व्यापकस पुरुषार्थ पोश हा बुय मनस टोठ०

८ भ्रांत तै भ्रम ज़ोनमुत संसार प्रान्यव ई वुनुख
सोंथ हरुद पनुन त. परुद दफत. तिम इम मा च़ छुख
वोन्त छा यथ भवसरस रंग रंग छिर चोय-ई मनस टोठ०

९ साध सन्त छिन. अंत ज़ानान आदि यस छुन. आसवुन
श्रुच़ हन्दे आगन्यायि सू.त्यन एक छु अनेक भासवुन
सारिनुय सुय ज़ाननुय छुय करत. ई. निरनय मनस टोठ०

१० पान. छुन. करता अकरता भाव अभावै बुरमुतुय
राव. राविथ पान पन.नुय होश. बुरमुत परमुतुय
त्यलि पप्यस करमच़ यि क्रय, ख्यति यलि चलि रै मनस टोठ०

११ आस परमानन्द प्रावित, परमानन्द ब्युन म. रोज़
स'रिसुय मंज़ सारिसुय ह्यु पार सुय वात नुन म. रोज़
ई य चेतन रूफ प्राविथ. कति विखेफ ओर लै मनस टोठ०

१ भूल बाल. बालकन सू. ति खेलनावतम
बालक अवस्था प्रावनावतम
ज़ान करनाव तम पान परज़ नाव तम
सुधि वान्यन पाठय् हाव तम रूप ॥

२ कठिने भवसर छांठ वायनावतम
मुह पोज़ वोतुम हटिस.य ताज़
लटिस.य वृषभस थप करनाव तम सुधि०

३ थज़रै प्यठ-अख नज़रा त्रावतम
शेशरम नाग म्य थावतम नेब
वनि इत. अनिरकि सनिरै म. रावतम सुधि०

४ ब्रह्मण जन्म दिथ मत. मन्दछावतम
नभ प्यठ बुन मत. दावतम दभ
अमर नाथ अमर बनाव तम सुधि०

५ दासन हुन्द दासा गंज़राव तम
मत मशि रावतम पनन्नी ज़ान
यति छ्‌ख पाने तोल वात नावतम सुधि०

६ अज़पा जप यज्ञ ज्योत प्रज़लावतम
होद शीश ज़न मुच़रावतम म्य
ही महेश छ्‌ति केश मत दिशरावतम सुधि०

७ सत् चित् आनन्द अमृत चावतम
नित्य बास नावतम सोहम सू
ॐ शेव शम्भू शब्द शुभरावतम सुधि०

८ मुह मायायि सू.ति मत. तंत्रलाव तम
सत्‌ची कथ पावनाव तम याद
चित्‌ कुयि चेनुन निथ चेन. नावतम सुधि०

६ सत्‌ के निर्नय पयि पक. नावतम
दय पनने नय हावतम वथ
नाव छुम कृष्ण शिव भाव बढरावतम सुधि०

आशि चानि बरतल आस अनाथ।
दास कव. छुस उदास अनाथ॥

१ त्रय. ताप. दुःखमुत प्रेमुक स्नेह,
नेह छुम न. च्यय व्यन ख्यम ना वेह
त्रेश. त्रेश. जन्म. जन्म. पिपास अनाथ दास०

२ इन्द्रय हन्दरा विथ छुम मन
सन्दरिथ लोल रेह छुस न. हिवान
दुदमुत कमि. क.इ कास. अनाथ दास०

३ होन्यन अथि प्योमुत शाल जन
हाचि सू.त्य रूदुम न. नम न्याल नुंन
काल गुंफि सह सनदि त्रास अनाथ दास०

४ सास क्रूह छंडिथ आशावान
अथ छुन फीर्य फीर्य यूर्य. इवान
लव. तव. देव. बरन्यास अनाथ दास०

५ होशव बो वूनचमुत रोशन छुइ
वन. क्या हाल म्योन. रोशन छुइ
प्योमुत च्यानि आम. खास अनाथ दास०

६ पजि यी ती करनावत. म्य
ज्यथ ज्यथ मत. मरनावत. म्य
परमानन्द यूग अभ्यास अनाथ दास०

– ० –

परम. धामुक म्य चावतम दामो
हत्गुर. मोक्षदायक रामो॥

१ त्रय. ताप कामनायि आमतावै
व्यसरावान छुम भक्ति भावै
फिरवान त्रशना गाम. गामो सत्गुर०

२ गा'लिथ काम क्रोध ज़ा'लिथ तम
सार द्राव पथकुन कुनुय सोहम
अनुग्रह. चान्नि सू.त्य गाश आमो सत्गुर०

३ जिंद युस मरि तस क्याह् करि काल
रोज्यस न. गरि गरि मरनच ज़ाल
प्रेम अमृत चावतम दामो सत्गुर०

४ मन तय प्राण युस करि अरपण
सन्मुख सुय वुछि नारायण
इथ. पाठ्य लछमणन वुछ रामो सत्गुर०

५ तारि भवसागरस चोनुय नाव
नाव तरि त्यलि यलि गलि वरज वाव
फटि न. जि रोज़्यस न. पत. पामो सत्गुर०

६ सूरम श्रम च्य पुशरोत्रुम पान
निर्वाणकुय दिम ज्ञान विज्ञान
निर्मल निष्कल निष्कामो सत्गुर०

७ मूह त.रि सू.त्य छ्स बर. गोमुत
संताप ताप ज़र ज़र. प्योमुत
होल च्.लि चाञि इन लोल आमो सत्गुर०

८ राम लक्ष्मण च्य वन्द व्.त्र पान
परम आनन्द आनन्द प्रावाण
दाम. चावतम योग. बल. रामो सत्गुर०



च्यथ आकाशस भास्कर म्य बासतम
हच्.र भाव कास्तम हरि शम्भो ।।

१ लम्बोदर. सुर. गुरु. हर शंकर गंगाधर सोहम सो
ज़ान गाश सो-प्रकाश आस्तम त. कास्तम हच्.र०

२ तन. मन. सुउन वगुन हनि हनि ननि
फना फिला बजान शिव शम्भो
सनिधान दीप्तिमान संतुष्ट आस्तम हच्.र०

३ राम. श्याम. कृष्ण विशन शेव भव. भय. हर
सर. कुरजि वुजि. ओम हमसू
निष्क्रयमय न्यरगाय पयि भास्तम हच.र०

४ ज.ल. थल. निर्मल. निष्कल. ओजल.
सम. बल स्मरणायि दिम शम्भो
कल. माल दारवञि हनि हनि भास्तम हच.र०

५ सोवुन्द परमानन्द. आनन्द. कन्द.
नाद. ब्यन्द कृष्ण चन्द शेव शम्भो
ध्यान धारणायि ज्ञान मुख. सुख. आस्तम हच.र०



कष्ट कास्तम भगवान हरे
संतुष्ट रोजतम गरि गरे।

१ भ्रमचे वुनरे वुन. रोवुस
मूह छटि अञि घटि वति रोवुस
च्यय रुस्त कुस मे अथ.रुट करे संतुष्ट०

२ भव. सर. कूर्म.नय रटिनम खोर
इमज़ोर ला'गिथ गोस कमजोर
छांबरि लुगमुत छ.स बांबरे संतुष्ट०

३ वीर. ब. लागय शेरि पम्पोश
गद गद वानियन थावतम गोश
वद. वद. यच. छम मिज मा हरे संतुष्ट०

४ वैकुण्ठ प्यठ इत नन. वोरुय
गरुडस खसिथ त्रा'विथ सवा'री
मुकलावतम संकटच थरि संतुष्ट०

५ संकट मंज तस प्रह्लादस कन थोवथस आरचर नादस हरनाकश्यप. अद. मद. वुतरे संतुष्ट०

६ हंग आख द्रौपदी नंग रछिथस नंग. वुछनस तस सामरथ कस रंग रंग आभरण ना'ल्य तस हरे संतुष्ट०

७ लक्ष्मण छारुन परमानन्द चर चराचर युस अंद त वंद लो लो करान नेरि उन लोलरे संतुष्ट०

–०–

सनियासय हा गोसान्ने कुन्नि कन्ने इखना वन्ने ।

१ जटि मंज छय गंगा जा'री जन छि वसान अमृत धा'री
सूर. भस्मा मलिथ छु तने कुन्नि०

२ डयूकस प्यठ छिय इम त्रे नेथर शूभवन्न ज़न पंम्पोश वत्थर
वासुक नाग छुय योन्नि कन्ने कुन्नि०

३ जाय च्य रटथम शिन्या शियन छायि छयूफ ह्यथ रूदहम नयन
सर्व व्यापक छुख हनि हने कुन्नि०

४ खास वृषभा छुय वाहनय सैर. करान छुख त्रभवनय
छय च्य उमा खोवरि कन्ने कुन्नि०

५ पान म्यान्यो मो नाज़ तने काल वरिथ यऽथ सू.र बने
शिव च. गारुन मंजबाग मन्ने कुन्नि०

६ आ'रतिस कास्तम आ'रचरय घट. कास्तम अमरीश्वरय
मु'ख म्य हावतम हरमुख कन्ने कुन्नि०

७ चोन भुज़न छिय आयुधा शंख चक्र कपाल गधा
सारिन.य मंज छुख अन्दकन्ने किन्न०

ॐ नमो जगदंबिकाय ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(प्रथम तरंग)

(१)

१ गो.डञ गणपत जियस कुन कर नमस्कार।
पतह् रठ राजरेनि हु'द खास. दरबार ॥

२ व'नित क्या ह्यक. ब. देवी चा'ञ लीला।
करै वो'ञ मूर्खगियि किञ मूर्ख. खेला ॥

३ च. माता शारिका संतुष्ट म्य' प्यठ रोज़।
गदा आमुत ब.दर्गाह् छुस सदा बोज़ ॥

४ वहा'रित ज़ाल संसारन वो.लुम नाल।
करुम वो.ञ चार. नत. क्या म्योन छुय हाल ॥

५ मदन लोभन मोह्न कर्-म्च् छनम जाय।
कृपाये किञ करुम मो.कलावनुक पाय ॥

६ अहंकारन स्याठाह् ह्यो.तमुत छुनस तल।
इमन चो.न मुशकिलन माता करुम हल ॥

७ ब.दर्शन छुस न वातान न्यथ भवानी।
-क्षमा पापन म्य' करतम मा'जि भवानी ॥

८ को.ठचन शक्ती अ'छिन थावतै पनुन गाश।
दरई दुनिया फक्त चा'ञिय म्य' छम आश ॥

९ म्य' मूर्खस गछ़त. बूजित मा'जि भवानी।
सिवाये चानि वन. कुस छुम म्यो'नुय ॥

१० दिलुक तमन्ना म्य' कडतं छुस ब. चोन दास।
रक्षा करतं पद्यन चान्यन तल. य ग्रास ॥

११ कर्मफल. किञ अगर केंछा म्य छुम पाप।
क्षमा सागर च़. य'मि किञ छक करुम माफ ॥

१२ कलम तुल. पान. लेख म्या'ञ कर्म लेखा।
करुम स्य'ज़ कांह अगर ह'जि छम म्य रेखा ॥

१३ कृपा सागर. जगत माता छु चोन नाव।
शरण ग्रासै पद्यन पनन्यन तल.य थाव ॥

१४ सिवाये चानि छुम नह कांह रछ़न वोल।
च़. देवी म्या'ञ छखना मा'जि तय मोल ॥

१५ भुज़व अष्टादशव सूति कर च़. रक्षपाल।
च़. य'मि किञ ग्रास. वञ छख दीन दयाल ॥

१६ च्य रुस्तुय कस वन. कुस बोजि म्योनुय।
ब. छुसना नाबकार सन्तान चोनुय ॥

१७ यि अक मशहूर कथ प्रथ कांह छु ज़ानान।
कु पुत्र छ्य़ कु माता छय न. ग्रासान ॥

१८ मंगुन छुम न तगान बोज़ुन तगान छ्य़।
चव.वुन शुर माजि इथ पा'ठि दो.ध मंगान छ्य़ ॥

१९ दिलस य'च कोल अमिकुय छुम म्य हावस ।
दितम दर्शुन लगय पा'र्य पार्य ब. नावस ।।

२० ब. चान्यन पादि कमलन रथ वन्दय ना ।।
शरीर अर्पण पनुन च्यय पत करय ना ।

२१ पनुन ज़व जान वा'लिजि खोंठ वन्दय ना ।
पन.नि इम टा'ठि छिम सा'रिय वन्दय ना ।।

२२ लगय ना चाञि मायाये लगय ना ।
लगय ना बजि दयाये लगय ना ।।

२३ इमन पंम्पोश. नेत्रन च्यय लगय ना ।
मुकट धारी सुन्दर शेरस लगय ना ।।

२४ यि केंछा छुम चोनुय च्य वन्दय ना ।
क्षमा करतम क्षमा करतम च. क्षसा ।।

२५ च. छकना राजस्ञि राजन दिवान राज्य ।
अतीत आमुत छुस ब. बख्शुम ज्ञानकुय ताज ।।

२६ गछान दिथ छक अमीरन च.य अमीरी ।
दरई दुनिया म्य करतम दस्तगीरी ।।

२७ च्य निश शाहो गदा प्रथ कांह बराबर ।
म्य पादन तल कृपाये पनञि किञ वर ।।

२८ ब. जा'री छुस करान च्य'य दस्त बस्तै ।
करय अंर्पन जिगर ज़न पोश. दस्तै ।।

२९ दो.युम व्याखा च्य ह्यु ह्युमन. कांह ति दाता ।
बहर क.स्मुक मदद कर म्योन माता ॥

३० गंडित गुलि छुस करान च्यय ज़ार. पारह ।
प'तिमि वक्तय मतय करतम अवारह ॥

३१ परैशा'नी यि म्या'ञिय करत. वो.ञ दूर ।
इच्छाये दिल क'रित गछ़तम म्य मन्जूर ॥

३२ च़. छुख म्या'ञ इष्ट देवी कष्ट कास्तम ।
सदा सन्तुष्ट रूज़ित मनि भास्तम ॥

३३ वनान सा'री छि चा'ञ जायि सिद्ध पीठ ।
सिद्धत करतं म्य ह्यू मोक.लित गछ़िय कीठ ॥

३४ व. कश्मीर का.ति व'थि नेकनाम सतजन ।
कृपाये चा'ञि किञ सरतलि बन्योक सो.न ॥

३५ मूर्ख बोज किञ न छुम शक्ती न भक्ती ।
दयालु छुख गछ़ुम बख्शित म्य मुक्ती ॥

३६ व. छुस आरुत बन्योमुत आर्वल ज़न ।
गछ़र च़लिहेम बनिहेम आ'न. ह्यु व मन ॥

३७ अगर रछ़्दं पद्यन तल कुस म्य पोर्यम ।
तवै किञ चा'ञ भक्ती ज़ाह न. सोर्यम ॥

३८ कबूल गछ़तम क'रित वो.ञ म्या'ञ ज़ा'री ।
वन्दय रथ पादि कमलन मा'जि चो.पा'री ॥

३९ यि लीला परि युस सुबह्न त. शामन।
त'मिस देवी सफल करि मनि कामन॥

४० दपान 'दासस' छ्य चा'निस टा'ठ भक्ती।
ब दुनिया सुख ब उकबा दिम म्य मुक्ती॥

---

(२)

ऊँ श्री गुरुवे नमः।

संसार. सागरस सुम दिथ तर अपोर।
गछ शरण सतृगोर. न अद. घाट वाति बोर॥

१ जीव. अद्यास. जख्मन निज़ानन्द बुलगार
सतृगो.र यलि दियि अद. ब'लि बेमार
निर् रोग बनि योग ज़ख्मन बेहि कोर गछ०

२ मोह. बां'दिवानस काम क्रोध पहर-दार
बेडि खुल. गछ़न यलि ज्यवि श्याम. सुन्दर
वसुदेव खो.नि ह्यथ जमुनायि तारि अपोर गछ०

३ दुख. सागरस मंज देह अभ्यास करनाव
पो.त नम. त. ब्रू'ठि नम. संकल्प. विजि वाव
बठि यलि फटि नाव मटि कस छु म्योन बोर गछ०

४ गुरु. वाक्य. किञ गर भक्तियि हंज नाव
सतगौर हा'न्ज ह्यथ सुख. सागरस त्राव
वाव वछुत त्राव नाव वो.टि मंज गछ़ अपोर गछ०

५ मोह राज. रावुण राग. राक्षसन ह्यथ
शान्ती सीताइ रामस चो.ल ह्यथ
लंकायि मंज ब्यूठ दैतन दितुन ज़ोर

६ राम वन सागरस सोथ दिथ ता॰न
रावुन मारिथ सीता तारुन
शत्रु रुस्त राज्य कर पृथ्वियि चलि बोर

७ सत्गो.र सागरस स'निस त. वोग.निस
व्यापक छु पानय ग'निस त. त.निस
सत. कथ भावनय वो.टि तरख अपोर

८ ज्ञानखय सलाह गोड. घ'निराव श्रद्धा
गुरु वाक्यस प्यठ ठीकित सदा
अनुभव. अनुग्रह. दारि खुल. गछ़िय तोर

९ क'दलुक असबाब कर्मुंक विस्तार
वैराग गिलकार शम दम छ़ान खार
मुक्तिता ह्यथ बनाव नित्य अनित्य'च सोर

१० सथ डेडि सथ ठ'ठि तत् पद विशेषण
ठ'ठि दिस तमिकिय लिमय तथ शोभन
निर्वैर. भावुक कानुल तरि अपोर

११ चिल दिस बन्द मुक्ती हुन्द अभ्यास
निष्काम. बल छुय छ़ल छुय श्वास उश्वास
जीव. ब्रह्म एकतायि हुन्द दिज़्यस ज़ोर

१२ निर्द्वन्द्व. निर्वैर. निरअपेक्ष भावुक
दिस फरश काठकर गंड्स शुद्ध. भावुक
सतसंग मारजन साफि फिर चो.वापोर गछ०

१३ तत्व ज्ञा.नचि डेडि डीडि वोज़ प्रबुद्ध
वेदान्त सार तस नित्य. निज आनन्द
मज़बूत ठीकित यपारि तर अपोर

१४ आद्य अन्त. मध्य. निश. त्रिशून्य नाद बिंद
निमित्त उपादान कारण छ् अबिन्द
एक. भाव. यपारि अपोर कुन दोर गछ०

१५ हरद्वार श्राण कर सां'पनिय शुद्ध मन
भिन्न भावस स.ति ठीकित छु अभिन्न
निर्द्वंन्द हर मोल हरमो.ख. द्राव सोर गछ०



(३)

मनि छुम मेल.हा पननिस यारस,
प्रारस अ.शि मुकाम।

१ व'नि म्य दिचा़म यथ भव. सरस,
त्रन.कस वनि नो आम।
क्षण. क्षण. छ़यन नो तस.दिन कारण प्रारस०

२ बुलबुल मुश्ताक छुय गुल ज़ारन,
ज़ाह् ति नो तमन्ना द्रास।
का लि मा खज़ान लगि इथ बहारस प्रारस०

३ लोल· बागस पोश फो·लि मे, वेरि चाञ्‌ चा'र्थ
शेरि लागै भाव कोसम, शोल व·नि कारे प'ती प०

४ क्या वनय अ'सि मंदछेम·ति, चन्द· छ'नि सोदा करान
कर दया वो·ञ वुछ म·तथकुन, शर्मि स·ति अ'सि ग'लिमती प०

५ चा'नि गुण विस्तारतुक ताकत, अनि कुस कस वनि़य
छुय च्य जय जय शाम·सों·दरी, जाम· शूभान छी छ'ती पादि०

६ ज्ञान· दाता मोक्ष· दाता छख, ज़गत माता च़ छख
हे भवानी कर म्य' वा'णी, स्यद्ध मुखस दिम सरस्वती प०

७ पज़ि मन· युस भक्ति चा'ञी, करि निष्कल राथ· दिन·
क्या छु संशय तूसंदि बापत, मोक्ष·दाम· कि बर व'थी पादि

८ चा'नि गुण छुस बो विचा़रान, पन ओम· कि खरान ब· छुस
अबसनकि वर·,दो·न कुनुय कर, नत· छु आछुर क'ति क'ती प०

९ सर्व· व्यापक छख चो· पा'री, अ'सि छि शा'री क्या वुछव
वन च्य' रुस्त कुस बोज़ि ज़ारी हाव मु·ख प्यठ पर'बती पादि०

१० कर्म· हीनन धर्म हीनन, कर्तव्यन सान्यन म· वुछ
डाल स्यो·ध अथ· कर्म· लानिस प्रक्रमस चा'निस ख'ती पादि०

११ वील·ज़ा'री बोज़ 'विष्णास' रोज सन्तुष्ट सर्वदा
छुय च्य' रौशन छुस ब· तोषण, चय म्य बख्शक थ'ज·गती प०



(५)

हे कृष्ण· दया छ्य ना गछ़न, भ्रम दिथ मच़न गोख।
भ्रम दिथ मच़न न्यन्दरि ह्च़न, भ्रम दिथ मच़न गोख॥

१ क्याह रुत समय ओसुय त्यले, यले च़· राधा ह्यथ
प्रेम· स·ति रास· मंडलस मंज़ नच़न। भ्रम०

२ अन्तर बहिर रातस दोहस, असि भाग्य· वुठव स·ति
तोलान प्रेयम बोज़ तारच़न। भ्रम०

३ दर्शन दि करुणाकर· भक्त· वत्सल, उदास क·रित गोख
अथ रो·ट कर व्रच· गोपियि क·च़न। भ्रम०

४ गोपियि शुराह सास ह्यथ, शुराह छु खेलान रास
आशचर-इ कस ओस बो·ज़ मंज़ अच़न। भ्रम०

५ माया मोहन चा·न्य मन मोहन, मोहन भ्यो·न भ्यो·न ओस
मोहन रंग रूप आमुत मुन्यन। भ्रम०

६ अमृत रूपी दर्शन· मो·खय, व्याकजि गा·मच़· छ्य
शुर्य ज़न बो·छे ह्च़न ब्रछ़न। भ्रम०

७ छ्यन कमि सो·नि साञ्नि ग्युतुय क·रित, कन क·मि भ·रिय सा·नि
मन सोन इनस छ्युय ना पच़न। भ्रम०

८ अमृत· वषण· नारायणो, शेहलाव मन·य सोन
सन्ताप भव सागर· दज़· मच़न। भ्रम०

९ असि लोल चोनुय गन्योमुतुय, कमि सो·नि ग्युतुय च्य डोल
सुय लोल सन्योमुत असि कच़न। भ्रम०

१० ब.रय च्य कर्यथ विश्वम्भरय, वरय अचख ना
छुय ना सोन ज़र. ज़रै गछ़न। भ्रम०

११ त्या'गित लजायि क्रा'निस द्राये, सेवायि आये च्यय
पज्या. अनह्यों.त लागुन ह्यच़न। भ्रम०

१२ आदीन अनाथ भक्त आ'र.ती, पालान छि धर्म त. दान
हितकार अपकार करान गछ़न। भ्रम०

१३ श्रीधर. करुणाकर. श्याम. सों, दर., ज्ञानान च्य छि भास्कर
भ्यो.न छुख न सति सति आ'सित ज़च.न। भ्रम०

१४ प्रेमन त. वीणायि आनन्द स्वरन, भ्रम दित न्यून मन सोन
ब्रजवा'सी दा'सियि म'लि ह्यच़न। भ्रम०

१५ प्राणो ! यी च्य क'र.थ वा'णी, फीरित ब. इमोव. यूर्य
दुबार. मो.ख होवुत न. मोह. हच़न। भ्रम०

१६ केशन त्रा'विथ भूषण पूरित, डेशन छिन. मो.ख चोन
दर्शन करन वाजे मच.न। भ्रम०

१७ ज़ा'न्वी न. असि चा'न्य सेवा क'रित, पूज़ा त. तो.ता केंह
दया कर असि विच़ार रछ़न। भ्रम०

१८ पज़िहे नतय छा धर्म करुन, फीरित न. नज़.र दिन्य
त्या'गित मथुरायि गोख अछ़ रछ़न। भ्रम०

१९ चित बुद्ध मन प्राण अर्पण क'रित, ध'रित छु चोनुय ध्यान
सुय ध्यान खेलान असि ज्ञान. वच़न। भ्रम०

२० रछ असि त्रण. त्रण. सारिय निशे सारिय ज़न राज ह्यथ
'केशव' आव आपदायव त्रचन। भ्रम०

---

(६)

पो.त जूने मो.त सुल. नोवुम, लल. नोवुस नारायण।

१ प्रयि त'मिसं.ज़ि हियि तन ना'व.म, पोश वथरस प्यठ गोशन
रोश. इयि ना होश राव. रोवुम। लल०

२ बाल. पान तस पत. राव. रोवुम, हाल. कमि सुय नाल रटहन
शिव. शम्भो शून्य बोल. नोवुम। लल०

३ काम. देवस नाम. लेख. नोवुम, पाम थविनम कर डेशन
रुम. रुमै. राम रम.नोवुम। लल०

४ द्वार प्यठ द्वार. वार. वुछ. नोवुम, ज़ूनि छोंडुम मंज तारकन
मारकन मंज लाल. उलसोवुम। लल०

५ लो.लि मंज़लि लाल.लल. नोवुम, बोल. नोवुम सुबह शामन
चीर्य सोवुम सुलि वुजनोवुम। लल०

६ ज़ीर. बम. कुय सीर वु.ज़नोवुम, फेर. नोवुम तति हेरि बो.न
वेरि तमिसं.ज़ि शेरि वात. नोवुम। लक०

७ ज्यव नार.स.ति वार.छल.ना'व.म, तव. लोलुन नार शोलन
कनव बूज़ुम अ'छिव वुछ. नोवुम। लल०

८ कंद नाबद आरद नोवुम, फंद कंरित यूर्य अनतन
अंद लो.ब्रमस न.वों.द फोल.नोवुम। लल०

९ हंस. द्वारय वार. प्रज.नोवुम, प्रारि प्रारोस राम. रादन
ब्रह्म.सर पान सर. कर. नोवुम। लल०

१० अथवासय रास खेल नोवुम, श्वास उश्वास नो.न छु भासान
सास 'भास्कर' विकास भासनोवुम। लल०

---

(७)

प्रातः काल आव म्यंति अनत. गाश मति.
छम चांन्य आश म्य,ति पूरण कर।
लटि मुख हाव मोह. गटि करत नाश मति,
छम चांन्य आश मति पूरण कर।

१ जन्मादि जन्मन ग्यूर आम फेरान.
छुस हालि हांरन डेंशत कर
जल हाव मुख पनुन छुम न. बरदाश्त म्यंति छम०

२ भक्ति भाव. स.तिन वति चान्यि नेरय,
कति छुख आसान पैगाम सोज।
नत. दिम पन.नुय प्रोन यादाश्त म्यंति छम०

३ मोह. गटि मंज छुस वथ छमन, ईवान,
सत्गुर. हावतम सत.चिय वथ।
वथ हाव नो.न त्राव सूर्य प्रकाश म्यंति छम०

४ हनि हनि फयूरुस ह्यथ मनि कामन,
शहरन त॰ गामन कति आसि यार।
छुख पाताल किन॰ छुख आकाश मति छम॰

५ निर्वासन॰ वनत॰ कति चोन आसन,
अन्धकार कास्तम वन्दयो प्राण।
करतम सो.दि वाञ्जि हिश बा'श मति छम॰

६ कल्पनायि रुसतूय कल हो वन्द.यो,
कलि चाञ्जि रा'व.म न्य'न्दर.र त॰ नेह
वो.ल॰ वोञ्ज विष्णस' च.लि अभिलाष मति छम॰

---

(८)

हरे राम॰ टाठि मित्रय म्यानि।
लागय दान॰ दान॰ तुलसी॥

१ कौशल्या हृदय॰ आनन्द॰ घन॰ पादि कमलन पान वन्दयो
निर्वन्धन॰ रघु नन्दन॰ दासस कास भव॰ बन्धनय
महा प्रभो शुभ॰ दर्शन दि लागय॰

२ हा राम॰ श्याम॰ सुन्दर देव॰ हृदयस वेशि सेवै चा'नि पदम् पाद
शरणे आससै वासु देव॰ चावतम चरण॰ चरण॰ अमृत प्रसाद
परन प्योसस सर्व॰ ईश्वर॰ चे लागय॰

३ ज़गतस उत्पत्त स्थित तय नाश तमि निश. सांपनुस निरआश
आदि देव. त्वं स्वयं प्रकाश केवल छम चरणाबिंद. चिय आश
तन. मन. पान पुशुरमय च़ लागय०

४ यस चावि ईश्वर प्रेमय रस तस थाविन. भव. नियम च्यतस
त्राव राज्यस त. अमृतस प्राव. नाव्यस परम. तत्वस
जीवन-मुक्त सांपनान प्रेमी लागय०

५ स्वर्ग सुख. खो.त. रस रागस रस. रस. व्यस, रावा'नी
जगत आकार. वृत्ति बानस चित्त. निश. म'श रावा'नी
राग. रस ज़ानि अख वैरा'गी लागय०

६ मूर्ख ज़ीवन काम. रस चाव जन्म. मृत ज्वरा रोग भागी
ज्ञाता ज़ीवन राम. रस चाव स्वत: सांपनान सर्व. त्यागी
शुक देव सु देव दत्त साक्षी लागय०

७ प्रेम. अगनस तेज़ बलवान भव. नियम. काष्ट बीज़ गालान
प्रेमी मनस छु संभालान नियमी ज़ीवन बन्धन गालान
सहज़ प्रेमी सदा नियमी लागय०

८ आश्चर्यवत् छु भगवत ध्यान अति वाहक दृष्टि मो. कलान
चित विकास.हृत्कमल फोलान सां'पान शुद्ध संकल्प बान
बनान निर्विकल्प समाधी लागय०

९ गौतमनि शाप स.ति अहल्या बनेम.च् आ'स जड शिला
जगत मंगल छि राम. लीला उदयस आयस शुभ. वेला
पादि स्पर्श स.ति बनेयि देवी लागय०

१० वलन. ग्रास बुद्धिस्थित चिदाभास चित रंजन वाल. वाशे
चित्तधन. राम. साक्षात भास कास अज्ञान कर्म. ज़ाल. पाशे
बंद छुस चिदाकाश पक्षी लागय॰

११ मोक्ष दायक. मुकुन्द. राम. भाग्यइवान अजोध्या वा'सी
प्राव.ना'विथक विष्ण. स्वधाम. युस यछान योग. अभ्या'सी
भक्त. प्रिय. मोक्ष क'रित सा'रिय लागय॰

१२ ज़गत गुरु त्वं पुरुषोत्तम सर्वेश्वर. सर्व व्यापक सम
भगवान् सुख. मुख. इलम श्रीमान शुभ. दर्शन दितम
करतम निर्वाण. उयदेशय लागय॰

१३ ज़नार्दन गोपाल गोविंदय नारायण. विष्ण. वासुदेवय
हृषीकेश. माधव मुकुन्दय हरे राम. कृष्ण ग्राद्यदेवय
ग्राशा छम नाम निदान दानचिय लागय॰

१४ प्रिय. बोध शुद्ध. चित्त क्षेत्रस वीज़वत व'त्रिज़ि भगवत नाम
नावस स्वरूप बनि मित्रस चतुर्भुज़ श्याम सुन्दर राम
फल. दायक छि प्रेम. खेती लागय॰

१५ देव. बुद्ध देव.दृष्टि छि साधन निष्काम सेवान तिम विष्णु पादन
परम. पावन छि राम. ग्राराधन क्षय सांपनान अपराधन
उपासना बिना छय न. गती लागय॰

१६ दास छुन. स्वर्ग. सुख. पुछि़ राम बरतल चानि त्रा'वित लर
कास मनस नरक. दुख भय श्याम. दो. नवय अन्तवन्त अस्थिर
दासय छय' प्रय शुभ. दर्शन चिय लागय॰

१७ इछ गत छय राम. नाव. प्रेयमस लिछ गत छन. तपस त. व्रतस
प्राणायामस यमस त. नियमस राज्यस स्वर्गस त. अमृतस
राम. महिमा क्या वनि वा'णी लागय॰

१८ ज़ीवनमुक्त हनुमान देवन सेवुन राम. नाव जा'नित सार
सीता-पति राम. जीवन कृपा को.रनस सारगी मुक्त. हार
हलमतस छय राम नाम. प्रीती लागय॰

१९ चवान राम. नाम. रस गलि गले राम. सेवक महा निष्काम
मुक्त हारस फलि फले वुछनस न. कुनि श्रीराम. नाम
चू.न करि'त त्रोव हल म'ती लागय॰

२० महा महिमा राम. नावस दैव. विभूत दर्शन नित
भान सांपनान निष्कामस चिदाकाशस अन्तर्गत
महा पुरुषण छु सुय हर्ष.य लागय॰

२१ राम. नाम. रस महा देवस तवै सेवान सर्व लोक तस
गिरिजा राम. नाम भूषणस तोषान तोषान लागान मनस
क्षण. क्षण. नित साधान तो लागय॰

२२ युस वो.र भक्ति योग. अभ्यासन सुय फेरान नित पंचन कोशन
राम. नाम. स्मरणा भूषण निवारान रोजतम दोषन
सां'पनान ज्ञान. गण सातकी लागय॰

२३ आदन बाजि म्यानि म्योनुय स्नेह कत्र. कारण. केंहति छुयन चे
छाल. मार को.त गछक लालो वे अकि लटि रटत नाल. पायस पे
म्योन संयोग च्य स.ति वेदान्ती लागय॰

२४ नर्क. वा'सी साधु निन्दक दुर्जनन क्रय सो.य निशदिन
स्वर्ग. वा'सो छि सन्त. सेवक सन्तन पालान मधुसूदन
साधु वल्लभो लगय पा'री लागय०

२५ यस अनाथस वरि रघुनाथ तस क्या करि अस्तुत त. निंद.
साध सन्त राम. रूप साक्षात रघुवरि प्रेम पुरुष सदा
राम.नाम. रस च्यथ छिवेम.ती लागय०

२६ च ंदन वृक्ष संत दुर्जन मख मख च ंदनस दिवास टख
मखस प्रत शायि अग्न दाहक च ंदनस वरान हरि मस्तक
ज़ीव कृत कर्म फल भोगी लागय०

२७ प्रेयमस छय सारिचिय सिद्धता महा दुर्लभ बनान सुलभ
यस वरि हरि हर विधाता दास. भाव. किञ सां'पनान प्रभ
भ्रमर. कीटवत् छय प्रेम. खेती लागय०

२८ यस मनस आसि न. प्रेयमच लेश तस क्या करि गुरु उपदेश
तस कदाचि़त गलि न. राग द्वेष चलि न. तस माया मोह आवेश
संग. खो.त. सस्कार बली लागय०

२९ यत शायि आसन संस्का'री नागवत् वुज़ान तति प्रेम ज़ल
स्वतः सांपनान आधिका'री प्रेम. जल. छलान चि़त वृति मल
सुख. सान बनान निवृत्ती लागय०

३० इथ. पा'ठि मेघ वालि वर्षण ज़ल.वेग छुन वुछान दारि त ब
तिथै पा'ठि स्वतः सिद्ध पुरुषण प्रवेश करान बाह्य अन्तर
सप्त. सिंधि खोत छय प्रेम. नदी लागय०

३१ तीर्थ. ज़ल कासान बाह्य मल अंतःकरण. वृत्त रोज़ान च ंचल
राम. राग. यात्रा सफल चित्त. वृत्त बनान शांत शीतल
प्रेमी वो.र राम भगवा'नी राम महिमा क्या वन.वानी ला०

---

(१)

सखियव रूठुम हा'य रूठुम हा'य ग'छित ब्यूठुम हा'य गामन.य ।
तति विगिञ्यव डयूठुम हा'य ब. चाक दिमना जामन य ॥

१ सिंध ज़ल. तन नावसा'य ब. सीर पननुय भावसा'य
क्याज़ि ला'जिथस पाम.नय ब. चोक०

२ बाल.प्यठ. नादा लायसय ब. साज़. सेतार वायसा'य
छो.ञ छो.ञ करस रुञ. दामन.य ब. चोक०

३ तारा मंडला द्रामतुय जूनि नादस आमतुय
रो.व हा'य करव. सुबह शामन.य ब. चाक०

४ वन ना'गिञि द्रामचा'य डल सा'लस आमचा'य
जूला ज़ालव रंग. नावन.य ब. चाक०

५ स'खियव मनवित अ'नितोन आदन बोज म्योन नु ंद.बोन
वो ञ नय कां'सि बो हावन.य ब. चाक०

---

(१०)

पानै बिहित पननिस वानस आनस आनस वुछहन यार।
तसुँदुय सौदा हर दूकानस आनस आनस वुछहन यार ।।

१ मस्त गय मस च्यत वा'ति लामकानस,
अयान सपदुक पननुय पान।
शाबाश ब'विनै अथ खुमखानस आनस०

२ फना फिला निश. छुय पानस,
बका बिला तहक़ीक कर।
ब्रह्मण ला'गित अछ़ बुत खानस आनस०

३ सा'लिकव मा'लिकी क'र यत जानस,
तिम छिय वा'तिथ पय दर हय।
आशक छु मुश्ताक पननिस पानस आनस०

४ आश्कव पान खोर अ'श्क. पेचानस,
हा'सिल सपदुक वा'सिल कार।
दम दम. ग्युंदहै पननिस जानस आनस०

५ पानै पानस ध्यान करु पानस,
आनस निश. तस लगिय न. छ्यन।
मीलित सु डयूठुम दानस दानस आनस०

६ दस. स.ति पम्पोश फो.लियो जानस
गमगीन मो गछ़ रोज़ बेदार।
खय कास दिल किस आ'ईन खानस आनस०

७ हस्ती मो कर पननिस पानस,
मस्तीं पननिय रावान छय।
'लस शाहो' लय कर प्राणस अपानस आनस०

---

(११)

सुख शब्द दर्शन. चाने, आनन्द घन टाठि म्याने

१ रात दिन करान छुस चिन्तन
क्षण. क्षण. छुम च.चल मन
ईश्वर. दूर्यर. चाने आनन्द०

२ राग चोन युस छुम मनस.य
सात. सात. रातस दिन.सय
म्योन दुख च्य रुस्त कुस ज़ाने आनन्द०

३ राज़न ह.दि महाराजे
टाठि म्यानि आदन बाजे
लीखित म्य क्या ओस लाने आनन्द०

४ यो.दवै च. म्या'ञ कथ बोज़क
दूरि दूरि चूरि क्याज़ि रोज़क
रोज़ चूरि हृत गुहायि म्याञे आनन्द०

५ य'च. कोल च्य त. म्य दूर्यर
क्यथ ज़ोरुत यूत कोरुत न. पूर्यर
अद. कर यि ज़'ट यलि प्राने आनन्द०

६ ओसुस ज़ल बो.य निर्मल
मोह. कठक'शि कोरनम छ़ल
वचनम कच. शीन. माञे आनन्द०

७ ञेश. ह'तिस.य मनस ञेशा
अमृत वर्षण वु डेंशा
गलि शीन अकि कटाक्ष. चाने आनन्द०

८ कर्म किनि वेष कम धा'रिम
गर्दभ बुथ बा'यं सा'रिम
वृषभ. वेष. तल अलबाञे आनन्द०

९ कामनायि आतुर कोर.नस
अमृत भास्योम वेह. रस
ओ.परोवुम दाञि दाञि आनन्द०

१० कन थोवुम न. सत्गुरु शब्दन
जर छुनुम खो.टि प्रारब्धन
कर्मव को.डुस पयैनि छाने आनन्द०

११ आनन्दस चाव अमृत. रस
संमार. निश. बनि वेह्यस
बनि नो.न अनुग्रह चाने आनन्द०

श्री शारिका लीला-लहरी

(द्वितीय तरंग)

(१२)

चराचर छुख परमेश्वरो   रछतम पनन्यन पादन तल

१ गज़. मुख. बाल. चन्द्र लम्बोदरो   विनायको भ'विनय जय
हरमुख. दर्श न दितम ईश्वरो   रछतम०

२ निष्कल नाव चोन निरंजनो   सो.य कल धा'रित त्रिकारण
स्मरणि चाञि स.ति जन्म मृत हरो रछतम०

३ देवियि त देवता सारिय स'मित   न'मित करान चा'ञ स्मुरण
स्मुरणि चाञि स.ति सा'र्यं पाप हरो रछतम०



(१३)

श्री राज़-राज़ेश्वरी आम.ति शरण छिय ।
पूज़ायि लागोय पम्पोश गुलाब मादल त. हिय ॥
गौरी अम्बा अम्बुराक्षीम अहं ईडे

१ जगत अम्बा च.य छख मंज़ वदनस असनाव
निष्बुद्ध शुर्यन दयायि हुंद दामान प्यठ. त्राव
कल्याण. सोस्त थाव स.ति अश. फचरन भरन छिय पू०

२ बाहन सिर्यन ज़चन चान्यन हुन्द प्रकाश
चरण चा'नी करान संकट. गटे छि नाश
तिह.न्जे गर.दि स.ति देव मुकट. जरन छिय पू०

३ लोका लोकन ह.न्दि सत.ज्ञन कारण देव. गण
सिंहासनस चा'निस दिवान छिय प्रदिक्षण
परम दाम.कि पुरुष प्यवान परन छिय पू०

४ षट्चक्र. रूपी चक्र नागस छि न'नि नेरन
तेज़चि रेखायि चो.पा'र्य त्रिकोणस फेरन
योगी ज्ञा'नी प्राणी सुय ध्यान धरन छिय पू०

५ बुद्ध छन. वातन कम रंग चान्यन रंगन छिय
कामेश्वरी चयय मन. कामनायन मंगन छिय
यछि चानि श्रद्वायि स'स्ति ग्रायि स्तुतायि परन छिय

६ पनन्यन भक्तियन दासन हुंदुय प्ययनय पास
तिह न्दे पासै कुकर्मन ह-न्ज़ गटय म्य कास
ज्योति-स्वरूप हाव छय च्य भूतेश्वर.ञ द्र.य पू०

७ भगवत् मायायि हं.दि रंग चा'नी छि. रंगा रंग
चाने स.ती छुय योग छिय भोग छुय संत्संग
तप ज़प समाध क्रिया कर्म करन छिय पू०

८ महा माया च.य छख चट असि माया ज़ाल
असि वो.लमुत छुय गृहस्थ.कि काल. सर्पन नाल
ल'गिम.ति सा'रिय पनन्यन पनन्यन घरन छिय पू०

९ कम भक्तियि किञ भक्तावारन खरन छिय
कथ कामि लगव क्या तगि ज़िन्दै मरन छिय
च.इ टोठ स'च् चाञि स.ति अ'सि दिन दिन भरन छिय पू०

१० प्रसाद कर गाल ज़न्मा ज़न्मन ह.न्दि अपराध
सञ्ज़ रंगय ज़लय मंज़ हाव पम्पोश. पाद
इम तिम स्वरण यथ भव.सरस तरन छिय पू०

११ चाने सूती सृष्टि गयि न'व्री जय भ'विनय
मंज़ शून्य. उत्पत्त स्थित सां'प.नी जय भ'विनय
कलर जु.गच महाराज. रा'नी शरण छिय पू०

१२ कुनुय यलि ओस वुछन वोला तस कुस ओस
ज़गत यस ज़ाव मा'जा मोला तस कुस ओस
चित् शक्ती चाञे एक अनेक स्वरण छिय पू०

१३ च्यय अज़पा गायत्री पांछ कारण ग्यवन छि गीत
निस्त्रिगुण छख गुणन चान्यन स.ति परतीत
चाने स.ति कार अन्त:करण करन छिय पू०

१४ अनेक नागन प्यठ चोन निर्वासन आसन
प्यठ शेष. नागस विष्णु रूपय छख भासन
सा'रिय गुण चा'नि महा पुरुषय वरन छिय पू०

१५ च्यय किति नाना रंगै भोजन रनन छिय
च्यय निश सुवर्ण बानन ल'दित अनन छिय
नाना रंगव मिठायव थाल भरन छिय पू०

१६ चाञे दयायि स.ति क'डि बडयूव ब'डि ब'डि नाव
निष्बुद्ध 'कृष्णास' निश वा'णी हु'द अमृत द्राव
परण वाल्यन ज़न्मस ह.न्दि दुख हरण छिय पू०

(१४)

हे दयालु छुस ब. चञ्चल. लोलो।
अनुग्रह. चानि बेमार बल. लोलो।।

१ कर्म.हीन छुस आमुत संसारस
चन्द. छोन छुस लु.गमुत व्यवहारस
अविद्यायि ह'न्ज़ छम गांगल. लोलो अनु०

२ लय विक्षेप भय. स.ति छुम आवरण
मल खो.तमुत छुम अन्तः करणन
विवेक. पाञ्जि पान बो छल लोलो अनु०

३ जान ज़ा'नो ज्ञांह् तिनो ज़ोनमख चय
ज्ञान दिम तिछ् ज्ञा'नित तव गलि दुय
दिम निश्चय युथन. ज़ांह डल. लोलो अनु०

४ छुस ब. लो.गमुत संसार. सर.सय मंज़
रोवमुत छुस पननिस घर.सय मंज़
ध्यान स.ति ज़ाल ज्ञान. मशअल. लोलो अनु०

५ व्योमुत छुस गटि मंज अनतम गाश
त्युथ गाश हाव युथ नो.न छु सिर्यि प्रकाश
का'फी छम चा'ञ अख वुज़मल. लोलो अनु०

६ बान. हीन बो द्रास खान. गदाये
अंग हीन छुस फेर. कोत जायि जाये
दिम भिक्षा अनुग्रह. खल. लोलो अनु०

७ यम्बर.ज़ल बो.म्बरो छस यो प्रारान
वेरि चाञ पान छस पा'रावान
वन वन. छस व्र'च् आरवल. लोलो अनु०

८ लोल. बागस फ'लिमो गुल त. गुलज़ार
पोशन्लो अज़ वलो छावु सब्ज़ार
होश दिम युथ पोश. वा'र फो.ल लोलो अनु०

९ हा 'विष्णो' पननुय पान ज़ानतन
यलि ज़ानक त्यलि बनि सरतलि सो'न
चित आ'नस करत. स्-कल लोलो अनु०

---

(१५)

विनत बोज़म च. राधा कृष्ण. लागय लोल. नादा बो।
भरय लोला परय लोला करय हो हो करय हो हो ॥

१ च्. छुक योगुक ज्ञानुक गुल ब. छस ना भाव कुय बुलबुल
च. लोब रोज़न ज़रय मा बो करय०

२ चय छय पंपोश पाद.च द्रय वरुम छस भक्ति बाग.च हिय
च्. नय डेंशत हरय मा बो करय०

३ च्. छुखना प्राण बो छस तन सत्ता चा'नी छि दो.न मिलवन
च्. नय आसक मरय मा बो करय०

४ ज़लस मंज़ गा'ड ज़न छस व.य ब. छस च्यय स.ति ज़ल छुख च.
च्य' रुस्तुय वो.ञ दरय मा बो करय०

५ ब. छस च्यय मेघ. वर्णस मोर र'टिथ छस खोर रासस मंज़
नचय़ लूकन खरय मा बो करय०

६ च्य सवेस छस ब. कुम.री ज़न करन छस बूलि म'शित हन हन
छ.नय त्रावि'त घरय मा बो करय०

७ च़ छुख चन्द्रं ह्यु ज़ोतन ककुव ज़न छस च्य' कुन बोलन
वुछुत नय अ'छि ज़रय मा बो करय०

८ च्य 'श्रीकृष्णस' ब. छस प्रारान दितम दर्शुन इतम लारन
च्य रुस्तुय वोञ बरय बो करय०



(१६)

लाल. लगयो बाल. भावस राम. नावस पार्य लगय।

१ टंग ओ.ननस विवहारन रंग. बुलबुल गोम को.ल
गंग. वोञ चाव मंज़ यत तावस राम०

२ भक्ति भावय नाद लायय अर्द्. रातन सुन्दरो
चानि दर्शन कुय छुम म्य हावस राम०

३ हे मुरारि! वील. ज़ारी म्या'ञ बोज़ख ना कनव
छुक च़. टोठान भक्ति भावस राम०

४ त्रटि ह्.न्दे सायबानो गटि ह्.न्दे गाशरो
मोह. अग्निगटि मंज़ लोगुस दावस राम०

५ गो.व गोमुत बोर पापुन दोह लो.गमुत छुम दरय
नाव लं'जिम च़ मंज़ न्यथ. वावस राम०

६ हे शेव ! छुक सर्व. व्यापक व्ययि छुक विश्वम्बरय
केशव. तार दिम वर्ज़निस वावस राम०

७ क्रूठ प्योमुत छुम म्य पानस ससारुक लंगरय
ख्यम. क्या छुम न. कैंह ति छावस राम०

८ बाल. भावय वं'नि म्य दितिमय वनि नो आहम् च़. ज़ाह
वनि इतमों ती छुम म्य हावस राम०

९ शयि शये शय च़.य छुक शय नो व्ययि रोज़ि कांह
शयि रूद यलि टोठयोक कावस राम०

१० 'आनन्दो' भक्ती त'मिस.ज ज़ान पनतुय मोक्ष उपाय
व्रत्त त'मिसं.ज़ धर पुन्यं त मावस राम०



(१७)

चानि बरतल राव्यम रा'चय आवाज़ वा'च्.य नो

१ चों.ज़ शोभहय बो ख'ज़मा'च्.य
ग्रंज़ साहिबो ह्य'च्थस न. ज़ांह
तवय नाव प्योम ललह मा'च्.य आवाज़०

२ बालि रनिमय सार्यय न्या.मा'च.य
ख्यनि साहिबो आहम न. ज़ांह
तवय लल छस छिन्दरे मा'च.य आवाज०

३ घरि द्रायस बा जमा'च.य
वनि साहिबो आहम न. ज़ांह
का'लि मेलव कया मा'च.य आवाज०

४ खा'सि वो.ज.लि बर.ग छ. न.ई
छस ब. स्वर्ग.च य'म्बरज़ल
दादि बों.बर.नि बर. गा'मा'च.य आवाज०

५ बा'लि बा'ली मो पख यच.य
गा'लि का'त्याह संसारन
का'लि सूरचन गछान म्य'चय आवाज०

---

(१८)

राम. लीला चा'ञिय वनय श्याम. सुन्दर नारायणय
तन. मनय अर्पण बनय श्याम. सुन्दर नारायणय
निर्गुणय निरञ्जनय श्याम. सुन्दर नारायणय

१ चानि लोलुक छुम होल गोमुत
देह.किस जिसिस.य मंज़ ब. प्योमुत
वन. कस दुख म्य छुम क्षण.क्षणय श्याम०

२ यमि योनिये छम ह'जि का'र.य
गोस. त्रात्र वो.ञ म्य छम को.सता'र.य
मुख हाव दुख क्यन आस ह्यनय श्याम०

३ नट ब'नि ब'नि नाटक हा'विम
ईश. ! कम कम वेष बदला'विम
निन. आस ग'छ्रि ग'छ्रि इन. इनय श्यास०

४ कूतिस कालस वो.ञ बो प्रारय
बोज़तम आ'र्च़र ज़ार. पारय
आर इयिनय रघु न.दनय श्याम०

५ यथ वेषस मंज़ मो.कलावुम
योगानन्दस मंज़ म्य सावुम
मो च. आनन्द निर्बन्धनय श्याम०

६ नाश. स'स्तिस यथ संसारस
कमि बापत पत्त. पत. लारस
अत. गत पठ च़टम पन. पनय श्याम०

७ कालस छ्रुन. करार क्षरणस
ग्रास करान रातस त. दिनस
चानि दर्शन. अमर बनय श्याम०

८ कालस निश उपदान संसार.य
का'ली तथ बनान आहार.य
मंग. क्या तग. आस मरण.ज़्यनय श्याम०

९ भोगन मंज़ तृप्ती म्य न आये
युथ मृगिञ्चन मृग तृष्णाये
अमृत चन.कुय छुम म्य विनय श्याम०

१० श्वान नीरस हडन टकान
टंकि टंकि पनञ्चे ज़स्म. ब्रकान
रस रतुक तस हे रस गणय श्याम०

११ कोमल पादि कमल मलय
हे शरणागत वत्सलय
कोत ब. चलय च्य निशि रोज़ छ्यनय श्याम०

१२ सुख केवल चांञिय स्मुरण
सुख केवल चोनुय दर्शन
हे निर्द्वन्द्व. आनन्द गणय श्याम०

१३ 'ठाकुर' च.य हृषी केशय
बुद्धि पर युस निश.चल राग. द्वेषय
सर्व आत्मा च.य सनातनय श्याम०



(११)

कृपा करतम हरि हरै ब. क्या करै ज़ोर ।

१ लूसित प्योमुत छुस बुज़रै खो.तमुत छुम बों.ड बोर
यथ पंचालस ।कथ. पा'ठि तरै ब०

२ आर.ह छु वज़ान वो.गनि दरै बारह छु करान शोर
छो.प छु करान समन्दरै ब०

३ व'नि व'नि य'च गोस चखि अंदरै ननन ज़न छुम चोर
छोपि हुंद सुख दिम योगेश्वर ब०

४ पख. छम जरिमच् छुम ज़र-ज़रै बन्यो मुत छुस मोर
हीन छुस खोरन हंदि आ'रचरै ब०

५ सन्मुख रोज़तं श्याम. सों.दरै प्रभात ह्यु व चो.पोर
गुथ न. पंपोषस दोह लगि दरै ब०

६ आभास. चानि स.ति गा'म लि खरै अन्तः करन चोर
म्य भास प्रकाश रूप ईश्वरं ब०

७ त्रिगुण उलंघितछुक शंकरै शक्तियि चानि छुस लोर
ओ.गणिस दो. गणाव कुनिय वरै ब०

८ चो.रों.ग ज़न म. फिरनाव घर. घरै यि बा'ज़िगर छा सोर
दूबार. म. डाल प्यठखा'र दरै ब०

९ अन्दर चा'नित ज्ञान, धरै हावुम चूरिम पोर
तथ मंज रूज़ित आनन्द भरै ब०

१० 'कृष्णस' मुच.राव वाव,कि वरै कुनिय वरै तौर
युथ लरि ह्यथ च्यय बसि अमरै व०



(२०)

वो तन. मनै अर्पण बनै नारायण. श्रीमद् नारायणं।

१ भ्रम. किनि संसार सत्रूप ज़ीनुम
दुखस.य प्यठ सुख मन.न.य मोनुम
भास्तम त. कास्तम मोहुन सनै नारायण०

२ च्यय रुस्त नाश. सो.स्त ईश्वर. सोरुय
मृग तृष्णा ज़ल. चिय दोर. दोरय
स्मृत पन.ञ दिम च.इ क्षण क्षणै नारायण०

३ यथ प्यठ ईश्वर. स्थित थव. च्यन व्यन
सोरुय गछथ पोञ सारुन क्रंजल्यन
आसर. चोन थव. सनातनै नारायण०

४ संसार. कुलिस शरीर हर्द पन.य
कामना सहित तथ कुलिस मूल मन.य
काल. छ़टि स.ति नटि मंज दिन. दिनै नारायण०

५ मूल संसारुक मन यलि गले
जाम. बदलावन.चि आपदा च़लै
मन गाल ज्ञान. खड्ग स.ति ज्ञान घनै नारायण०

६ देह. अभिमानन हनि हनि ज़ोलनस
दम. दम. क्रम. क्रम. शीन ज़न गोलनस
स्मरणि चानि निश को.रनस छ्यनै नारायण॰

७ थज़.रुक ज़ल युथ कल. छावि पलन.य
ती करनोवनस ममता मलन.य
ममतायि हंज़ बुद्ध दितम सत् ज़नै नारायण॰

८ अच्युत सत्.रूप. निरामये
भव. भय. नाशस गछि चाञि लये
चाञि प्रयि दय ब.ति च्यय ह्य् बनै नारायण॰

९ विस्मृत को.रनस अविद्यायि दोषण
भ्रम. किनि वश् सांपनुस पंच कोषण
पंच. कोशातीत. निरञ्जनै नारायण॰

१० दिनम अपि रजनी सायं प्रातः
शिशिर वसंती पुनरायातः
काल.देव करान ग्रास शनै शनैः नारायण॰

११ मन म्योन मोहित को.र मोह. मस. न.य
बेह्यस कोर.नस तृष्णाइ रस.न.य
मोह मद गाल व.ञ हे मधुसूदनय नारायण॰

१२ काम.देव कान.य स्य'ज़रावानय
तस यस मनस आसि न. चोंन ध्यान.य
सर्व आपदा नाश चानि दर्शनै नारायण॰

१३ जीवन छुय जीवन चा'नी स्मरण
देव. भाव देवन करुन चोन कीर्तन
उत्पत्त सारिचिय चानि ईक्षणैं नारायण०

१४ ज़ीवन हं दि ज़ीवन. देव. देव
आनन्द दायक बांधव त्वमेव
सर्वं आत्मा रूप. सुदर्शनै नारायण०

१५ हे निराकारै सर्वं आधारै
चानि दर्शन मुक्त बन. नरक. नारै
सुख. रूप. पुख हाव हे चिद् घनै नारायण०

१६ सत् रूप. ज़ान सत छम मलिन प्रकृत
संताप अग्नस ग्यव जन ब. आहुवत
कष्ट गाल संतुष्ट बन जनार्दनै नारायण०

१७ खो गया दिन दिन सो गया लडकपन
आगया यौवन पीडा उत्पन्न
तेरा अनुग्रह मेरा विनय नारायण०

१८ आसुरी प्रकृत निर्मल करतम
शुद्ध प्रकृ'च़ कित्र गोविंद. वरतम
कर अभेद पानस स.ति पूरणै नारायण०

१९ सारिन.य आत्मा पर प्रेमास्पद
सर्व आत्मा चा'ञ भक्ती स्वतः सिद्ध
मूलस थक छ़.न मूल. करणै नारायण०

२० सर्वात्मा चा'ञ एकात्म भक्ती
यस आसी तस भव. बंध. निशि मुक्ती
'ठाकुर' वंद. भाव य्ययि अर्च्नै नारायण०



(२१)

पूर्ण पुरुषस सुरासुर विन्दनस परमानन्दस परमात्मस ।
तस रुस्त क्या क्रुम दप. पान वन्दस परमानन्दस परमात्मस ।।

१ कृष्णस जग यस तुँद ब'लि चंदस
चिनमय मंदिर द्वारिका तस
सुदाम सालिग्राम सुय पूजि वों.दस परमानन्दस०

२ द्वार. द्वार पूज़ा मुख अरबिन्दस
सर्ग. अर्घ. स.ति ज़न अमृत रस
पुष्प. कनि आकाश पृथ्वी गंधस परमानन्दस०

३ ध्यन. व्यन. धा'रित मन निस्पंदस
क्षण. क्षण. पनुन आर्चर वनहस
लगहा न. व्ययि व्ययि अज्ञान द्वंद्वस परमानन्दस०

४ वर. य'मि ज़ि निद्रा दिच् मुचकदस
कालयवनस सुय काल वननस
पीताम्बर. स.ति ला'गित फंदस परमानन्दस

५ बन.न.च्चि म्य यछ एकादशस्कंधस
बोजनस तव.किस परम अर्थस
मन. राज. निशचल बेहि मसनंदस परमानन्दस॰

६ जिन्दगी छ्य्फ दिथ रूज देह. ज़ंदस
स्पर्श. रो.स्त वोत तस अपरस
वाठ छुय तसुँदुय प्रथ पैवन्दस परमानन्दस॰

७ स्वर यमि द्यतमुत छुम प्रथ वंदस
गुरु प्रणव.य द्यान करि त्राणतस
बह्मा ॠष त. यस गायत्री छ्.दस परमानन्दस॰

८ 'परमानन्द' मेली परम. आनन्दस
महिमा मेलनुक बनि मावस
पान. त.नि इथ पा'ठि रव छ्य इंदस परमानन्दस॰



(२२)

दितम दर्शन म्य वर्षण तल. बेमार बल. ब. बेमार बल.

१ रावुन रीव न. रावण. तल.
ब. वंदै कल. त. हावतम रोय
गुपित गंगा भरत निर्मल. बेमार॰

२ वज़ान शिवहू छु शंख.कि बल.
प्रज़ान छुम नार शशिकलि रहे
रोटुम छ्ल. अ'श्क. ब्रह्माण्डतल. बेमार॰

३ प-रुम ओमकार सोऽहं तल०
क'रम पानस सो.य कल मे
हरन दोप पान ब्रोंठकुन वल. बेमार०

४ अचान ओसुस ब. बीमस तल०
यछान ओसुस गोछुम यी मे
तरुन तार. सो.थि ईश्वर ज़ल०

५ गशुन त्रोवुम म्य संसार तल. बेमार०
मशान आम सोर गंज़रुम मे
दुशान छुम केवल. सुन्द फल. बेमार०

६ वनान 'लस.शाह' वो.वुम यी फल०
ग्यवुम रातस दोहस यी मे
चो़.लुम वसवास म्य आ'ईन तल. बेमार०



(२३)

श्याम. सुन्दर जी लाल बना खेली बना राधायि स.ति

१ वेल. इथ कोन. खेल.नि नेरव नन्दलालस मेल.ति नेरव
यि छ़ केवल प्रयोज़ना खेली०

२ श्याम. सो.न्दरस तस कामदेवस नाम, चन्द्रस श्रीकृष्ण देवस
अ'सि छ्य् गा'मच़ तस अर्पणा खेलि०

३ आश्चर्य छा मेलुन तसुन्द जीवन स.ति खेलुन तसुन्द
पान. ब'नित बिन्दराबना खेलि०

४ प्रेम. आनन्द. व्रणा वायन तथि मंज नानम्योद २ लायन गछि सुफल मन. कामना खेली।

५ द्राव पाल.नि वादन सान्यन फुर्य दिनि कर्म फलन प्रान्यन पाल. व.नि क'र सा'ञ पालना खेली।

६ आयि जमुनायि जल तन ना वित प्रोन म'शरा' वित नो.व प्रा'वित शोभव.नि भूषण वर्धना खेली।

७ अ'सि छय आमच़ असंख्य स्त्रिये तृप्त आनन्द अमृत गये त्रय गुण क'र.ख प्रार्थना खेली।

८ वो.सि इथ कोन. विसव इथि रास. कोन. असव असव गेलि कुस मेलि नारायण खेलि।

९ ज्ञान गव अथि लगुन न. यमस गयि प्रावित परम ब्रह्मस मोक्ष. पद भक्ती कारण खेलि।

१० पोष. कुल्यन मंज देव चा़ये ला'गित बबूर रूदि छाये च़रण. कमल वरिना सना खेलि।

११ आ'सि देवता तति दर्शनस पोश वर्षणस हर्षणस पो़श वर्षण त. अविछिना खेलि।

१२ यूरमुत ओस कुकिलव ओलुय प'तिमि जन्मुक चो़लुक होलुय भोरुक लोलुय खुश गोक मना खेलि।

१३ पननि शब्द.च. छन थाल.ज ज़ान छस भव.सर.बुज रुस्त वज़ान यि छु जडमूढ गुहयुल व्रना खेलि।

१४ हृदय मंज़ ह्यथ भगवत् चरण आ'सि तथ निथ सेवा करन
ब्रह्मस स.ति रूदुक न. भिन्ना खेलि०

१५ सनकादिक नारद मुन्नी व्यास शुकदेव यी करव.नी
राधा कृष्ण ज कीर्तना खेलि०

१६ लूक. वन.वु.न क्या करि तिमन आ'सि ब्रह्म.ज्ञान घो.नमुत इमन
कथज़ि करन.च छख कल्पना खेलि०

१७ रास. अमृत रस गछि चो.नुय भक्ती रस य'मि न. चव रूद छनुय
रूद छोन ज़न्मनि ज़न्मना खेलि०

१८ रस उपदन कर सत भक्ती गोपियव भक्तीवत प्रा'व मुक्तो
मुक्ती छन. भक्ती बिना खेलि०

१९ द्रायि निमल था'वित वों'दस गयि प्रा'वित परमानन्दस
क'रख 'केशिव' आराधना खेलि०



(२४)

१ चो'यशित लछ ज़न्म धा'रित चिन्तामन देह अथि आव
देवन किन्नरन गंधरवन दुर्लभ रटुन यहोय देह आव ।

अविना'शी पान. शम्भू यमि शाये अथि आव
आगरो चय कव. लो.गखो हा घर.चे छाये ॥

२ अश्वत्थ नोव कुल नाश. रुस्त वोन जनार्दनि धनुर्धरस्य
मूल ह्यो.र कुन लजि बो.नकुन पत्र वेद तथ कुलि.सय
युसुय तत ज़ानि वेद त'मिय ज़ोन पा'र्य जा'ज तस शिवस.य आ०

३ अमृत फल सुय कुल छु दिवान राज़ योगिन ति ह्योत.ये
हठ. योगियन कर्म का'न्डियन दुर्लभ वातुन तो.तये
रेइ पकुन तोत. सं.ज वुफ ख'ज़र कुलिस य इथ.ये आ०

४ भ्रम काया माया छै पो.ज़ बोज़ टाठि बोज़,
भ्रम त्रा'वित रोज़ ब्रह्य.य सर. खर, करत. अ'ज़ि दो
सत्-चित् आनन्द अद्वैत.य रोज़ि रोज़् बोज़् आ०

५ नज़ि रटुन नज़ि त्रावुन युथुव ओसुक त्युथुय आस
युसुय अन्तर सुय बाहिर युसुय स्वामी सुय दास
पा'नि पान अरूप दय साध वन्य. योग अभ्यास आ०

६ आत्म. सा'क्षी टाठि ज़ानतो शरीर आव क्षण भंग
संसार. किस दुख. रूपस योग. लयि च.य असंग
भूर् भुवः स्वः च्यय निश द्राव छुख च़ सा'क्षी च्य न रंग आ०

७ ज़ीव यलि गछि़ ईश्वरस लीन सुय ज़ीव अद. ईश्वर
विश्व रूपस सुय भर्ता सुय हर्ता गव हर
अविना'शी तस नाव.य अद्वय आनन्द सर.कर आ०

८ हर घरि तै ब. कुसू छुस सुय मरि घर. परि. युस
सुय ब. निर्मल आत्मा ज़ान मरि मो.र जुय अमर गव
पा'नि पानै तति सुय घरि वनत. ज्याक अद रोज़िं कुस आ०

९ दिव. सरै मंज़ गामि गोम गुपित वनान रुवये
ब. नमा सु युस ब. वनान मदन अंदर दिवये
वन मवनन चूरिम देवी पं.चिम मोच़ पत. शिवये आ०

१० अंत रछिन योनियन हव छयप. छय्परे गिंद. लो
गुर. श्यछी हर घरि बोज़ भूर् भुवः स्वः छ्.ड लो
यमि योनिये वुछतः ऋषो ज़ुत. लाला गव लों आ०

११ रंग. लरि छुम रंग. रुस्त दय प्रथ वान. सुय रंगरुय
नाना रंग धारण सुय ना रंग तस न. गुथर.य
ज़ानी कुस तस निराकारस सारगी यस छि नेत्रय आ०

१२ चे नत.मनै चिन्ताय मन आव चिन्तामन चित रूप प्राव
खस.व.ने वस.व.ने हंस. द्वारै पूर्य आय
ज़ानत. हरमुख. द्रायि गंगा च्य दिवये तन नाव आ०

१३ शब्द. ब्रह्मस गछ़्त लये सो.य प.य कासि मनि खय
खय आवित मन चित् गव चे नतन प्रथ शायी दय
दय टोठ्योम ऋषि पुत्रो तस त, म्य दूय रूज़नै आ०

१४ दय नो.नुय ठोर पननुय मरनुक रस तित्त च्यय
म'रित परम. जान दय छु दिवान मरि मो.र जुव अमर गव
राम लंकायि रूद सन्मुख साक्षात दर्शुन हव आ०

१५ वेद शास्त्र प'र्य प'र्य छिय प'र्यम.ति ज़र्य गछान
अपरिस निश. नेरान छिय चोर वेद ब्ययि पुराण
अज़ानतो शब्द. ब्रह्मय परम. पद दयि वथ मान आ०

१६ सहज विचार सहज. पाठ'यस सुय ज़ानि सहज़ानन्द
भूत. विचार भ्रम जानतो विषय रस मूटानन्द
मूर्ख. भावूय निश्चय कर शुद्ध नेरि सत् चित्त आनन्द आ०

१७ निश्चल नित्त सहज़ानन्द कुल अकुल गछि नाशस
भाषि रुस्तूय अविना शं। दय निशि ज़ान नछन. गाशस
बोज़ि सुय भाषिराज़ योगी च़ेन.वुन स्व प्रकाशस आ०

१८ काम. क्रोध. लोभ. मोह. स्यन्द.य ग.ति खोत. छुय ग.तलुय
ईर. सा'रिय जीव धा'रो अमि ग.ति कुस छु मो कलय
वस्तु विच़ार क्षमा सतोष यस छु तस तार सरल य आ०

१९ 'लछु' नोव दय नाना रूप द्राव जगम त. थावर.य
रूप ना तस ना नाव.य परम आत्मा सु अपर.य
तत्त्व प्रकाश साक्षात्कार अंदर. न्य'बरै अछ्य.र्य आ०

---

(२५)

हे दयावान. म्य ह्यव चोर च्य कोताह प्रारे।
अस.वनि मुख वस.वुन ओ.श छुम म्य धारे धारे ॥

१ फाक. दिय दिय गयि वासा यति क्याह हा'सिल आव
चारिरस म्या'निस वो.ञ टोठ मनस इयि आराम
चित. शांती व्रत धारे नित्त दुर्गत हारे अस०

२ छिन. ठीकान प'कि प'कि कुनि अनेकन भवनन
च़ंचल क'र्यम.ति अ'सि कूति यमि आवागवनन
कर्म.फल स.ति ह्यथ भारे यथ ग्रट. अनवारे अस०

३ रंग रंग डलनुक सामान. समय ह्यथ इथ प्यव
च्यय शरण आयि पननि करतूतुक तसल्ला गव
हे दयावान' दया चा'ञी म्य केंछाह यारे अस०

४ कूति बदकार दुराचार परम्पार क'रित
कूनि वदबक्त गुनाहगार ब यकब़ार द'रित
कम गछ़िय क्याहँ च्य' म्य'त्यय चा'ञ दया बो.ठ खारे अस०

५ मंदछा छ़य ना को.र वां'सि म्य' चाने चाने
ज़यवि किञ को.र वनुना नत, महिमा कुस ज़ाने
सुय वन नुय भव.सर तारि अद. कस करि तारे अस०

६ काल. दिच. डाल. फिरव माल. करव र.ति र.ति कार
सुबह् यलि फोल. त. पगाह् आलस्यकुय रो.ट दरबार
गयि वांसा गज़रान दिन असि वारे वारे अस०

७ चानि रायि को.र म्य' यि केंछाह ती थव मन्जूर.य
नत. कुस जानि करि.ञ भक्त किया गछ़ि पूर.य
काम क्रोधस लोभ. मोहस मद स.य कुस मारे अस०

८ मूत. विज़ ध्यान थवक प्राण सु म्य' संधारे
वार. 'कृष्णस' निर्मल करि भव. सागर तारे
पद्म, पत्र.कि पा'ठि सर.मंज़ जल तस कति लारे अस०

(२६)

मो.कलाव मज का'दखानै ।
हा दया वानै वा.लो ॥
हा दयावान. भगवानै हा दया०

१ वूनमुत म्य' छ़ुम ज़ाल मोक.लावि चोन अनुग्रह
छ़ुम ज.ल,यं ह्यु व निशानै हा दया०

२ न्यथ. न'नि स.दि सायेबानै छुस ब. ताप तचि बुडर मंज
त्राव रूदा आस्मानै हा दया०

३ मंगवुन छुस छुमन. बानै बडि दय. करतम दया
बान. लदतं मान. सानै हा दया०

४ प्रथ सौदा छु वान. वानै गछि आसुन चोन भाव
अद. मेलि पूरि परमानै हा दया०

५ छुम ब्यठाह बो.ड कारखानै अद वाति चानि प्रियम. स.ति
सत्य देव, सत्य नाराणँ हा दया०

६ हिय ब. लागै दान. दानै द्रय च्य' छै राधायि ह्.ज
यि मंगै तो दिम च्. पानै हा दया०

७ सों.बरित छुम सामानै वति लागुन च्यय तगिय
अद, प्राव. आश्चर्य थानै हा दया०

८ छुक कुनिय रूप. अगवानै द्वैत.अ छुम म्य भासान
त्रिभुवन स.ति अज्ञानै हा दया०

९ द्वारिका जन प्रथ मकानै वुछ बनोवुथ कृष्ण' च्यय
यि छु चोन सोन छ्य बहानै हा दया०



य'च् काल वोतुम प्रारान प्रारान न्यबर बरस तल।
विनत करान थारान थारान त्वं देव. दीन वत्सल ।।
थो.कुस ब. जन्म धारान धारान वो.अ मुचरावतं बर।
गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद गोविंद कर ।।

श्री शारिका लीला-लहरी

[तृतीय तरंग]

(२७)

बंद कोर.नस बू. बाशे ज़गत.चि वाल. वाशे ।
मो.कलय चाञि आशे शिव नाथ. अविनाशे ॥

१ भाव. स.तिन इम'यो हर मुख. व'नि दिमयो
मोह. घटि ह.दि गाशे शिव०

२ कैलास कोह. छारत धारणायि ध्यान धारत
सत् चित्त् आकाशे शिव०

३ ज़प. शबनम धारे पपि ब्योल तप. वारे
कांह फोल गछ़ि न. हाशे शिव०

४ शंभु नाथ. साधय आवाहन. नादै
साञि बोज़ शुयं भाषे शिव०

५ तार हिम मोह. वावस मायायि द'रियावस
कड दुख. नावि पाशे शिव०

६ संसार.के सरय बो हर नाव. स.ति तरै बो
काम संकट विनाशे शिव०

७ कृष्णस आप चा'ञि बख्शुस पाप प्रा'नी
शापन कर च. नाशे शिव०

होश दिम लगहो पपोश. पादन ।
हा साधन हंदि साधो हो ।।

१ यगियन हंदि योग, प्रा'ग्गियण हंदि प्राण.
ज्ञानियन हंदि ज्ञानो
चानि प्रसाद, स'ति सिद्ध छि तप साधन हा०

२ अच्युत. चानि स.ति चित्त.कुय च.नुन
नत. गछि मेनुन क्रंजल्यन पोञ
प्रेम जल. छुय वुजान भाव. नाग.रादस हा०

३ ब्रह्मण जन्मस इथ छुम न. ब्रह्म स्मृ'च.
वुछ म, म्याञि राक्षस प्रकृ'च कुन
चानि सच भक्ती भा'ञ क'र प्रह्लादन हा०

४ पूर्ण पुरुष. छम चा'ञी लादन
प्रणव. पान वद.होय चो.न पादन
नाद बिंद. कन थव सान्यन नादन हा०

५ विचार . नेत्रय जा'ञ गाश अन छि अ'नि
हर. हरमुख. च्य दिमहोय त्र'नि
निष्कल. मन निष्काम. राम. रादन हा०

६ अनुग्रह चोन गछि आसनि साधन
क्या छु पापन कमन ज्यादनप्यठ
दय छुक क्षय कर सान्यन अपराधन हा०

७ 'कृष्णाय' चा'ञि कपटञि तल नेरिहे
अद. कति पा'रिहे जाम. न'वि न'वि
पुश. कति प्ययिहस होंजन त. रादन हा०

८ छो.पि मज़ तस छो.चरा नेरिहे
अद. कति वनिहे जेछर यूत
याद है प्ययिहस वुञि छुस आदन हा०



(२६)

पा'छ दोह यावन.नि आदण.नि सूरी।
यी भूल त्याग. कस्तूरीये ॥

१ मत वुछत. संसार.चि शोभायि कुन
मत. वुछत. देह. सो.न. लकायि कुन
व'दि व'दि गयि ल'दि ल'दि लूर्य लूरी यी०

२ संसार वन छु कस लारि क्या यस छु तस
जेठुन छु अ'ठुन बस कर बस
यति प्यव सारिन.य पुशि पूर्य पूरी यी०

३ व्यवहार. बो.ज़ स्व'स्त अन. धन. द्यार स्व'स्त
गाट.जार. स्व'स्त ब्रह्म विचार र'स्त
मूनि हिवि गयि हनि ज़न वूर्य वूरी थो०

४ ज्ञान. वैरागुक बन. अधिका'री
संकल्प विकल्प सा'रिय त्राव
ममता पत थाव वय युथ न. दूरी यी०

५ मोह. ज़ाल. मंज़ नेरनुक उपाया.
कर. राज. हमुन साया ज्ञाव
अमर नाथचिय जानवर जूरी यी०

६ क्रियायि खो.त. छुय शुद्ध वासनायि फल
पूज़ायि खोत. प्रेमस त. मायि फल
'कृष्णस' रायि चाञि आयि मन्जूरी यी०



(३०)

कृष्ण. छुक मंज़ हनि लो लो ।
वनि इत मनि' रुकमणि लो लो ।

१ सोज़ै ब्रह्म. ज़न्मुक मंज़िमयोर
वासा प्ययिय इख नत. स्य' ज़ोर
विचार. पुछि च्य' स.ति अन. लो लो वनि०

२ योग. किस बामस प्यठ स्य' खार.नाव
दोह तार. मंज़, रूदि, स्य' म. प्रार.नाव
मुख हाव तन लाग तनि लो लो वनि०

३ रा,छि छिम च्य' निशि वातनस क.ति
ज़ोर. निम ल'डित, ह्यथ पानस स.ति
य ह'स्त नत. क्याह स्य' बनि लो लो वनि०

४ काम॰ क्रोध लोभ॰ मोहुन शशपाल
ज़ेन॰नि आव मे कस वन॰ हाल
ज़ोर॰ निम इम ओर॰कनि लो लो वनि॰

५ शरणागत वत्सल छुय नाव
धर्मस यथ नावस म॰ मंद॰ छाव
वीर॰ धर्मःय चोन ननि लो लो वनि॰

६ भक्त॰ वत्सल॰ छुक बोड॰ बल वीर
मो॰कला'वित निम को॰रहम गीर
आ॰चर म्योन च्य' कुस वनि लो लो वनि॰

७ अ'छि लोर्स च्य' वुछि वुछि ईम
दर्शन दिम स॰ति पातस निम
युथ न जांह अथ॰वास छ्यनि लो लो वनि॰

८ ध्यान॰ ज़ापोवन्तस कास म्ह' हान
वासनायि ज़ापोवन्तियि सान
मनि मन नित॰ दाज कनि लो लो वनि॰

९ म्यानि ससार॰ यश॰ कुय मा'जि मोल
तृप्त कर ज़ोत्रराव मो॰क्तुक व्योल
भक्ति कुलिन॰य मो॰कत छनि लो लो वनि॰

१० तन सुख मन सुख भाव प्राव॰नाव
सुख॰ मुख॰ ,कृष्ण' कृष्ण॰ मुख हाव
अख सुखिया अख सु बनि लो लो वनि॰

(३१)

हे दय. ! बोज़ म्या'नि लोल. नाद कूत गोमुत छुस बदाद ।
इथि दुख. मंज़ कर म्य' आज़ाद दयाल. बोज़. फयरयाद ॥

१ थि छु संसार भ्रम त. बाज़िगार अत ज़ोनुस न. कांसि अ'कि
ज्यूठ सो.दराह बे शुमार तार ज़ोनुस न का'सि अ'कि
यथ न. अंत आसि तत कति आद दयाल०

२ मोह. आवल नि फाट. नोवनस छ्रट. छ्रट. कर. नोवनस
गोस बांबरि थर थर छम नरि ज़ंघ. वाय. नोवनस
वांति लगनस दिम विवेक. पाद दयाल०

३ देह इंद्रिह त. छि परिणा'मी मन छु इहुंदुय स्वामि
अथ मनस पत. पत. दोरुन सो.छय बोज़ ह.ज खा'मि
संकल्पन ह.ज़ छस उपाद दयाल०

४ चाञि आशायि च्यय कुन आस छ्रट. छ्रट. संकट म्य कास
छुस चोन दास प्ययिनं पास हृदयस मंज़ कर म्य' वास
ज्ञान. अग्न ज़ाल म्या'नि अपराध दयाल०

५ संकल्पन त. विकल्पन स.ति गव म्योन वर्तन
विवेक. नो.म शिल वासन चूरि नियहम ह.न ह.न
होश डालान छुम म्य' प्रमाद दयाल०

६ गोस. क्याह गो.य क्याज़ि रूठहं छायि छय्प दित ब्यूठहं
दूरि रूज़ित लावि मूरे नार ललवून थोवथम
दिम दर्शुन मन गछ्यं शाद दयाल०

७ यम नित आसि सम. चि़त मन सुय ज़न गव सतज़न
श्रुतियन मज़ ति छि वखनन यी छ़ वोन्मुत व्यासन
सुय छ़ तपज़प सो.य छ'य समाध दयाल०

८ आसि करवुन अज़पा ज़प धारणायि मज़त्रावि डाफ
अंतः किनि दूर को.रमुत संसारुक सताप
छुस न. शुमार छुस न. तेदाद दयाल०

९ हे दयालो. ! देह त्याग. विजि़ नेर सन्मुख पानै
वृत्त म्या'ञय पजि़ रजि़ स.ति था'विज़्यन समाधानै
दुभर्ल छ़म पान. युन याद दयाल०

१० निर्वाण. पद दित. 'विष्णास' चावतन विज्ञान रस
रोजि़ अन्द. कनि शुमारस मन. कामनायि च़लनस
हृदयस मंजं रटि चा'नि पाद दयाल०



(३२)

इत. दित. दर्शन भस्माधारै प्रारै कोताह काल ।
हे शंभो ! रक्षपाल स्वामी हे शंभो रक्षपाल ॥

१ हर. दित दर्शन मर. कास्तम आस्तम ना'ली नाल
लोल.चि बबरे तर छुम द्रामुत गोमुत छुम य'च़ काल
दयायि ज़ल अथ बब्रे सग दित पननुय अथ. च.य डाल हे०

२ मोह. सिंधि उदरस मज छुस ईरै य'ति छुम सुम नत. तार
तल. छुम ज़लकुय नीजर हावान प्यठ कनि छुम गट.कार
नरि छम हजि ता'य ज़ग छुम बे सो.र किथ पाठि मारै छल हे०

३ फुच.मचि खो. परे मंज छुस प्योमुत प्यठ. छुम कर्मुक ताव
अ'न्दरी अन्दरो अक छम चाम चं बत. ल्यजि हुंद छुय छाव
शेहलन खा'त.र प्यठ कनि छकतम अक अमृत ज़ल चाल हे०

४ ईश्वर ! म्यान्यन पापी कर्मन कुस करिय शुमार
चय छुक अनिनथ अज.गट कासान चय छुक बखशन हार
य'मि किञि सा'रिय छिय चय वखनान दीनन हुंद दयाल हे०



(३३)

हे दय. ! बोज कनै च्यय रो.स्त कस ब. वनै ।
करयो अर्चनै च्यय रो.स्त कस ब. वनै ॥

१ ससार आवल.नुय यि छु सनि खोत. सो.नुय
अ'थि मज आस ह्यनै च्यय०

२ जोवनस मोह. मसै च्दुम न. दान ह्यसै
उन्मत गोस तनै च्यय०

३ हरुम म्य कष्ट हन हन हरि हर छुक थवुम कन
आ'चं.र आलवनै च्यय०

४ सूक्ष्म निर्मल करुम वृत प्रत्यक्ष! पा'ठिन ब. वुछहत
स.ति ज्ञान. लोचनै च्यय०

५ चितस सयकल करुम पूर अज्ञान मल गछयं दूर
हे टाठि- तिरजनै च्यय०

६ पादन तल. ब० मरै चा'ञ.य स्तुता करै
वार. बार आर अनै च्यय०

७ वासनायव नाल. रो.टहस संकल्पव ब. चोटहस
कोडहस पन. पनै च्यय०

८ दित सत्सग म्य हरदम इयं शांती त. शम दम
ब'नित आज़ाद बनै च्यय०

९ 'विष्ण' थावतन समाधान चल्यस यव. देह. अभिमान
मगन छुय क्षरा.. क्षरा च्यय०



(३४)

इमय पत. दिमय नाद क्यथो म्य. याद प्योहम।

१ च.य छुक जप यज्ञुख जप च.य छुक तप. वनुक तप
च.य छुक साधन हुंद साध क्यथो०

२ च.य छुक योगियन हुंद योग चय छुक प्रां'णियन हुद प्राण
च.य छुक सत.कुय संवाद क्यथो०

३ च.य छुक डयक. च.य छुक टिक च.य छुक दूर च.य नज़दीक
च.य छुक सार्ययनय हुंद आद क्यथो०

४ च.य छुक दुख च.य छक सुख च.य छक परम. आनन्द मुख चं.य छक कम चं.य छक ज़्याद क्यथो।

५ च.य छक साधन हुन्द संग चाजे तनि सफेद रंग पंपोश हिव्य छि चा'नि पाद क्यथो।

६ वेदन मंज़ छक साम वेद देवन मंज़ इन्द्राज़ह दैत्यन मंज़ छुक प्रह्लाद क्यथो।

७ रजो गुण. छक ब्रह्मा सत्व गुण. विष्णु भगवान तमो गुण. गालान व्याद क्यथो।

८ धर्म.चि लरि कर्म.कि बर. चाने स.ति अचन छुम च.य छ.क क.न त. च.य बुनियाद क्यथो।

९ य'मि युस ज़ोन सुय त'मि मोन च.य छक म्योन कर्म लोन वनै च्यय ब. लानिनि वाद क्यथो।

१० लोल.नि साज प्रेम.कि ब'ग. वायय सोज़ दमा बोज़ इतम योर ह्यतम दाद क्यथो।

११ 'कृष्ण' धार.नावुन ध्यान सुय ध्यान यत दपन ब्रह्म ज़ान ह्यथ शिवराग दित समाध क्यथो।

१२ संकल्प त्रावि रटि मन प्राण वासना गालि दियि समाध चाजि दयायि प्रावि बिंदु नाद क्यथो।



(३५)

अंत काल'चि ज़ाल· छुम तमि हाल· निश· रछतम दये ।
दिम अभय वर छुम यम·ञ थर कर दया मृत्युञ्जये ॥

१· भव· सागर· दिवयि रंगस आयि क ति का'त्याह गये
पार तारुम बो·ठ म्य' खारुम दुख निवारुम मंज़ भये दिम०

२· आस्तं खो·श कास्त दुख भास्तं सन्मुख दये
मन म्य छुम आईन· सूरत साफ कर रटुमुत खये दिम०

३· किथ पा'ठि जिंदै भ·व बो·ञ क्या करव वांसा गये
मायि र'टि पनन्यव भरव बस· नाव मंज़ शांति शये दिम०

४· वश्य छि गा'म·ति संसारस यश कडनस खो·श छिये
ओर· योर· नित· ज़ोर· म्योनुय मन· च· मंज़ निर्णय नये दिम०

५· ग्युन शरीरस वा'सि हु'द आराम वुछक्यन क्याह लये
यत दपन भूपा छि तत थानस म्य निम सत्गुर पये दिम०

६· निच· म्याञ्चर म्योन लाग·ञ को·स अत लागत छये
पत मो·चक सोरुय च पानै अथि कालस क्या इये दिम०

७· शून्यकिस शून्यस वनैं क्या तत सो·रुण कांह क्य ह्ये
करत· निर्वासन च· दासन मोख्त मस प्रत कांह च्यये दिम०

८· चल·नावक ज़ीवत·कि छट युथ न· इछ मूर्च्छा प्यये
फो·लनावक यस च· चित सुय भखचि बागस फल ख्ययें दिम०

९ श्वेत द्वीप.कि हिवि मनुष्य कर पालव.नि काल त्राये
मोक्ष अमृत प्याल. चाव अज्ञान रुस्त निरामये दिम०

१० गछ शरण 'कृष्णस' करिय अन्तःकरण लय मंज़ प्रये
लूक डेंशन दय सो.रन आलव करण जितेन्द्रिये दिम०



(३६)

हशान ज़ीवो देह दोह छु नशान   अमर पान कव. मशान छुय

१ काल.ञि च्.जे देह यलि प्यवान सु कुससन. युस म'रित गव
वो.थान बेहान भोगान सुय यलि गछान देह अद प्यव
देहस च्य क्या हिशर छुयो ज़ुव ज्ञान ईश्वर. अंश दो ह०

२ ज़ुव ज्ञानव.नी छिय ज्ञान वान.य नतव इम मूढ भावस गय
नाना योनियन देह आदिकन कुंभीपाक अर्णवन प्यय
पुण्य पाप कर्म, शापन व'लिम.ति जन्म-मरन -रोग़न त्राय ह०

३ ईश्वर. अंश अग्न त्यंबर अज्ञान. काठस संद.र्यज़े
यि दय, धन. तस यस गुरु कृपा भ्रम. य ससार गंज़,र्य ज़ेह०
काठस ह्यथ सूय अग्न त्यंग्र ईश्वर अंश सांप.निज़े

४ गोड. छुक विषय भोगन भ्रमन पतव विफल नेरन दुख
काल.ञि सिंधे तिमय तरन सिद्ध यस गुरुजरन परम सुख
महा चंचल मन लय करन सु.रान सुदेव अंतर्मुख ह०

५ संसार यशस वश गछि भूत.य थ्यकन देह् कि डबर दो
छम लरि छुम राज्य छुम नाव गोत्र छिम बंध बांधव मित्र दोस्त
थरि पोश ब.र ज़न गयि काल छटे व'यं द'यि तिम इम अमर दोह्०

६ सतुक यश सुय इन्द्रिय र'टित सो.रान सु देव आत्म शिव
तुतान नित्य तस देवता सा'रिय पितर सत. ऋषि-चंद्रम-रव
अनेक अश्वमेध-नरमेध क'र्य त'मि च्यन भवनन हुद स्वामी गवह्०

७ पतव कां'लि देह च्यवन खोचन तिम टा ठि र'छम. ति इम
चितायि हुंदुय यत्न करन या'ञ दज़ि मो.र घर. गछ़न तिम
पतव तस स.ति कुस छुय पकन कस यम किंकर पचंन दो ह्०

८ तवय अमृत कथा वनय मरन. ओठुय हा म'यज़े
मरणाय मरुण गव दय सो.रुन योग लयि सुय दय सो.र्यज़े
सह्ज अमृत च्य गलि गले यम भय. भव.सर त'र्यज़े ह्०

९ युथ नो यि कथ व'नि क'नि प'ति गछ़िय त.गछक गटे मंज़
युथनो यि वथ पक.ञ मशिय कठकशि लगक छटे मंज़
यि कय यि वध पालन प्रावक दय. घरि मेलिय वो.टे मंज़ ह्०

१० इमय यथ कथि यछ पछ भ'रक सत्संग नावे त'रित गय
यमि भवसरे स्वरूप विमुख तिमै अकाल. म'रित गय
देह्.चि छ़ाये ल'गि मोह्. माये पतव पानस फ'रित गय ह्०

११ हरन तिमै सो.रुक न. ईश्वर घरुक श्रम गोक असुरगय
इम गय शरन तिम व'र्य हरन यम. त्रास. कठिने उद्धर गय
घर बार वर्ज़ित अंदै रूज़ित काल.ञि सिधे अमर गय ह्०

१२ काल'ञि च़ंजे गछ़ान खंजे सुन्दर त. गंदर गछ़ान दो
अन्न पान च्य क्यत रोचान छुयो च्य क्यथ मन अद. पच़ान दो
कालस हारि भयस तारि च़. कोन. दयस सो.रान दो ह्०

१३ कालुन दुर्भय सु क्युत सना जन्म कष्टय सु क्या गव
ईश्वर अनुग्रह यस भाग्य ज़नस तति छुय पानै उदय शिव
ज़न्म कस सन. सुफल गछे त्युत कंपि सना युथ अमृत चव ह०

१४ इमन भाग्य उदय करान स्वामी सो.रान वों.दे मंज़
आकश. पाताल. तरित गछान क्रीडा करान कंदे मंज़
संगरमालन शीन. इथ. ज़ल द्राव ज़ल बिंदु सिंधे मंज़ ह०

१५ इम ज़नि आसान कुने कुने व्यापक तिम हनि हने मंज़
यस लोल ईश्वर. सुँघ वो.न मने तस कोन. तिम अद. वने छिये
युस यी वने सुय तिय बने इम संमि नित मनि वो.गने छिये ह०

१६ मधुर वेह छुय मनुक विषय हा मित्र रूपी शत्रु ज़ान
युत नो फसक लसक न. अदह मन लय कर देव सो.रुन ज़ान
वेह गलि दह यलि शत्रु गलन नित योग. अमृत चो.नुय ज़ान ह०

१७ इन्द्रिय अति विषय महा वीर.य मन राज़ महावीरन दो
अक वीर दह सास वीर कि इरै भ्योन भ्यो.न बल छुक त्युथुय दो
अंकिस.य कामे सांरिय छि लारान क्या तति उपाय ज़ीवन दो ह०

१८ कुस सन. इथ्यन वीरन मारे मन वीर राज़स रटे कंह
सयस कासे भक्ति आसे सु जन यो.दवै टोठे कांह
वुज़मलि सुय रटि आकाश चटे रवस रटे कांह ह०

१९ नाथो ब. नो रानम मंगै म्य रावणुन राज्य करे क्याह
यि कैंह देहस प्रारब्ध आसे तत मंज़ हरे त. हुरे क्या
ओमुप दुर्लभ वन्योम सुलभ स्वराज्य लो.मुप वों.दे मंज़ ह०

(३७)

श्याम सुन्दर. बेह सुन्दर जाये।
वथरै मन मथुराये लो लो॥

१ प्राण. पवन. स.तिन मुचरन. आये
नव द्वार देह द्वारिकाये लो लो
वृ'च गोपियि च्यय वुछने द्राये वथरै०

२ बाल. रठ नाल.मति स.ति पालनाये
साञ्ज भरिच् हंज़ि कुब्जाये लो लो
निष्काम. सिद्ध कर. मन. कामनाये वथरै०

३ टोठयोक गजेंद्रस कथ विद्याये
आहिरस कथ श्रद्धाये लो लो
कमि श्रोचि खुश सां'पनुक शिवराये वथरै०

४ केवल बख.च हुन्द कर म्य उपाये
स.ति पननि प्रेम. त माये लो लो
वासुदेव. वास कर मंज़ वासनाये वथरै०

५ राज. द्वारस चा'निस भिक्षाये
आधीन कर्म हीन आये लो लो
चार. कर म्य आर.कचि सुशीलाये वथरै०

६ सुदाम ज़ा'नित कर म्य उपाये
वो.लमुत छुस ज़िष्टाये लो लो
छो.चर.य म्योन पूर स.ति पूर्णाये वथरै०

७ वान. रो स्त द्रा'मुत छुस भिक्षाये
वूँचमुत दैव सपताये लो लो
भिक्षुकस आव राज़ हंसुन साये वथरै०

८ फल. दायक. चानि खल. किन आये
अनुग्रह तोत पूरि आये लो लो
वो.वमुत कैंह ति छुमन. कर्म भूमिकाये वथरै०

९ शो.ज़राव संकट ग्रह दशाये
उल्ट. समयस प्यट ज़ाये लो लो
फिरथुर कर च़ सानी कर्म लेखाये वथरै०

१० भाव. मुच़कन्द म्योन पननि इच्छाये
साव मंज़ मोह. निंद्राये लो लो
वुजनाव मंज़ स्मृच़ गुफाये वथरै०

११ पानस पत. दोरनाव म्याज़ि राये
सिर्यि रूप. ज़न पो.त छाये लो लो
ज़ाल मद. कालयवनस कायाये वथरै०

१२ मारका'ण्डी ज़न चाज़ि आशाये-
आयस मंगने च्य आये लो लो
कालम ग्रास कर भास जायि जाये वथरै०

१३ आत्मा राम. निवृ'च़ हंज़ि राये
स.ति पक शांत सीताये लो लो
दण्ड कर प्रवृ'च़ शूर्पणखाये वथरै०

१४ गाल मोह रावणस त. क्रोध. सेनाये
ज़ाल लोभ.चि लंकाये लो लो
विवेक. मन. लक्ष्मणने भाये वथरै०

१५ सत्गुण प्रकृ'च कौसल्याये
मुख हाव स.ति दयाये लो लो
राज्य कर आनन्द. अजोध्याये वथरै०

१६ ज्ञान. ताज दित ध्यान. धारणाये
स.ति स्वतंत्र.ताये लो लो
चित्त तख्तस बेह ह्यथ समताये वथरै०

१७ होशयार रोज़ मंज योग. निंद्राये
ह्यत समदृष्ट एकताये लो लो
तुर्या रूप. मंज राज़. सभाये वथरै०

१८ अज ताज़ का'त्याह गयि क ति आये
वत.गत यत यात्राये लो लो
एक. कुस वोत चाज़ि अनेकताये वथरै०

१९ वीर.क'र्यं ईर. चाज़ि विष्णु मायाये
बडि दय. बेपरवाये लो लो
इम त'र्यं तु. तिम ता'र्यं चाज़ि कृपाये वथरै०

२० म्य'ति तार भव.सर. आवल.नि जाये
स.ति विवेक. उपाये लो लो
युथ देह. डँग. सोऽहं हम. वाये वथरै०

२१ केशिव नाव ज़पनाव भावनाये
अज़पा ज़प मलाये लो लो
मन नाव.आत्म तीर्थ.चि यमुनाये वथरै०

२२ राम.च.न्द्र. शिव लगहोय एकताये
हा'वित चन्द्र कलाये लो लो
मोह् गट. कास स्याञ्जि बोज़ मीनाये वथरै०

२३ सावधान मन कर य'ज़मन-भाये
योस द्रायि मंज़ प्रज़ाये लो लो
वर तस वो.ञ वा'णी कन्याये वथरै०

२४ विश्वरूप व्यूग ल्यूख कर्म. लेखाये
स.ति नाना वर्णाये लो लो
शक्तिपात, दृष्ट थव प्यठ निष्ठाये वथरै०

२५ कर्णेश्वर्यन हंज़ गूर्य भाये
रास खेल.नि नञि द्राये लो लो
थफ कर कृष्ण.नि' राग. राधाये वथरै०



'लल' ब चायस स्वमन. बागस वछुम शिवस शक्त मीलित त. वाह
तति लय को.रुम अमृत' सरस ज़िंदय मरस त. म्य करि क्याह

—ललेश्वरी

श्री शारिका लीला-लहरी

[चतुर्थ तरंग]

(३८)

चित्त भोम शांत चोन प्रेम· अमृत चोम ।
ओम् श्रीमत् नारायण नारायण नारायण ओम् ॥

१ यमि संसार· मंज़ पत· लार्यम क्या
दय· नाव स्वरण· हस्त थावुम म· ज़ांह
चानि भक्ति भाव खो·त कांह परम सुख छा
पत· वन· भिक्षुका हयुव बादशाह
ब्रोंठ·य म्य ह्यस· फिर घरि कुय भ्रम गोम ओम्०

२ मन· वाजि नारायण नाव खनतम
संकट· गटि मंज़ अनतम गाश
रायि मंज़ घनतम मोक्ष पद वनतम
प्रकट वनतम परम आत्मा
क'न्न ज़ाहिश बुद्ध छम थ'व्य ज़न करत·मोम ओम्०

३ नज़ि ज़ांह्ज्यवहा नज़ि ज़ांह मर· हा
नारायण नारायण करहा नित
चानि नाव· स·ति भव सागरस तरहा
ध्यान चोन स्वरहा थव म्य स्मृत
होश दिम व्यवहार राग द्वेश इथ व्योम ओम्०

४ हकरे बनि मंज़ अन. गगुराय चाव
योर. ह्यत क्या चाव ख्यत क्या द्राव
कायायि म्याज्नि मंज़ छु आश्चर्यवत वाव
रूप छुस क्युथ क्या छुस स्वभाव
निलेप द्रास पत. क्या ख्योम क्या चोम ओम०

५ योर अथ व'हरित तोर आख व'टिथय
कोलि मंज़ फ'टिथ.य छुय होख पान
क्या लारि धन' सों बरित पान च'टिथ य
धर्म व्यवहार कर ख'टिथ.य पा'ठि
ज़न्मस इथ करनाव धम.च का'म ओम०

६ ब'डि ब'डि कार क'र्य क'र्य क्या प्रोवुम
थ्यक.नोवुम छुम बो.ड खानदान
यश. पुछि मान. पुछि दोह रावरोवुम
लूकन होवुम देह अभिमान
ह्यस फिर म्य मोह मस च्यत पान व्यसरयोम ओम०

७ मृत. विज़ि आजमल गं'ज़रावतम
म'शरावतम जन्म.कि करतूत
यम. किंकर बुथ मत. वछनावतम
नारायण नाव थावतम याद
युत छु त्युथ चत. 'कृष्ण' प्रेम दो.ध ओमज़ोम ओम०



करसै सो.न पोशन माल।
अज़ इयि लाल. सोनये॥

१ मय खा.नके हा कल. वाल असि मय ह्योत चो.नुये
प्यालत. त्याल. माल माल अज़०

२ तसुँदुय मय त. तसुँदुय प्याल तसं.दे वान. क.ननै आव
खुँब.चि कुँज़' तस हवाल अज०

३ दूर्यर त. लो.ग कोताह चाल. मूरे नार छुम ललवोन
शूरे पान क'हि संभाल अज़०

४ य'मि लायि लोल. सोंदरस छाल त'मि खोर लालि दुरख्शान
सुय रूद आद्य अंत बहाल अज०

५ तेजोमय युस नूरान. विज़े वुज़नावन गोम
करसै शिल दिल हवाल अज०

६ कैंह गय रिंद कैंह रिंदान. कैंचव रिंदव ज़ोलुय पान
कैंह गय अचित च्यवान प्याल अज०

७ दाग सुय ह्यत कुनि गुलालि. बाग.चि हिय सु छाव्यम ना
नावस तन ता'य रटनै नाल अज०

८ कैंचव को.ड मुल.क दाल. कैंचन निशि हावान पान
कैंह गय बर. ज़न गुलाल अज०

९ व'लि म्य त'मिसं.दि लोल.कि जाम अज़ इयि श्याम सोंदर सोन
सुय इयि 'वासुदेव नि' साल अज०

(४०)

कर हयि म्य कुन गिंदुन दिमस चंदन हार ।
आद्य शक्तिय शिव जियस नमस्कार ॥

१ ओमय आद्य ओमस अन्दर पञ्चाकार
ओमय ज़गत धारित केवल निराकार
ओमुक निर्णय कुस वनि भ्योन-२ छुस विस्तार
ओमस पार्थ. ओमस हर मुख. नमस्कार आद्य०

२ ओमय छु सार. ओम.चि स्मुरण मनस धार
सहज़ स्वरूप आनन्द प्रावक मुक्ति द्वार
भक्ति देव. प्रमाण थावक. बनि उद्धार
भक्ति स.तिय लय कर भक्तयो लभक तार आद्य०

३ मोह.चि न्य'न्दरि अन्दर म. गछ गिरपतार
बोचायि अन्दर न्य'न्दरि गछ़तो खबरदार
स्यो.ध वो.थ न्यन्द.रि इन्द्रिय क्रीडस निश रोज़ खबरदार
दिल थव डंजे लंजि छुय बिहित जानावार
बोलानावुन लोल. पनने सुय सू.य ओमकार आद्य०

४ आनन्दमय बनक ट्याल. चावनय मालामाल
मावनय सौरुय स्वमनि सोऽहं सहाकार
त्रिगुण उल्लंघित निर्गुण छु पानय निराकार
अनतन लये मनस स.तिन पनुन यार आद्य०

५ पान पनुन य'मि कोर. सहो. ब. संसार
बही त'मिसंज़ सही सॉ'प.ञ ब. सरकार
'वासुदेव.' मेलव देवाद्यदेवस ब. विस्तार
सार सही आद्य अन्तस छुय दरकार
पादि प्रणाम नाद बिन्दस छु बारंबार आद्य०



(४१)

फुलय ल'जिम सहज़किस संज़ीवनस
समय वा'तिथ कुनि भुवान मनुष्य ज़नस
सहज़ पूज़ा करि कूँछाह नारायणस
श्रेयान धर्म छुम म्य पनुन निस्त्रैगुणय

गव कल्याण स्वधर्म. मरुण पर धर्म ज़य ज़ान भये ।

१ पर गव यि शरीर बोज देवन ति छुय नश.वुनुय
यि करि शरीर रंब.वुन यो.द ता'य पश्यवुनुय
आत्म. धर्मी दुख ना हरि तोष.वुनुह श्रेयान०

२ स्वधर्मी युस पा'नि पानै पानस अर्चान
अनेक रूपस भेद ना तस केवल यु मो.चान
स्वधर्म. विधा तस बिना कां'सि न. व्यचान श्रेयान०

३ घंटायि शब्द ठिञ्जि रुस्तुय छय वज़वुनुय
सदा शिवस निश. नेरान सुय बोज़वुनुय
बो तन भोरय ओर. योरै सुय रोज़वुनुय श्रेयान०

४ मधुर मस.य ब्रह्म. योगुक च्य गलि गले
दीर्घ. रोग.य ससारुक तवय बले
ननिय सु ईश्वर निश पानस सदेह चले श्रेयान॰

५ सुत.य सुत.य देह. देशस अमर छु त.य
सु जुत्र म्योनुन युस केवल ब्रह्म छु त.य
वाक् ईश्वरीय रूप नाव तसुंद सु पर छु त.य श्रेयान॰

६ व्य'चस न. कुने यी ब.आ'स.स तिय दो मो.चस
प्रजायि आंगन बाल. पानय रुमा न'चस
युथुय ख'चस त्यन पोरन त्युथुय व'छस श्रेयान॰

७ सु मा डयूठवन नाव गोत्र वर्ण. रुस्तुय
युस दज्ञि नता'य हो खि नता'य छ्यनन. रुस्तुय
सु शांत प्रकाश सिर्यि ज्ञन द्राव लोसन. रुस्तुय श्रेयान॰

८ सर्वारंभ.य त्रा'वित युस दयस रटे
तस दय दर्शन सिर्यि ज्ञन दिथि मोह ज्ञि गटे
दय ललि टोठयोस सा'यस.य मज्ञ तस केंह न मटे श्रेयान॰

९ सु देवदत्तस पोश लागस नित्य नाश. र'सितिय
अकाल. पोशन छक उत्पत्त आकाश. ख'सिथ.य
ज्ञानान तिम ज्ञ'नि सुकृति ज्ञनाइम गांश स'सितिय श्रेयान॰

१० स्वछन्द नाय.य ओस पानै सु बा'लिये
युस कदि ओसुम छायि रूज़ित केंह का'लिये
युधिष्टियर ज्ञन चक्रवत द्राय सु का'लिये श्रेयान॰

११ स्वरूप.य ज़ोन भगवान संतव राज़ ऋषव
अनेक. रूपी रूप तस द्रायि अरूप सु गव
सु शांत प्रकाश सुलभातित सलुभ लयव श्रेयान०

१२ ब्रह्माण्डस द'यि व'नि म्य दिचाम आगुर कते
सहस्र. दलय. फोलित आव सुयोग. वते
सदर्शनस कें'ह न. विना लभुम न तते श्रेयान०

१३ स्वत: प्रकाश जानव..नि द'य स्वत: सिद्ध.य
स्वराज्य करान स्वदेशस सु शुद्ध बुद्धय
सधीर रोज़ू बोजु बोज़ू सु धर्म त्रिध.य श्रेयान०

१४ स्वमाला छुम स्व मने नित्य जपव.त्रिय
सपद सुवाक सरस्वती छय वन.व.त्रिय
ननिय स्वजात शुद्ध स्फाटिक शांत शोल.व.त्रिय श्रेयान०

१५ सुज़न आसान मस च्यवान छु स्वतन्त्र.य
स बोध मये बोज़वनुय छु स्व मन्त्र.य
सु भक्ति विना भू क्रिया छय न सु तन्त्र य श्रेयान०

१६ सुवा'दी कम कें'ह न मन्त्र कुस बनान
सु आनन्द. गण न'दियव इति अमृत फिरान
सु भाग तिमन च्यन इमय अद. न. मरान श्रेयान०

१७ सु भाष. करान नाश. हस्तुय छुम सुय जुवुय
जुवुय शिव.य जुव ब्रह्मा विष्णु जुवुय
स्वत: चे'तन युस प्रज़ायि कुनुय जुवुय श्रेयान०

१८ गुपित कर्म नित्य करान सु कर्म. वान.य
परामर्श छुक स्वभाव छिय घैर. वान.य
सो.गत सो.वथ भाग्य हीनन ना ईवान.य श्रेयान०

१९ सो.ज़ा'ञ किञिय नित्य सो.गत दिवान दये
दुर्भिक्ष न. कुने तति सुभिक्ष सु समये
सुघैर सुसंग आद्य अन्त यथ न. समये श्रेयान०

२० अव्यक्त मूर्ती दृष्टमान आव सु चैनन.य
परम विधान सु स्मृत छम सुधर्मवान.य
सु वा'नो हत्र केवल आन्नद स्वरूप निर्णय श्रेयान०

२१ सु दृढ करान बहु जन्मान्तरन.य सुकर्म
जगत मिथ्या ब्रह्म सत्य सिद्ध गव धर्म
सुधर्म फल द्रात्र 'सर्वं खलु इदं ब्रह्म' श्रेयान०

२२ ब. तस निशे सु म्य निशे दूयंर. न. क्षरण
दूय हव ग'जिम कस वनय लक्षण.य
सो योग. कला सु पूज़ा सु प्रदक्षरण.य श्रेयान०

२३ सु शिव वने कस इये सु तेज़. मये
सु वासना यस साधकस नित्य सु बोध मये
सु तेज गाशस अविना'छी वुछ हृदये श्रेयान०

२४ सु बूलि करान सुत. आयंन सु बोध. ओहृय
चिन्तामन देह पारिजातक कुल देव. दरा.य
यि केंह मंगान सिद्ध गछ़ान तत केंह न. ता'र.य श्रेयान०

२५ छय 'लछ' संख्या नाव तसं.दि अलक्ष्य सु दय
सु भक्तिमये स्थूल सूक्ष्म हिहूंय सु दये
तस केह न' अ'न्दी ज़ान त. संदेह दपान तस दय श्रेयान०

(४२)

उत्तम भाव. सहज़ यज्ञस ब्राह्मण नित्य हुमनस छिय।
देह अभिमान आहूती तिमय परम. हस.य छिय ॥

तति तोर सा'रिय आरम्भ दोषन. वा'र. व'लिम'ति छिय

सहज़य ज्ञान सहज़य मान सहज़ चे'न सहज़. पान
सहज़ क्रय दोष यो.दवै मो त्राव प्राव सहज़. ध्यान
सहज़ छुय सहज़ रस चित्त सहज़ रस छुय म्य कारण.य
सहज़ पान नित्य प्रज़लान दूरी ना नेरि प्रावनुय
सहज़ क्रय शम्भोहस प्रयि सुय ध्यान पज़ि धारनुय सहज़ ज्ञान॰
सहज़. लयि च.लि मनि खय निशि बनि दय सहज़ानन्द
सहज़ साव. दीप प्रज़ल्यव गट. च़लि मेलि परमानन्द
सहज़ वारि सहज़ पोश फो.लि. फल द्राव सहज़ानन्द
सहज़ बीज़ आतम तेज़ चिन्मय अविना'शी छुय सहज़ ज्ञान॰
अथिगटि कति सहज़.हष्टी सोरुय प्रकाश.य छुय
सहज़य शम सहज़य सम सहज़य परम गाश.य छुय सहज़ ज्ञान॰
सहज़ वति रावुन कति रोवमुत अथि इवा'नी
सहज़ कथ छय अमृत ज़न्म मृत सोर छिवा'नी
सहज़ थान योगेश्वर नित्य समाध दिवा'नी सहज़ ज्ञान॰
सहज़ नित्य आत्म तत्त्व सहज़य ऊर्ध्वगति ज्ञान
सहज़य नाद सहज़य बिन्द सहज़य अव्यक्त.य ज्ञान
सहज़य शिव सहज़.य शक्त सहज़.य परम गति ज.ान सहज. ज.ान॰

सहज़ शब्द ब्रह्म.य गव सहज़य ज़ान 'अ' शब्दय
सहज़य सत्य विचा़रय सहज़य पर. प्रसाद.य
सहज़य थान अमृत छय सहज़ भक्ती छय अलबदय सहज़ ज़ान०
सहज़ वाद गव संवाद सहज़ भाष्य गव संतसंग
सहज़ बोलि कूंछाह तोलि कूंछाह जानी सहज़ बंग
सहज़य सार्यकुय मूल.य सहज़य सारि निशि असग सहज़ ज़ान०
सहज ब्रोंठ सहज़य पुत. सहज.य यत समयस छुय
सहजव स्वयं नाथय छुय सहज़.य अद ईश्वर कुस
सहजय आद्य अंत रोस्तुय सहज.य स्वरूप अरूप युस सहज जांन०
सहज़ तारक मंत्रय सहज़य संत मार्ग.य छुय
सहजय गव वेदांत.य सहज़य वेद अपार.य
सहज़य तत्त्व बोधानन्द सहजय ज़ानतो भर्ग.य सहज़ ज़ान०
सहज़य वाति न. लभुना वा'तित हनि हनि छुय
सहज़ यस नित्य अमृत दय. सहज़य मंज़ मनि छुय
दयस गारि सहजचार नित्य नाराण वने छुय सहज़ ज़ान०
सहजय सिर्यि खो.त. छुय नो.न त्युथ छु गंभीर.य
गंभीर सान सहज़ुक भाव निथ सुर.वुन छुय वीर.य
वीर ना ईर. प्रल्यन छीय तुत मान कुस करि वीर्.य
सहज़चि तारचि तूलित तस त. न्य भेद रचि़नव केंह सहज ज़ान०
या सुय योताबू.य ना केंह नत. बू.य योत सुय न.व केंह
सहज़ बाग अनन्त नाग ह्ययि तति ज़ाग सहज़ानन्द'
सहज वारि सहज़ पोश फो.लि फल. द्राव सहज़ानन्द सहज़ ज़ान०

(४३)

१ स.कलि निष्कल द्रायि सो कले।
वोथ मन. ! हा कले शब्द जप ओं॥

२ होश थव वासनायि द्यान रोज़ि सम
मन प्राण सत्य भासि सर. फो. लि पम
मान रट पानस विघ्न हान चले वो.थ०

३ कस चावि लोलकिस प्यालय मस
सुय करि तय ओर चावन यूस
लोल.कि द'रियाव. गो.ड पान छले वो.थ०

४ मन बुद्ध सू.ति छुय खूर ता'य हम
सोऽहं रज़ि सू ति प.वन नावि लम
अहं आ'वित सोऽहं फ़ो.ले वो.थ०

५ प्राणचे अकरे शब्द पर.मान
सार रठ बो.ज़ सू.ति पूर तोलान
सत चिय साक्षी लेख. अमले वो.थ०

६ सोऽहं हायकि सू.ति परमानस
यति तति प्यतरुन छुय पानस
होश थव वासनायि युथ न माल गले वो.थ०

७ शब्द बूल कुकिले गोविंद गो
पीशनूल छिय ज़पान कृष्ण गोपो
आवुन सूरित कस्तूर कले वो.थ०

८ सो.न खसि कहवचि तार.चि़ तोल
तोलि सुय रचि़ रचि़ यंभि अहं गोल
भ्यो.न भ्यो.न मो ल छुय सो.नस सरतले वो.थ०

९ यावन बागस फुलया छम
नाद खस सावान तेज बिंदम्
सत्य लोक समाधि सहज़ प्रज़ले वो.थ०

१० ही फो.जि जारन आरन आरवल
मस्वल गुलाव व्ययि यंत्र.ज़ल
बंबूर छारान छुय यंब.ज़ले वो.थ०

११ मनकिस ध्यानस सोऽहं खानस
संहज़ संदानस सो.रनुय ह्यु व
दम ह्यू सम रोज़ अद. पम फो.ले वो.थ०

१२ कन थव क्या वज़ान टल्द ज़ीर बम
चे़नतो आ'कलो दर नफिस दम
कलि-२ कल घनेयम वुज़ म्य शशीकले वो.थ०

१३ 'परमानन्द.' त्राव फिकिर. त. गम
चिंतामन रत्न सत्य ज़पुन ओम्
बू.य बू.य त्रां'वित दू.य मनि गले वो.थ

१४ ईय ओस रोव.मुत तीय पनने गरे
गोरन दुपनम अतिथय प्रार
ओरुत प्रारान ओश कर मेइयेले वो.थ०

१ निरला वास· दय वरतन त्रिकाल·
कर्ता भर्ता बाल· ब्रह्मचारो ।

भक्ति भाव· कोसम पोषन करै माल·
बाल· गोपाल· नन्द लालो हो ॥

२ प्रथ भूमिकायि मंज़ शून्या वलये
अंति श्यत करत· चित्त भगवानो
बुद्धि संयोग· साक्षात्कार भास्तम बाल०

३ विश्वेश्वर विश्व आत्मन भगवान·
विश्व रूप· किनि छुक उलसानो
विश्व आत्मानुभव दितं दीन दयाल बाल०

४ शुद्ध प्रज्ञायि हंदि सत् संयोग· भान·
मध्य मायि मध्य भूत प्रज़लानो
तेज़स्व बालार्क तेज़ दीप्ति बिशाल· बाल०

५ बुद्ध लय तन्मय विश्रान्ति स्थान·
चित्त गण· द्योतव·नि चित्त भानो
चित्त शक्तयानन्द· भोगी प्राज्ञ·काल· बाल०

पश्यन्ते यत्–वत् चे·य योगेश्वर·
तत् वत् वुछित चित्त स्वप्रकाशो
बाह्यन्तर तेज· निर्भर त्रिकाल· बाल०

७ द्वादशांत· वास· वासी चेतन मान·
स्व सुखस्थान· सुख भोगानी
स्व परानन्द· आनन्दय सर्वकाल· बाल०

८ सहस्र· दल· प्यठ· स्वस्ति ज्योतिष्मान
अंड· पिंड· अखंड· दीप्ति मानो
अप्रमेय· अविच्छिन्न· दिन· दिक्काल· बाल०

९ परात्पर गाशरं हृदि गाशर·
सर्वज्ञेश्वर· बोध· मानो
क्षेत्रान्तर्यामि क्षेत्रज्ञ क्षेत्र पाल· बाल०

१० सत् सत्व तत् तत्व अच्युत· ब्रह्म तत्व
नित्योदित चित्त विवस्वानो
ओंकार· रूप, परिपूर्ण· निर्देश· काल बाल०

११ सारातिसार· सर्व आत्म सर्व आधार·
देवादि देव· गो धाम· नाथो
हे दात शक्तिपात· करतं उपराल· बाल०

१२ सुज्ञान· सर्वदा सर्वतो भास्तम
क्षण· क्षण· भासतम साक्षात्कार
कृपा करतं भगवान कृपाल· बाल०

१३ पादारविन्द· अमृत तृप्तावतम
प्रावनावतं परम· आनन्द थान·
पाद· कमलन वंदै नेत्रन हृदि लाल· बाल०

१४ दासन क्युत ह्यो.त छुक बडि स्वभाव.
शुभ. दर्शन. वर दिवानो
विदुरस हाक. म्य प्यठ आमुत साल. बाल०

१५ प्रारान प्रारान वोतुम यूत काल.
अनुकूल भगवान. दयालो
ब्रह्मार्पण बोज़तम प्रात: काल. बाल०

१६ श्रीधर. सुर. गुरु. बाल. दामोदार.
श्री कृष्ण. बासुदेव. श्री रामो
सुख. मुख सन्मुख आस्त अन्तकाल. बाल०

१७ निरला चानि संयोग. प्राव. यव.ना
सुज्ञान. विज्ञान. अति वृद्धा
दय. गोविंद. दास.य बन. त्रिक. काल. बाल०



(४५)

१ चेतन स्वप्रकाश सर्व आत्म ज्ञानी
सत् चित् आनन्द गण परमाशक्त ।
नित्य सार संवित ज्योत द्योत वानी
कृपा कर मा'जि भवा'नी ॥

२ नित्योदित चित्त रव च.भासा'नी
विश्व आत्मा चोन ज्योति स्फार
सर्वान्तर्यामि भाव आस. वा'नी कृपा०

३ या द्वादश अर्क. तेज़मान दीपिका
स्वप्रकाश गग़ सा चि.त्त प्रतिभा
सर्व तेजोमय श्री महारज्ञी कृपा०

४ दुर्गा अव्यय कर्ता अक्रिय
विश्वोत्तीर्णा विश्वरूप विश्वमय
स्वयंभो सवेतः ज़य वा.णी कृपा०

५ परा पश्यन्ती वैखरी मध्यमा
चोरि पाद. एकांग शुद्ध विधा
अनुभव. मात्रा शिव भशिनी कृपा०

६ सम शुद्ध च़ तन निस्त्रैगुणी
सुर. गुरु. देव. देव चिन्मयी
क्या कर. निष्बुद्ध अस्तुत ब. चा'नि कृपा०

७ शुद्ध बोध थावतम विध सुज्ञान.य
सोऽहं शब्दार्थ विज्ञान.य
पूर्णाहंता स्वरूप आसवा'नी कृपा०

८ ब्रह्मार्पण एकांत ध्यत थावतं
अनुसंदावतं सत् चित्त ज्योत
सुज्ञान. विज्ञान. सिद्ध पर रा'नी कृपा०

अनुग्रह चोन बनि यस भाग्यवानस
सुय गछि सन्मुख चित्त मानस
गलि अद. अज्ञान मोह मद मान.य कृपा०

१० अनुग्रह. किञ असि अंधकार कासक
याञ ताञ भासक सर्वतोमुख
सर्व आत्मा पर ज्योत द्योन वा'नी कृपा०

११ आदन. म'जिमय पर नाद. साधन
अन्य नादन हुंद छुम न. अभिलाश
वर चानि तर. कर. पर भक्ति चा'नी कृपा०

१२ भिक्षुक द्वार चोन चा़व भिक्षाये
शिव निर्वाण.कि अभिप्राये
दित. दान व'ड दात. छक आसवा'नी कृपा०

१३ चानि शक्तिपात. वात. ब्रह्म. निर्वानस
परम–स्थानस कर. निवास
भक्तय्न छय मुक्तिदा दया चा'नि कृपा०

१४ क्षण. क्षण. च़रणामृत चोन चम हा
शम.हा चान्यन पादन तल
शाप पाप शोक संताप कास बा'नी कृपा०

१५ सन्मुख सुज्ञान. अनुभव थावतं
हावतं सुविचा़र. भवसर. तार
प्राराण आश्रित आशि छुस चा'नी कृपा०

१६ सूतक मृतक भय निवारतम
भव. सागर. मंज़. बो.ठ म्य खारतम
अ'त्यन आर्च़'र छक कासवा'नी कृपा०

१७ आनन्द मूर्ति अमृतेश्वरी
अमरावती सरस्वती
द्वंद. दोष कास्तं विंद्य वासिनी कृपा०
१८ हिंगुला ज्वाला मंगला काली
पिंगला त्रिपुरी ह्रीं कारी
राज राज़ेश्वरी पर. राज रा'नी कृपा०
कठिने भव.सर. मत. मंद.छावतं
प्रावनावतं परम. आनन्द. थान
१९ कृपा कटाक्ष. तार दिवबा'नी कृपा०



श्री राज्ञी स्तोत्रम् ॥

१ स्मृतैर्वान्तर्गतं पुंसां हरन्तीं सकलं मलम् ।
जयत्येषा महाराज्ञी भक्तानां काम दायिनी ॥
२ त्रिजगन्मोहिनी ईड्ये मिहिरी भूत सद गुणे ।
नमोऽस्तुते महाराज्ञि पाहि मां शरणागतम् ॥
३ शेषाशष मुखागण्य गुणे गुण गण प्रिये नमो०
४ सुरासुर नर सिद्ध बन्दनीय पदाम्बुजे नमो०
५ चराचर जगत्सृष्टि स्थिति संहार कारिणी नमो०
७ भक्त कल्पलतेऽनल्प वाङ्माधुर्य जितामृते नमो०

७ ब्रह्म विष्णु महेशान वन्दिते गिरिनन्दिनि नमो०
८ भक्तानां भीम संसार पारावार प्रतारिणि नमो०
९ निर्गुणे निष्क्रये नित्ये सच्चिदानन्द रूपिणि नमो०
१० राज्ञीस्तोत्रमिदं पुयं त्रिसन्ध्यं प्रयतः पठेत्।
असंशयमशेषेण वशयेदखिलं जगत्॥



(४६)

म्य संतन हिश न॰ छय शांती न शम दम।
च॰ छुक पानै ब॰ कुस छुस कास्तम भ्रम॥

१ दया सागर वनन छिय लूक सा'री
दयाये हुंदि समन्दर छिय च्य जा'री
दया हय म्य करक अथ क्या गछ़िय कम च॰

२ म्य ज़न्मन हंदि महा अपराध हरतम
दया करतम म्य मूर्खस लोल भरतम
प्रियम दिम पूर त्युथ दूर ह्ययि यम च॰

३ फस्योमुत छुस ब॰ मंज़ संसार॰ ज़ालस
फक्त छुम चा'न्य आशा अन्त॰ कालस
क'डित निम ज़ाल॰ मंज़ बख्शुम परम शम च॰

४ ब॰ कोताह रोज़ यति आ'ख॰र मरुण छुम
कठिन संसारकिस सो दरस तरुण छुम
नितम मंज़ नावि प्रियमचि स्योद रटित नम च॰

५ उपाया कर म्य युथ मन रोजि निश्चल
मलिन बुद्ध छम गनेम.च बनि निर्मल
करुम अंत: करण शुद्ध प्राव. उपरम च०

६ ब. छुस अंदर न्यबर छ्य्ोट खोट क्रिया छम
फकत बोठ खार. वञे चा'निय दया छम
गंगा जल ह्य्ुव बनावुम श्रूच. उत्तम च०

७ शरीर प्यठ नज़.र छम छुस ब. अनज़ान
यछ़.न छुस मान मा'नित मांसुक पान
ज्ञानुक सिर्यि मंज मोह रा'च. बनतम च०

८ यशस ह्यथ छम विषय भोगन हंज.य प्रय
दया करतम दया करतम च० छुक दय
पखांडस काम. क्रोधस नाश करतम च०

९ शर.चि शोरह बने छम पाप प्य'च. सू.ति
कोहा हिश बडि छि खोचान अथ वुछित कू.ति
च. हावुस ज्योति रूप अथ वो.थि जम जम च०

१० च्य छ्य द्र.य पननि कुञर.चि म्य द्वयि कास
च्य छ्य द्र.य पननि बजर.चि ज.म. ज़ाँह भास
चि्तस घननम त. ज.न्मस जांह म. अनतम च०

११ कुनुय आ'सित च. नाना रूप. किञ द्राक
च्य ह्य्ुव गुणवान निस्त्रैगुण छु कुस ब्याक
कुनिय तत् पद. सू.ति शो.ज़.रावतम ओंतम च०

१२ प'तिमि समये यमस निशि मो.कलावतम
च. पानस ह्य.व बनावुम मोक्ष दावम
असा'व.नि मुख· फो.लनावुम म्य कोसम च.०

१३ छु सागर चानि कुजरुक सो.न स्यठा ज्यूठ
अ'नित दिम मो.खत नत. खारुन गछयं कूठ
ब.कथ सू.ति लाग हम किथ पा'ठि दिम दम च.०

१४ हवा ज.न बन बसंतुक अन च. म्य बोश
फो.लन बुद्धि योग. बागस होश. किथ पोग
तिमन पोशन प्यठ.य छुक शांत शबनम च.०

१५ ब.ब.य करनुक म. थावुम कांह ख्याला
न भाष्य देह देह,चि चाला त. डाला
गल्यम आवागवन रोज.यम न. कांह गम च०

१६ जगत किथ दरिहे कुस कार करिहे
समय आधीन कुस ज.यविहे त. मरिहे
छु ठहरा'वित अ'मिस चाने सतुक थम च.०

१७ अगम अपार छुक रिर्गुण निराकार
म्य केंछा यार कर भव.सागरस पार
क'रित सोरुय म्य थाव लोब निरालंभ च.०

१८ अविद्या कास्तम नित्त भास्तम सत
ज्ञान.च स्थित दितम सो.य छम परम. गत
अचित थां'वित म्य पत मो.च.रावतं ओम् च.०

१९ च. सन्मुख रोज़तं अद. चाल सुख दुख
खस्य बो.ठ मो.क्त सत् सागर दियम ग्रख
र'ठित निक होश देह. मंज़ चे नि क्या चम च०

२० स्वतन्त्र थाव म्य चे नुन शेलि ह्युव शम
स्वरूपस तेल.व.निस नशि.. छा कम
प्रियम मस मेली यस कम गेलि आलम च०

२१ पन.नि करतूत बुछि बुछि छुस ब. आधीन
'कृष्ण' पननिस स्वरूपस मंज़ करुन लीन
करुस मन लय त. अद. नो.न नेरि सोऽहम् च०



(४७)

१ कलजुग नहीं करजुग है यह यहां दिन को दे और रात ले,
क्या खूब सौदा नकद है इस हाथ दे उस हाथ ले।

२ दुनिया अजब बाज़ार है कुछ जिन्स यहां की साथ ले।
नेकी का बदला नेक है बद से बदी की बात ले।

३ मेवा खिलाओ मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले,
आराम दे आराम ले दुख दर्द दे आफत ले।

४ कांटा किसी के मत लगा गो मिसलि गुल फूला है तू,
वह तेरे हक में तीर है किस बात पर भूला है तू।

५ मत आग में डाल और को क्या घास का पूला है तू,
सुन रख यह नुक्ता बेखबर किस बात पर भूल है तू।



(४८)

बिल्व पूज़ा कर निष्कल

कल· माला धर.स.य हर. कल. माला धर.स य
क्षय करि सान्यन पापन नाश करि सान्यन शापन
जय गंगा धर.स.य हर.स.य शंकरस.य
ओम् शिव. शिव. शिव. शंभो ।
ओम् हर. हर. हर. महादेव ॥

१ सुय छु अज़र सुय छु अमर ध्यान पर परात्पर
तस छि ज़ानन योगेश्वर आश्चर्युक आश्चर
ज्ञान गाश अनि योग. नेत्रन वुछनावि आश्चरस.य क्षय०

२ त्याग. वैराग. चित. सोस्त थावि करनावि ब्रह्म. विचार
सतचे वति पक ना'वित ज़ाननावि ब्रह्म.य सार
आत्मा. बोधुक ज़ल वुज़नावि ब्रह्म भावकिस सरस.य क्षय०

३ ह्यथ गछि देह. अभिमानस अज्ञानस गंडि लार
अच्युतचे स्थिरतायि सू.ति वत थावि ब्रह्म. आकार
तमि गुण ब्रह्मवित् साधन पादन अ'छि जरस.य क्षय०

४ सं'सार यश भ्रम मा'नित मन. किनि थावि उदास
योग. ज्ञान ध्यान. सो.स्त थावि बस्तियि मंज़ वनवास
चिन्मात्र ओत मु'चरावि मंज़ क्षण. मात्र.स य क्षय०

५ अंत काल चि ज़ाल का'सित चित्त थाव.नावि निष्कल
च.टुन च'द्रम. काफ़ूर ह्यु.ब मो.ख सुय हावि शीतल
सानि पालन.चि आज्ञा दियि अभयस त वर.स.य क्षय०

६ धर्म. ज़ोर दियि तोर मुचरावनावि श्रद्धायि बर.स.य
ह्योर खारि चूरिमिस पोरस बसनावि शांति घर.स.य
कर्म. फलकुय बोर लो.चरावि देह श्रम किस खर.स.य त्तय॰

७ सिर्यि ह्युव प्रत्यक्त भासित नित्य सन्मुख आ'सित
सतचे वति पकना'वित अज्ञान. गट. का'सित
आत्म. बोधुक दीप ज़'लि थाव.नावि मंज़ मरस.य त्तय॰

८ वन. का'चाह छय स्त्रियि पुत्र प्रिय अथ दपान माया ज़ाल
इथि ज़ाल. मंज़ डाल. दित कडि चट नावि मोह. जंजाल
अतलास वलनावि सन्यास. व्'च थावनावि मंज़ धर.स.य त्तय॰

९ कर्म हीनस दुर्गत हरि द्रायंद्रस करि नाश
पालना सा'न्य.य छस मटि गटि मंज़य अनि गाश
आर इयनस तारि "कृष्ण"स यथ भव. सागरस.य त्तय॰



(४९)

वाक्य

वैकुण्ठ वासी श्री टिक काकजी

क्या सन गोम तत संवित् सुखस
वो वनै यो.दवै पो.ज़ वन.खय
भ्र'म रोवुक अ'मि रतन त. माज़न
अमि रत.चि त. माज़चि मो भर प्रय ॥१॥

मोग॰ बो॰छरन छल छांगरि कोर॰नक
लांग॰र्य लोगुत आ'सित् राज़य।
प्रकाशमान पान पान॰ निश ख'टरोवुत
पान फ॰ाट॰नोवुत रत॰ त॰ माज़य ।२।

आयस कदर नव ज़ोनुत दानय
शीन॰ मा'ञि ज़न भान॰ व्य'गलित गव।
वांज़ वान॰ वनत॰ यो॰द बद्ध क्या चा'ञि
ज़ोनुथ नाव व्युत्थानय भैरव ।३।

देह छुय आयुकिस आ'मिस पनस
अलोंद, करान छुक शुर्य भाषे
यि को॰रुम त॰ यि कर॰ मरिके म्यान्यर॰
कव॰ लो॰गुख वासनायि ज़ाल॰ वाल वाशे ।४।

घर॰ घर॰ करान हर॰ हर मोठुयो
मर॰ मर॰ को॰रुथ अमर पानय।
अस्थिर विषय वासना व्रत्त द्या'र॰थ
मूढ॰ कोन॰ रूज़य स्मरण दानय ।५।

प'ज़ कल त्रा'वित पर कल प्रा'व॰त
अ'छि गाश रा'वित सपनुक अन्ध।
विद्या सा'वित मोह वुज़ना'वित
दृढ॰ संकल्पन करथ वन्य सम्ध्य।६।

मूढव बूज़य सत॰चि पथा
पामरव ग्यवन चि कथा ज़न।
रात दोह रावरोवुय तिमव वृथा
शों॰गि शों॰गि बीठि म्य'चि दथा ज़न ।७।

स्यदखै स्यदिय सोरुय पानै
अथि इयि यि कँह छुक छांडान ।
रावनै रावरुत गाह ज़न भानै
ज्ञान. उलसावतो यि अज्ञान ।
ज़ोर कव. बन्योक बोज़न.कि भ्रमय
ज़ानन.कि भ्रम. कत्र. रावरथ ज़ान



ॐ नमस्त्रिपुर सुन्दय॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(पचंम - तरंग)

(५०)

प्रये चाव्ये दयो नेरय।
ब. फेरय दरद. नयि हू हू॥

१ ह्यतन सू.तिन पनुन रहबर गछक को.त रठ च़ पननुय बर
न्यबर मो नेर च़ अछ. अंदर दिलुक दिलबर छु सोऽहं सो प्रये०

२ च. अछ. अन्दर पनुन वुछ ओल च़ पानै छुक घरुक घर वोल
ग्रटै फेरान महीन नेरान ब ज़ोर आब सोऽहंसो प्रये०

३ छुय गफलत गट गाशस ठो.र तमिय गाशे ग'रित छुय मो.र
शबस खसान दोहस वसान शब.य सेज़ान छु सोऽहंसो प्रये०

४ छुखै रिंदान. कतरस प्यठ छु कतरै कुलि द'रियाव च्यथ
छ द'रियाव. दुर्रि अरफानै गुहान पानै छु सोऽहं स प्रये०

५ रब.य छुय सब सब.य छुंय रुब सपन रिंदान. बाज़ानै
छु हां सिल बा सफा वा'सिल छु हा सिल आशकै हो हो प्रये०

६ हुवल अवल हुवल आखिर हुवल ज़ाहिर हुवल बातिन
हुवेदा शाहि शाहानै वज़ान पानै छु सोऽहं सो प्रये०

७ अथव पनन्यव ल्यूखुम नामे "मकुंद रामै" पनुन अवहाल
यि केंह वव्याम. ती ज़ामै म्य अरामै छु सोऽहंसो प्रये०

(५१)

रामन सिद्ध क'र म्या'ञ मन. कामन
दामन रटस नित प्रभातन त. शामन।

१ महागणेशन ऋषि सिद्धि नाथन
नादन म्यान्यन यलि थोवुम कन
प्रज़ल्योम त्यलि गटि मंज़ सिर्यि हि.यू शुद्ध मन दामन०

२ लूक. सरयि मज़ सरि गरदान ओसुस
वृ'च. लूकन निश हर्षिदेव गोमुत
ओसुस भक्त मो कुल लो.गमुत वो.लामन दामन०

३ शिव शक्ति पोश फो.लि ज़ीवन मुक्ती
फल. द्रास अभिन्न अर्थ रस नाश. रुस्तुय
केवल हृदयस निष्कल जामन दामन०

४ भक्ति भूमिकायि गुरु युक्ति बीज वो.वुम
वेद. थलि मंज़ सांख्य. सग स'गरोव़म
सिद्धांत. सोंतन त्य'लि क'डिस बामन दामन०

५ शांती सीतायि मल गो.ल भूमिकायि
हसो सोऽहं च.रणन चर्यायि
नित लो.गमुत अमित ठीकित लक्ष्मन दामन०

६ द्रौपदी का'ली पाप जाय खा'ली
करम.चि कुरुक्षेत्र शुद्ध य'च. काली
कृष्ण.ञ बहाली य'छ. बलरामन दामन०

७ अर्ज़नस सुदर्शन· मुक्ती सॉ'पुन
गोतायि नित्त गावान गीत कृष्ण·नि
सो·य कल य'छ्म·च निष्कल सुदामन दामन०

८ राज़· हंस सुंद साय प्यव मन· मथुरायि
वासुदेवन त· यो·छ देवकी मातायि
सो·य जाय मन्ज़ूर क'र आरामन दासन०

९ व्यासन वास को·र शुक· स'दि भागे
भागवत् ग्यो·व त'मि श्रीकृष्ण· रागै
ज़ागि कोन, जिज्ञास पय पैगामन दामन०

१० नारदन नारायणस यी ओस मों·गमुत
साम वेद कृष्णुन रा·स मंज़ बूज़मुत
प्रय भ'रनस अक्रिय 'हलधर रामन' दामन०



(५२)

लयि द'रि त्रो·परित सपद मावरयो ।
हर· ज़ीव· पर·यो सोऽहंसो ॥

१ मन सर· तन नाव· यछ पज़ भरयो
प्राण· चूर हाविय गटि मंज़ गाश
इन्द्रिय शो·मरित आनन्द भरयो हर०

२ गारस अ'चिथ.य वनवास भरयो
अथि च्यय इययो सोऽहंसो
सासा म'लित हय हंसो परयो हर०

३ गोकुल ग'छि. हय तवकल करयो
अथि च्यय इययो गाशो हो
शम सो वा'तित हम् सो परयो हर०

४ ओमके रस. सु ति दिन त. रात भरयो
च.य गोस ब.य तय ब.य गोस च.य
वर्षण. तमिके दर्शन ब. करयो हर०

५ छूट. संसारस दोह तार भरयो
ताशोक छुम म्य चोन माशोको
आशाक ला'गित च्यय पत. मरयो हर०

६ हनस क्याह ताम्ब हा ब. क्या करयो
रा'वित अथि इख 'लस-शाहो'
हर गुण बूज़ित सत नाव सो.रयो हर०



(५३)

अर्पा'य यर्पा'य चो.पा'य पानस।
ब. पा'य लगस नाये लो लो॥

१ शाह फेरि पानै शाह नत. क'भि खा'यें
ब्याज़.चि गयस त्राये लो लो
ज़ीनित छु बापा'यें हा'रित गव ज़ा'यें ब०

२ सुलभ तिमन.य इमव. तिम गा'यें
नत. छा अंदन न्याये लो लो
दयि ला'नि व'व्नम.च् न.ज़ि मं'ज़िमि या'यें ब०

३ सु दपि पानै मा खसनम बा'यें
ब. दप. गयि लायि लाये लो लो
रूद क्या मूद क्या नुकसान क'मि चा़यें ब०

४ कालन ज़िथुयें मा' ग'यम.ति मा खा'यें
इम ख्य'लि कत्यू द्राये लो लो
पुज्य मा र'छि चौपा'नि या ता'य चमा'यें ब०

५ वाति मा दादस सु सा'द मका'यें
दायि अकि च़लिहम वाये लो ल
दो.पनम च़. बलक चालखय वेमा'यें ब०

६ मरिन. कूंछा बलन इम सा'यें
मो थाव वों.दस ग्राये लो ल
'परमानन्द' ह्यथ छु सा'र.य तया'यें ब०



(५४)

भेद. दृष्टि सा'ञ्च हार पननि कुञ्र.चि द्र.य च्य छै ।

१ सत. मुख. अवतार धार मो.ह अमुक दैत्य मार
भव.सागरस कर म्य पार पननी०

२ चारिरस मंज़ पांच दोह इन. त. गछनं दित म्य छोह
युथ न. अस्थिर. ज्ञान सार पननी०

३ नश.स.य मंज़ बुद्ध न'शित युन गछुन गछयं म.शित
कर नावुम सत् विचार पननी०

४ ध्यान शम् दम् धर्म दान तप जप ह्यथ योग ज्ञान
कर दया केंछा म्य यार पननी०

५ मूर्ख.बोज़ सू.ति रात दोह छिम समेम.ति पाप. कोह
शोरस.य ज़न गंडत. नार पननी०

६ इयतनै वो.ञ म्योन आर वुछत. म्योनुय ठग. कार
अनुग्रहकिय लदत. द्यार पननि०

७ आसि यो.दवै गाट. खार क.नोन इयस न. हार
दिम ज्ञानुक गाट.जार पननि०

८ छुस ब. मदुक खान.दार सा'यं छिम गर्ज़कि म्य यार
कर.नाव निष्काम. कार पनिन०

९ छुस ऋणान हुंद कर्जदार मत. थावतं पत. लार
लो.चरावतं कर्म भार पननि०

१० नाव छुय संसार. सार भव.सरस दिम म्य तार
पत. नितम शोभिदार पननि०

११ त्रा'वित गोम लो.कचार यावन् ग्रोस ग्रंधकार
रछ बुडिस छुस नाबकार पननि०

प्यव म्य कर्मुक कुल छ'नित चो.ल म्य चित्त बुलबुल वुछित
हाव नो.न योगुक बहार पननि०

१३ खो.ट छु म्योनुय व्यवहार त्रावनस ग्रत छुम न. वार
थव म्य निर्मल निर्विकार पननि०

१४ 'कृष्ण' करनाव सत विचार थो.द छु चोनुय मोक्ष द्वार
ज़न नभस कुन रेह् म्य खार पननि०



(५५)

संकट कट ग्रथ रठ दयालै।
चट् सोन माया ज़ाल॥

१ वो.लमुत छुम ग्रमर ग्रकालै भ्रम. काल. सर्पन नाल
मो.कलाव चलनं काल.त्रि ज़ालै चट्०

२ ताप रुस्त तर. फो.जि संगरमालै खसनस छुम बो.ड बाल
निष्बुद्ध वृद्ध छुस दिम कल छालै चट्०

३ शक्ति पात सू.तिभिक्षुकस कृपालै दात. बन. छुस कंगाल
ज़ीठिस मज़िलस वात कमि हालै चट्०

४ अख अ'छि नाठा करत श्याम लालै अशि सु.ति भ.रिथय छि लाल
ना'लि छुनहोह भक्ति भाव मु.क्त मालै चट०

५ नेर.हा मंज़ घरिके जजालै टोठ छुम अन्न धन माल
तत मंज़ थावत त्याग. ख्यालै चट०

६ हाव. का'चाह देह. भ्रमचिय चालै का'लि मा मुख हावि काल
सूक्ष्म स्थूल म्योन रछ त्याग. संभालै चट०

७ अन्नजल असि सान भोग इत. सालै भरनाव अनुग्रह थाल
आत्मा तृप्ती दिम बो.छि क.च चालै चट०

८ असि कर्म. हीनन दीन. दयाल काम क्रोध लोभ मद गाल
दुख हार गगनस खार पातालै चट०

९ का'त्याह बलवीर समयिकि हालै स.ह आ'सित गयि शाल
राज़न नाव प्यव खरि दज़ालै चट०

१० पुन्यवान थव शांतियि व्रत पालै स्यो द कर हो.ल कपाल
नत. कर्म. लेखा क्यथ. पा'ठि डालै चट०

११ या'र ह्यु सब्ज़ कर मृत. हर्द कालै पशु भाव.चि लशि ज़ाल
मो.क्त बनाव त्राव अषजे चालै चट०

१२ प्रेम.चि जमुना व'छ नाल. नालै जन छुस माला माल
तन नाव गोपियि ह्यथ गोपालै चट०

१४ ज्ञान मुख हाव त्राव मलालै म्य म. बनाव गो.फ शाल
स्फूर्तीयि सीमिञि म'शराव छालै चट०

१४ फीर्य फीर्य क्रया वाति ब्रज बंगालै ह्यथ काशी नैपाल
मुख हाव पननि देश. प्यठ बंगालैं चट॰

१५ प्रवृ'च़ मज़ निष्कल. कल वालै निवृ'च़ नश. दित डाल
'कृष्णास' मोक्ष मस चाव प्याल. प्यालै चट॰



(५६)

अज़ सा'ञ विनती सत्गुर साधय., कुनिय नादै बोज़ ।

१ रातस गं'ज़र्यम नभ.चे तारय
कृष्ण. च़ंद्र. इत प्रारै कूत
श्याम. रूप. सुबह फो.ल इन डलि वादै कुनिय॰

२ विज्ञान. रव. चूरिमि पद्म पादै
चि़त्त बबूर सोन व्यूर ह्यन द्राव
गीत ग्यवि चानि सत्संग. संवादै कुनिय॰

३ मायातीत अंत रस्ति अनादै
कुस अखा चा'निस अन्तस वोल
हे अगम अपार. आद्यकि आदै कुनिय॰

४ मंज़ चावि माया सागर. उत्पत्त
छिय गछ़ान ब्रह्मांड बुद्बुद वत्
अवतार कारण देव अगाधै कुनिय॰

५ चित्त अवलक चो.ल को.त पक. प्यादै
स्यज़ि वति को.छि क्यत रुन पकनाव
छुस पथर प्योमुत करुम इस्तादै कुनिय०

६ उन्मत्त भूता छुय ज़गत गोमुत
तथ मंज़ प्योमुत छुय ब. अनज़ान
सु विचारस वात. चानि प्रसादै कुनिय०

७ पानै सोरुय छुक उपदावन
कल. गिलनावन बु.ति छुस कांह
पो.त ह्यत. हथि भ्रमके अपराधै कुनिय०

८ मेघ, वर्ष. रछत. व्यवहार.चि त्रटि मंज़
गहस्त गठि मंज़ नो.न हाव गाश
अमृत चाव प्रेम. शब्द. अह्लादै कुनिय०

९ म्याज़ि भक्ति भावनायि हुंदि प्रह्लादै
सर्व आत्मा भाव सम दृष्ट प्राव
सुख दुख सम ज़ान मंज़ कम ज़्यादै कुनिय०

१० बुद्धि योग. होश. गछि, ज़ीव. भाव मशानुय
वशानुय अद. चलि दो.न आलमन
इथि मशान.कि नत. याद.कि यादै कुनिय०

११ अनुग्रह. चानि सू.ति भोग ब्रोंठ. इयतन
'कृष्णास' प्ययतन भोग.नि तिम
एक. रस. ह्यस दिस ताल. किस्वादै कुनिय०

छुक मोक्ष दाता पान· च़.य केवल सतक विचार दिम।
यी गछि़ आसुन ती ग्य दिम योगुक ज्ञानुक सार दिम॥

१ सन्मुख इतं सोरुय नितम ह्यु तमुत यि छुय फीरित ह्यतम
भक्ती दितम भक्ती दितम भक्ती हुंदुय दरबार दिम०

२ मस्ती होशस ह्यत मंगय मत· नच़्नावतं दित बंगय
भक़्ती कोंगय जामय रंगय सुय रंग·नुक विस्तार दिम०

३ मोह किस ज़िनिस दज़ुन स्वभाव च य ज्ञान· रूपी अग्न हाव
भक्ती हंज़य रेह प्रज़लाव अज्ञान· शोरस नार दिम०

४ ममतायि लंका ज़ालतम भावुक विभीषण पालतं
श्रीराम· मोह मद गालतं यथ भवसरस तार दिम०

५ भक्ती त· मुक़्ती शं मि च्यय मन क्याज़ि तत प्यठ लोभि़ज़य
भक्ती दितम भक्ती दितम भक्ती ग्य बारम्बार दिम०

६ छुक भेद रुस्त शिव कृष्ण राम आसन क'रित प्यठ परम· दाम
प्रारान छुसै च्यय निश इनस जल्द य बो·ज़्य ओंकार दिम०

७ मिथ्या पदार्थ क्या मंगय तिम भोगि बो·ज़्य आसै टंगय
शांत गछ़. अद सू·ति सत् संगय इछि़. भख्चि हुंद आचार दिम०

८ वा'सा गयम मिथ्या बनन क्रय करन· रुस्त छा केंह बनन
छुस लोभ· फल पेहनस अनन बो·ज़्य ग्रट·चिय अनवार दिम०

९ करुणावतारस च्यय सो·रित तारुम ग्य तारस थप क'रित
पारस बनावुम श'स्त· रस नारस क'रित गुलज़ार दिम०

१० छुय क्या ग्यय चारुन छो.त क्रहुन छुम मज़ प्रत भोगस च हुन
छुम अरसरव रुस्तुय बिहुन शुमरित ग्यय इन्द्रिय द्वार दिम०

११ काया छय ग्या'त्रि द्वारिका च.य छुक 'कृष्ण' परमात्मा
मंगन सुदामा छुस भिक्षा सर्व ऐश्वरी यकबार दिम०



(५८)

राधे श्याम हरि कृष्ण अरे प्रभु गोपाल ।
गोपीनाथ मक्खन चोर मदन मोहन लाल ।।

१ मेरा मन है जमुना जी वृत्तियां गोप ग्वाल
वह है प्रेम अमृत रूपी जल से माला माल
उसमें नहाओ खेल बयाओ बालकपन की चाल गोपी०

२ देह भ्रमरूपी शेर को है मद से आंखें लाल
उसको पकडो खेंचो बांधो मारो उतारो खाल
इस सिंह आसन के ऊपर अपना आसन डाल गोपी०

३ हम तुम पर अर्पन करते हैं तन मन अन्न धन माल
सब प्राणों से तुम प्यारा हो न्यारा हो अकाल
हमको मोह से मद भ्रम से दुख से गम से टाल गोपी०

४ क्या करे हमको मथुरा काशी गोकुल ब्रज नैपाल
साडी चित्त नगरी में बसिया तुम हो दीन दयाल
भगतों का तुम पालन वाला तीनों जगत का पाल गोपी०

५ हम गृहस्थ में फँस गये हैं काटो माया जाल
फकत तुम्हारा आसरा है देख हमारा हाल
कृष्ण को शुभ दर्शन देवो लेवो अपने नाल गोपी०



(५१)

वाक्य

प्राण· स्मरणीय स्व० श्री टिककाक जी ॥

(१)

इन्द्रिय द्वार ज़ानुन ज़ा'नित सुज्ञान
विज्ञान मोनुत प्रकृत लय ।
ज़ा'नी ज़ान परज़ान परमात्म.य
तव. ज़ानन सपनक देव तन्मय ॥

(२)

वनखय कैंह वन छो.पि हुंदि मुखय
चोज़खय कैंह, पोंज़ त्रोवरित कन
इच्छखय पूर्ण हृदय सुखय
कर्म कर कैंह ब'नित निश्चल मन ॥

(३)

कैंच.व वो.नुय वुछुन कैंछ़ाह
वुछव.न्यव कैंच.व कैंछ़ाह न. ।
साक्षी चैतन परमार्थ बोधस
कारण कुनि कैंह रेंछ़ाह न ॥

कँच़व मोनुय कँह क्या वुछ़नुय
वुछव न्यव वुछुन कँचव मोन।
कँह कँह कँच़व अनुसंधोनुथ
कँच़व बाह्य ज़ा'न ज़ा'न प्रज़ोन॥

(५)

युसुय बाह्य स्फारस प्रावे
अन्तर्मुख सुय उलसावे।
सन्मुख भावै सुय शिव-मुख हावे
एकाकी शक्त दो'यि मुख- छुय॥

(६)

पोज़ प'ज़राव पज़ि पो. ज़निश- अनुभाव
प'ज़ि ज्यायिव पज्युक रुछ़ भाव।
पचनूय पालुन अपुज़ गालुन
अपुज़ भ्रम- पोज़ ब्रह्म- स्वभाव

(७)

पज्यव कनव इमव बूज़ुव पो.ज़
पज़रुक निनय पोज़ तत्दान।
क्षण क्षण सत अमि किञ नित्य स्य'ज़रुक
रज़नी दिने शो.भरित मन

(८)

प'ज़िस प्यठ यस यछ़ पछ़. आसिय
पज़ि पुछ़ि, राव-रि न्य'न्दर त- नेह।
पो ज़ बोज़न रस- मस च्ययि ख्वा'सिय
पज़ि विना भास्य- न- तस कुनि कँह॥

(६)

भय. निशि रछि रव ज़न गाह छटे
छटे मज़य ज़्येठे गाश ।
भैरव भक्तयन रछि मंज त्रटे
छटि गटि प्रकटावि स्वप्रकाश ॥



(६०)

ज़ाक नन्द. गोरिनि अक. नन्दनै ।
आक ज़गि कास.नि मोह. अँधकार ॥

१ यादव कुलके कुल दीप - कै
लोल. चानी शोलवन. आव संसार
व.ल. सोन अज़ छै पोश. पूज्ये आक०

२ लो.लकि मंज़ले लो.लि लो.लि करहै
मो.लि ह्यमहत छिम न. मुखत त. द्वार
मुक्त गछ़हा चानि शुभ. दर्शनै आक०

३ ज़्यो.न चोन ज़गि मंज सिर्यि उदये
नत. जन ज़गि मंज प्राण आधार
लगहाय नावस रघु नन्दनै आक०

साक्षात्कार चोनुय अवतार.य
चार. ह्योन भव.सर. लगिहं तार
'परमानन्दने' कृष्ण. गन्धरै आक०

(६१)

कस क्या छ ज़ेनुन यमि ससा'री ।
सा'रिय गयि हा'र्य हा'रिये ॥

१ को.त गयि बब न' मा'जि भा'य बंध त. या'री
अक अ'किस तिमन. कांसि कांसि प्रारिये
ता'र ल'जिन. तस यस यलि वा'च़ वा'री सा'रिय०

२ यमि देह. पुछ़ि क'र म्य जान निसा'री
बायिन प्यठ खा'र्य बा'रिये
कुनि विज़ि दज़ि पत. चित़ायि ना'री सा'रिय०

३ कंचन गुर्य 'स्ति रथ सवा'री
कंह न्यथ.ननि त. नन वा'रिये
वुछि वुछि बुछि इम काल. शहमा'री सा'रिय०

४ नाम. रूप. जंगलस कर्म. कुलि बा'री
विगि विगि गयि उजा'रिये
उत्पन्न भ्यो.न म्यो.न उत्पात सा'री रिय०

५ वासनायि ब्योल ब्ययि न'वि नोव खारी
भो.वि भो.वि बारंबा'रिये
व'वि व'वि लोनुन हरद. त. हा'री सा'रिय०

६ ज़गत अरहटस देह तोल. वा'री
कर्म. रज़न.य चा'र्य चा'रिये
छ़ि लट. लट छक पोश सा'यो सा'री सा'रिय०

७ मनुष्य मोर प्रा'वित देव हितका.री
यथ मंज़ सर्व आधि का'रिये
गछि न रावरुन छु दुर्लभ त. दुश्वा'री सा'रिय०

८ छ़्यन. गोमुत पान परम. सुख. धा'री
मटि ह्यथ कर्म दुख भा'रिये
मोह. भ्रम. राज़. आ'सित बेचा'री सा'रिय०

९ व्ययि कोच़ मो.कलन य'मि अँधका'री
सत् सिर्यिकि चमका'रिये
चलनस न्याय बलनस बेमा'री सा'रिय०

१० योद कां'सि मुच़रन बरज्न ता'री
अनुग्रह अनुभव धा'रिये
चारनस त. खारनस लगि विचा'री सा'रिय०

११ भक्ति श्रवणन बोजि कन धार्ये' धा'री
प्रेम नेत्रव अ.ष तार्य ता'रिये
साधन गुरुन लग्य पादन पा'री सा'रिय०

१२ वण स तत्व उपदेश उपका'री
करनस पारं पा'रिये
वे इख्तियार द बनि बा इख्तिया'री सा'रिय०

१३ "लक्ष्मण" परम आनन्द चोपा'री
साक्षी छु साक्षात् का'रिये
पानै पानस करि उद्धा'री सा'रिय०

(६२)

कामि यम. भय चोन प्रेयम त. लो लो ।
ज्यो, न मरुन त. युन गछुन छु भ्रम त. लो ली ।

१ नित्य नियम. युस जि करनस लगि भक्ति चा'ञ
मन तुरगस. ह्ययकि र'टित वगि भक्ति चा'ञ
पय सहजुक दियि रगि रगि भक्ति चा'ञ
अनुभव भी.वि अनुग्रह अगम त. लो लो ज्यो न०

२ पत. लारनस अष्ट. स्यज़ स्यो.ध वुछ्यक न. ज़ांह
असि सार्यन.य सु गोमुत प्रो.द वुछ्यक न. ज़ांह
तस विन युस छु सायिन.य थो.द वछ्यक न. ज़ांह
शांत एकांत प्रावि शम दम त. लो लो ज्यो.न०

३ केंह ति रोजिन. ज़ानुन न अज़ानुन तस
स्वाद. अस्वाद. निशि केंछाह स्यो.न न. नुन तस
केंह खटनस लायक त. नो.न वनुन तस
सुख दुख क्या अ'थि दी.पुक सम त. लो लो ज़्यो.न०

४ दिज़ि देहस नज़ि पज़ि अमृत फल
दिस प्रथक तै प्रथम.य दपुस मृत फल
कान नेरि क्या निर्णय कानय फल
मो.क्त. पलज़्या ता'र्यज़्यस न त्रम त. लो लो ज़्यो.न०

५ गाल हन हन कालुन त्रास म'शराव
ज़ाल मर. मर. सोर वस्वास म'शराव
वर्ण. आश्रम कृत त. सन्यास म'शराव
बोध पनुनय छु सूद सोऽहं त. लो लो ज़्यों.न०

६ वेद पुराण शास्त्र य'च प'र्य प'र्य
कर्म क'र्यज़्यन. अभिमान. स'च क'र्य क'र्य
मश न युस बुज़ बूज़ि बूज़ि य'च सोर्य सोर्य
ता'र छुन. तस तार. तारि ओम् त. लो लो ज़्यो.न०

७ य'लि तेलिय अ'दरिमि लोलुक स्रेह
त्यलि मेलिय पानस ह्यु व लूक. स्रेह
खेलि अन्तर् बहिर् बुक. बुक स्रेह
छुन. परवाय गेलि आलम त. लो लो ज़्यो.न०

८ कथ. करनस त. मरणस छुन. हिशर
मानि बोज़नस म परनस छुन । हिशर
ध्यान सो.रनस त. शरणस छुन. हिशर
च़मि तस युस बनि छय्य. च़मि त. लो लो ज़्यो.न०

९ 'परमानन्द'' परम. आनन्द प्रा'वित
प्रावि नो.व नो.व सांग नोव जंद. प्रा'वित
नावि तरि अथ. छोजरुक चन्द. प्रा'वित
रुजिज़्यन. कुनि नजि़ दिजि़ तम त. लो लो ज़्यो.न०



(६३)

हे निरंजन कष्ट भंजन भक्त रंजन हे दयाल ।
ज्ञान कुय लाग अ'छि म्य अंजन अज्ञान कुय पोह म्य गाल ।।

१ भवसरै फो·टमुतुय छुस मोह मायायि वो·ल म्य नाल
छुस न· ज्ञानान बोठ ख'सित वोन्य अथ॰ रोट करतम दयाल॰

२ सत असत् विचार छुम न काम· य'न्दिलि छिम पतै
असत·चि ह'ाँ'कल म्य चटतम हावतं सतचिय वथ·य॰

३ काम क्रोधन लोभ मोहन छुस ब· को·रमुत ज़ेरबार
भवसागर दुख घर॰ मंज़ अथ· रो·ट करतम दयाल॰

४ दीन वत्सल रछ पद्यन तल आनन्दुक अमृत म्य चाव
यव· किन्य शांती म्य बनिहे वैर· भावस गछि अभाव



(६४)

ज़न्मस इथ यति कँह छुन'· लारुन।
धारणायि धारुन गोविंद गो॥

१ अल फाल अथि ह्यथ खेत संभालुन
नित्य नियम· स्मरणि वायुन ह्यू
धैर्य·चि यट·फोरि दत॰ फुटरावुन धारणायि॰

२ युस करि स्वमन· दारुन त· प्रारुन
ती छुस लारुन संसारस
तव· खो·त· रुत छुय परउपकारुन धरणायि॰

३ धन· द्यार अथे इथ म'शरावुन
कर्म·चि वति प्यठ धर्मस ह्यू
य'ति नो प्रोनुय फो·त छुय लारुन धारणायि॰

४ दांद-ह्वर न्य'न्दरे सुलि वुज़नावुन
कल करनावुन सोऽहं सो
"लल द्यद" गुरु ह्यत स्वरूप वुछनावुन धारणायि॰

ओं

श्री शारिका लीला-लहरी

(षष्ट - तरंग)

(६५)

ललवान सिरि ह्क ज़ेरि ज़ेरि ह्यारि बो.न
छम वज़ान ज़ीर बम तार

ह्यसक्य मयखान. मस य'लि ब. चोवनस
भोवनम सिरि असरार

आलव तोरै गोक द'रियाव दाम. चोक
शौकन को.रुक मिलचार

सतवय आकाश सतवय पाताल
तल प्यठ दित कुनुय ठान

गाह गट. गाश गाह प्रकाश नूरान
यक्सान सोरि समान

रंग. रंग. बेरंग सूरत सो. मूरत
न'ञ द्रायि दर बाज़ार

गगनयि पवनयि नागनयि भागनयि
सत नयि ब्ययि नवद्वार

सुय हज़ार दास्तान बोलान नयि
मो.लवान ह्यथ खरीदार

पननुय ह्योन व्यय पननुय बाज़ार
पानै ग्राक त. सौदागार

हरद. सोंत. कुन्नरस वोंत कुनि लो.ममस न.
दरद. नयि फयूर शेहजार

सत परद. चटिथ.य हूर द्रायि वनवान
पोशन कंरिक तूमार

ग्रक लंजि सो.दरस दरवाज खुल. गयि
अनुग्रह व्यतुक अंबार

कंद पुरी ज़ून. डवि शश त. रव सांविथ
नांवित अंदरिमि तों दर प्राण

गटि मंज़ "भास्कर" सास भावनांवित
सुय प्रावि शांत आकार



(६६)

सुन्दरो मो.न. संदल गरय. हो हो करै श्याम. सुन्दरै ।

१ गोपिय प्रारान गोकुलै वेरि चाव्यि फेरान निर्मलै
खेलव त. मेलव अमरै हो०

२ जसोधा वुछतोन भाग्यवान टोठेय यस इम ज़ संतान
वलभद्र ब. व्यथि कृष्ण. गंदरै हो०

३ अंतरे पलंग पांरावयो पांटिय करछ वथ.रावयो
अंज़.लि दर्शन मो क्त. हो जरै हो०

४ गलि गलि दो.ध बो चावथो फलि फलि नाबंद ख्यावथ
बादाम कंद चंद हो भरै हो

५ आसान छुक केलास कोह भासान छुक यति रात त. दोह
हरमुख. क्यय गंगा धरै हो०

६ ना'लि माल. खा'लि कनवा'ली रंग. रंग. जाम ज़रका'री
शीतल स्वभाव पीतांबरै हो०



(६७)

करुम म्य हे प्रभो ! मंगल वरुम चरणार्बिन्दन तल ॥

१ शरण आसै ब. दयि नावस च. टोठ्योक शरणय भावस
ग'डित छुस भक्ती हुंद अंज़ल वरुम०

२ वुज़ान छुम चानि प्रेमुक स्नेह करुम अनुभव म्य नो.न अनुग्रह
गछ्यं युथ वासना निर्मल वरुम०

३ दिम्य शक्ति पातकुय प्रसाद वुछ.न छुस कोन. चानिय पाद
तवै छुस चित्त गोमुत चंचल वरुम०

४ छु चोनुय आसनुय सन्मुख छ.यनन दुख प्राव निर्भय सुख
म्य सो.य भक्ती गयम सुफल वरुम०

५ छो.च्र छुम ओसमुत कर्मुक यि ब्राह्मण ज़न्म छुम धर्मुक
तुलन प्रारब्ध छुस अनज़ल वरुम०

६ वुछ्स पुनर् आवृती कालन फसोवमुत वासना ज़ालन
म्य कास अविद्यायि हंज़ गांगल वरुम०

७ गछ्यं सत्ज्ञान त्युथ उपदुन इयम युथ दृष्टि मंज़ दो.न कुन
छ्, सोऽहं नाव युथ केवल वरुम०

८ म्य रोज़ुन ग'छि न रज तय तम बनुन तत् सत् गो.छ्स उत्तम
छ्सै स्वभाव. किनि शीतल वरुम०

९ दया हंज़ दृष्टि कुन केवल करुम अतर् बहिर् निर्मल
डलस मंज़ युथ ज़लस कंवल वरुम०

१० दितम विकार. अग़नुक बल दज़न कामादिक,कि जंगल
वुछ्न स्वप्रकाशचिय वुज़मल वरुम०

११ हे केशव.! केशव अर्पणै सदा निर्मल सुदर्शनै
म्य फो.लनाव द्वादशांत मंडल वरुम०



(६८)

भगवान. तमि काल. कर म्य अनुग्रह
य'मि काल. प्राणांत आसि म्य।

यानि अनुग्रह रुस्त ईश्वर कर्म न्याय कुस कासि म्य।

१ सा.र्ये त्रा'वित रो.ट म्य दामन चोन. कामन सिद्ध म्य कर
सा'य बंध संतान नारी इम छि अस्थिर छुख च. स्थिर
नाव चोन लयि लछ़ करोर.य दिम पनुन भक्ति भाव म्य०

२ बाल· भाव· किञ ग्युंद म्य हारण ग्राव· वोञ बो· कस करै
वक्ति सख्ती छुमन· कोंह· छुस तारि गोमुत शशदरै
छुम म्य तकसीर पानस·य चा'ञ नाम· स्मरण क'र न· म्य

३ कर्म फल किञ लोक·चारस रंग· रंग भूगिम विषाद
यावनस मुतवाल· सांपनुस काल· मय· रूदुम न· याद
बुज़रस मंज अंत कालुक छुम स्यठाह वसवास म्य०

४ राज़ होंज़ाह ज़ाल· लोगनस कठिनिय कर्मय फलन
ज़ांह क'रम न· राम स्मरण, साधु सेवन हरि भजन
लाभ अथि इथ रावरोवुम सुय खो·तुम अपराध म्य

५ अंतः करणन ज़न्म· ज़न्मन हुंद म्य सार्योमुत छु मल
आदि दैवक आदि भौतिकि आध्यात्मिक कर्म· फल
कर दया पनञिय प्रभो! विचा़र· मन शुज़रावत· म्य०

६ ईर· गोस भव सागरस मंज़ थैर· भाव रूदुम न· कैंह
गोपाल चा'ञिय छुम म्य आशा पान म्योन मटि छुय हा च्य
म्योन रुत क्रुत छुय च्थ रौशन थफ क'रित बो ठ खार म्य०

७ अंत समयस टा'ठि छि खोचान अक अ'किस पत कुन च़लान
पान·वा'ञ अक अ'किस वनान वुछत वुञि छुस शाह खसान
वुछत· भ्रम बा'ज़िगार यि संसार स्वेह तिमन रोज़ान न· कैंह०

८ हे प्रभो! बोज़तं म्य ज़ारी सर्व ख्वा'री कास्तम
वक्ति पोरी दस्त गीरी कर प्रभो! चा'ञ आश छुम
छुस पथर प्योमुत म्य थर· छुम करत· गम· मंज़ शाद म्य०

९ निर् अर्थ आत्मा को.रुम हाय वो.ञ ब. कोताह छुस पशन
पत. नार छुम. ओठ छंब आमुत त. चामुत छुस गशन
कर दया पननिय प्रभो ! छम चा'ञ वाराह आश म्य०

१० छुख क्या दया सागर करतम शरण बो आस न्यय
विष्णार्पण करत. म्यान्यन सा.र्यनय पापन च. क्षय
अत कालस हाव म्य दर्शन सर्व संकट कास म्य०



(६९)

१ भक्त वत्सल. मोनुक म्यानि मन.न.य ।
शक्ति नाथ. गडयो मन.नय माल ।।

२ बूज़ि बूज़ि श्रवणाय त. क'र्य क'र्य मनन.य
निधि ध्यासन ज्ञान. दीप प्रज़लाव
साक्षात्कार छुक शिव. रूप ननन.य शक्ति०

३ अधिकार द्युतमुत छुय सत ज़नन.य
मंज छिय अंद ह्यत माया जाल
निर्गुण. लगयो इथिन.य गुणन.य शक्ति०

४ भीषण. इम मुख च्यय कुन अन.न.य
तिमन.य आय मंगि काल य'चकाल
तिहं.ज़ि अ'छि नाटि मंज़ कल्पांत बननय शक्ति०

५ चित्त आकाश. हाव निथ मुख पननुय
छारनस लो.गमुत छुस ब. पाताल
ओन छुस खो.नवट. खोड छुस खनन.य शक्तिः

६ युथ छुक त. त्यथ छुक क्युथ छुक ननन.य
सुय जानि यस बनि युथ ह्य व हाल
वोन दित छु नोन वुछि वुछि ओन बनन.य शक्ति०

७ देह अभिमानुक कुल ह्ययि छन.नुय
तीव्र वैरागुक सूराह् वाल
शिव. रूप. ती बनि ई प'हि पनन.य शक्ति०

८ लोल. आलव अ'श फ्योर भा'न्स कनन.य
चान्यन गछि ना, तर छिम लाल
सुय मुखत बनिहस यत छि मुखत वन.नय शक्ति०

९ पज़ि भाव. पान प्रमाण नाव पननुय
शाह पूर वर्ताव अथि ह्यत माल
मज़ बाज़रस वान लो.द निर्धनन.य शक्ति०

१० ह्यलि ह्यलि लावि लावि मावि भावि गो.निन.य
कुज़ र.कि खल. फल. व'छ मुखत. हाल
गाटस गाट. प्यव ह.रिरस छु छो.नन.य शक्ति०

११ नियम.च्यन ना'र्यज़्यन यम.कयन यन.न.य
समदृष्ट. जल फ्युर माला माल
निष्काम. कर्म. भूमि कल्पवृक्ष बनन.य शक्ति०

१२ योग. अग्न. विन छुस ज्ञान. अन्न रन.नय
योगेश्वर. छुय मूर्ख. मुँद साल
अन इच्छा करतम अनुग्रह पन;नुय शक्ति०

१३ दय. धन. प्राप्त प्रत कांसि बन.न.य
वान. रोस्त कर्म हीन छुस कंगाल
वडि भगवान. लदतं बान. पन.नु.य शक्ति०

१४ गंड. गंड वुनि छम आम्यन पन.न.य
वर दिम इन्द्र. चन्द्र. छक दयाल
दो.गनाव उल्लंघित छक त्यन गुण.न.य शक्ति०

१५ साध. छम इच्छा कुमा'री नन.न.य
स्य'ज़ साज़ ग'र सूज़ित संभाल
को.रणास सं'जिवरिकिय वर्तन.न.य शक्ति०

१६ शक्तिपात सू.ति भक्ति भाव. न्यथ ननिनय
भक्त कर मीना वाभ हिमाल
ताह खोल वर दिन.क्यन वर्दन.न.य शक्ति०

१७ थप क'र मनस चित्त आनन्द. घनन.य
तप गव सिद्ध अथि म'ठ जप माल
मस्त को.रनस इथिय प्रेम मस त्यन.न.य शक्ति०

१८ मीनायि हीमाल पर्वत बन.न.य
चक्रेश्वर छुय त्रि ज़गत पाल
सा'र्ये देव चक्रस फीर्ये प्रदक्षण.न.य शक्ति०

११ 'कृष्णस' हरमुख. मुख हाव पननुय
थपि खारतन प्यठ सोऽहं बाल
फीरि फीरि नीरि नीरि निरायि नयिन.य



(७०)

१ गोकुल हृदय स्योन तति चोन गूर्य वान।
चित्त विमर्श. दीप्तिमान. भगवानो ॥

२ वृ'च स्याञि गोपियि च्यय पत. लारान.
बन्सरी नाद. वाद. मतानो
न'शरित ह्यस त.होश म'शरित परत. पान चित्त०

३ अथ.वास च्यय सू.ति रास आस. खेलान
व्यास नारद ति तनि आसानो
दास. भाव. राधा कृष्ण. कृष्ण. ज़पान चित्त०

४ देवियि त. देवता सेव च्यय करान.
भवसर. तव. तार लभानो
ग्यवान रिवान ज़्यव छखन लोसान चित्त०

५ अस.व.नि कोसम मुख. चानि फो.लान
कुसतब नज़ि आसि शेहलानो
कौस्तुब त्र'टि त. माल. आसहोय पा'रान चित्त०

६ मायायि सू.तिन च. शायि आसान.
कायायि मज़ भिन्न न. रोज़ानो
सिर्यिकि आसन. छाया छय भासान. चित्त०

७ आकाश· मुख छुक आकाश आसान·
तत् सत् प्रकाश आसानो
देवन हंदि देव· प्रा'णियन हंदि प्राण चित्त०

८ युस युथ सो·रिय तस त्युथ छुक हावान·
मुख हाव म्य'ति श्री नाराणो
प्रारन·चि फुरसत छमन· रूज़म·च् दान· चित्त०

९ यस ई इच्छि, ता'य तिच्छ, छुय प्रावन·
कर्म· फल दात· च्यय वखनानो
ह्यो·न द्युन पननुय लक लकन बहान· चित्त०

१० क्षमा मूर्खस गाट·लि छि करान·
गाट· छुक न· तमि· सू·ति प्यवानो
पाठ पूज़ायि कनि मूर्खस ई जान· चित्त०

११ तगिहं त· ज़गि मंज़ आसहा ध्यकान·
वन कस कां·सि छु न· व्य'पानो
कुञर·चि कथ छय सञरस अपाण चित्त०

१२ सिर्यि चंद्रम· रोस्त· ज़ग छा प्रज़लान·
भगवान· रुस्त प्राण अप्रमाणो
लगहास नित्य नियम· रोजिहं सन्निधान· चित्त०

१३ दास छिय अ'सि चा'नि कोन छुक मानान·
ला'गिज़िन· पनन्यन बेगानो
शर·म छय ना छिय शरण ईवान· चित्त०

१४ वनन.चि जाय छमन. वनुन कव जान.
सनन. चियि कथ छय ब्याक आसानो
बनि यस ई पानस सु व'नित न. जालान. चित्त०

१५ बाकि बाकि वदनस ति वाक्य छिन फोरान.
साक्ष छुन अन हित आसानो
चाक गा'म जिगरस आक छिम न.बलान. चित्त०

१६ छसन. डेंशान बो देश' देश. छारान
प्रारान छसु छुम न ईवानो
प'दि लूसिम.ति व'दि व'दि चडि भरान. चित्त०

१७ अंत छुन. भगवत मायायि लासान.
आयायि तति कति छारानो
छारित त. गा'रित ल'भित त. रावान. चित्त०

१८ गिदनस रंग. रंग. टंग. छन. ईवान
मग. हाय ब.ति श्री नाराणो
ह'ग. ता'य मंग रोजतम संतुष्टान. चित्त०

१९ हे कृष्ण। पाप सा'नि चय छक डेंशान
शाप कास असि - अ'सि छि नादानो
क्षमा कर यव. पायस छि प्यवान. चित्त०

२० भगवन मायायि कांह छन. जानान.
तस त्युथ छ युस युथ छु मानानो
मान. अवमान रुस्त च.ति मान ब'ति मान. चित्त०

२१ युस न. जाव कांसि ता'य कांह लुसन ज़्यवान.
ज़ीव आन मा.नि यस छि जपानो
ज़ानि सु सोरुय न. ज़ानि तस कांछा़ न. चित्त॰

२२ ब्रह्मा ति छुन चो़र वेद ह्यत पोशान.
तुतनस यूत तस पजाना
शेष नाग सासि ज़्यवि सू.ति को.ल गछान. चित्त॰

२३ युस ज़ि यूत मंगि तस सुय त्यूत प्रावान.
दय नज़ि मनि कुनि आसानो
बु.य च्यय अर्पण त. च.य म्योन आसान. चित्त॰

२४ धन. ध्यार पत.व त्राविथ गछान.
भाग्यवान तिम इमन न आसानो
सन्तोष वृत्त दिम छिम तिम नव निधान चित्त॰

२५ सन्तोष. वृत्त दिम छिम नव निधान
तृप्त कर म्य सत् स्वरूप ज्ञानो
यथावत् युथ ब. आसहथ वुछान. चित्त॰

२६ 'परमानन्द' परम. आनन्द प्रावान.
सूरमुत हनि हनि अरमानो
राधा माता त. बब कृष्ण भगवान चित्त॰



(७१)

शुभ्र मुख हाव म्यति अमृत चावतं।
सत्गुरु हावतं गटि मंज़ गाश ॥

१ गो॰ड सत्गुरु सुंद ध्यान सो॰रनावतं
दम॰ दम॰ वद॰ च्यय कुन नम॰हा
रात दिन अक क्षण छ्यन मत थावतं सत्गुरु॰

२ जन्मस इथ कर्म खुर संभालतं
मत॰ दिपिरावतं साधन मंज़
मन चे कलि इन्द्रिय चूर पावतं सत्गुरु॰

३ दह शो॰मरा'वित मद हो॰स्त पावतं
काहन हावतं कुक्रिय वथ
सोऽहं शब्द॰ निशि भ्योन मत थावतं सत्गुरु॰

४ शिशरम नाग॰ सर॰ तन नावनावतं
मत॰ वुछ्त म्यानिस कुकर्मस कुन
मोहवे सिंधि म्य'ति अपोर तारतं सत्गुरु॰

५ क्षण॰ क्षण॰ पननुय ध्यान धारनावतं
सो॰र॰नावतं ती यी पज़िहे
कामदेव॰ श्याम सुन्दर॰ लट॰ मत॰ दावतं सत्गुरु॰

६ विश्वंभर॰ पननुय शुभ मुख हावतं
रोज़त तं॰ भावहा'य पननुय हाल
म'शरोवमुत नाव चित्तस पावतं सत्गुरु॰

७ वनमाल धा'रित दर्शन हावतं
हावतं पननुय प्रकाश रूप
दोह गंम लूसित मत॰ प्रारनावतं सत्गुरु॰

(७२)

१ शिव नाथस प्यठ सपज़.क स'तिये ।
श्री पारव. तिये भ'विनै जय ॥

२ पूजायि पोश लागय लव' ह'तिये
अ'किन गामि आसव.ज छक शिवा
रक्त बीज़ मा'रित छक पान. त'तिये श्री०

३ पोश सोंबरा'विम वो.ज़लि नीलि छ'तिये
पूज़ा करहय इष्ट देवीये
ज़ार. पार. वार बोज छिय आर.क'तिये श्री०

४ अमर नाथ कैलासकिस सूर. म'तिये
व'रनक त. क'रनक अर्ध शरीर
नित्य छक आसव.ज तस सू.ति सतिये श्री०

५ अष्ट. स्यज सू.ति छय व्रूँठि ता'य प'तिये
शिव शक्ति रूप. छक सर्व व्यापक
'कृष्णस' टोठ छक बोज़ान य'तिये श्री०



(७३)

प्रेम. पोश लाग शेरि तसं.ज़ि वेरि करवा'य रो.वये ।

१ होश बुल बुल प्राण पोशनूल ध्यान.कुल च़ाव फो.लनस
प्रारवुन रोज़ खबरि तसं.ज़े त्रेरि०

२ भाव बंबूर द्राव गोशस पोश. वागस चाव मंज़
करनि गूँ गूँ असज़ि वेरि०

३ स'मिवि स'खियव अस्त. अस्तै तमनि लागव भाव. पोश
यस नन्द लाल नाव प्यवये वेरि०

४ शशकिल प्रावक अद. चाव जाव अमृत द्राव नो.न
श्याम. सुन्दरन दाम. च्यवये वेरि०

५ आव सोंत ता'य छाव अछि पोश चाव बुलबुल बागन.य
त्राव मोह. जंद वंद. कुवये वेरि०

६ नो.न सु वुछत. जानावारय मो.क्त. हार.य आव हात
ज़ीव. डल. दित द्राव व'रिये वेरि०

७ ह्यछत. वार. करत. चार. पननुय ध्यान धारणायि धार ध्यान
ज्ञान प्राण मा छु मूर्ख. प्रवये वेरि०



(७४)

पाद. कमलन तल मा'जि न्य'ति वरतम् ।
अनुग्रह करतम मा'जि अनुग्रह करतम् ।।

१ कष्ट दूर करतं संतुष्ट रोज़बम्
तालकस नाल ता'य फ'रियाद बोज़तम्
पाप शाप कास्तम संताप हरतम् अनु०

२ म्योन हाल पानस छुय ना रौशन
वे होशस म्य'ति अनतम होशन
तोपतं त. मनि मंज़ लोल. रस भरतम् अनु०

३ कन थव म्यान्यन आ'रत्यन नादन
आसय शरण बोज़तं फ'रियादन
सा'र छक च.य मा'ज़ि धारणायि धरतम् अनु०

४ भय दूर करतं य'मि संसारुक
मटि वोर वालतं खो.टि व्यवहारुक
तंग आस य'मि निशि वासना फिरतम् अनु०

५ चो.दहान भवनन माता च.य छक
दाता च.य छख त्राता च.य छक
रोग. ता'य शोक' निशि जल च.य म्य कडतम् अनु०

६ वदवुन बालुक मा'जि छुल प्रारान
थो.द तुलतं इत लारान लारान
दिलास. दित म्य ओ'श वुथरावतं अनु०

७ दीनस त. ह्वीणस सत छम चा'ञिय
आस्तं हृदयस मंज़ हे भवानी !
दासस त्रास ता'य वसवास हरतम् अनु०

८ संसार. दूरैतन ब.य रो'टमुत छस
दुख सागरस मंज़ ब.य फो.टमुत छस
खारतं आवलन. मत. म'शरावतम् अनु०

९ पाय म्योन च्यय रुस्त कांह करिन. माता
उपाय र'स्त्यन चय छुक त्राता
कास्तं अंधकार दास गंज़रावतम् अनु०

१० वील.जार मा'जि बोज़ चय नील कंठस
शील हर चं.य छुक आशा जा'न छुस
भक्ति माव पनुय म्य'ति पुशरावतम् अनु०



(७५)

गन्योमुत छुम मनस चोन भाव जगत् माता म्य दर्शन हाव।
म्य आमुत लोल. बानन छाव जगत् माता म्य दर्शन हाव।

१ ज़गत माता च. टोठान छुक भगत सन्तानन.य बेशक
ह्यवान युस लोल सू.ति चोन नाव जगत०

२ म्य वोल शानव प्यठै बोर.य म्य पुशरोव पान च्यय सोरुय
म्य केवल चोन छुम चिक. चाव जगत०

३ ब. छुस प'ज़ि किनि स्यठा नादान करान छुस पाप छुस अनज़ान
करुम माफ़ छय च्य माता नाव जगत०

४ प्रियम नगरस अंदर चामुत ब. चावे डेडि तस आमुत
प्रियम अमृत पनुन दो.ध चाव जगत०

५ त'मिस क्या गम य'मिस यावर च. आसक ताज दित वर सर
शत्रु सुदं पोरि कति तस दाव जगत०

६ वदान छुस चा'ञ वनेयम कल द'लिस तल मा'जि ह्यतं जल-२
म्य सतचे प्रेम. न्यंदरे साव ज़गत०

७ वनान छुस वील. ता'य ज़ा'री थो.कुस यूत काल प्रा'रि प्रा'री०
म्य लो.कचार गव वुजर वो.ञ आव ज़गत०

८ ज़गत माता म्य सतुष्ट रोज़ वनान ज़ा'री छुसै च.य बोज़
पन.ञ दयगत दयालु हाव ज़गत०

९ ब. छुस ह्यि गों.दि च्य किति सारान प्रेयम सान डेडि तल प्रारान
च. प्रेम कि भाव. ह्यि गों.दि छाव ज़गत०

१० छु 'बागवान' च्यय परन प्योमुत गडित गुलि च्यय शरण गोमुत
छु स्मरण चोन हर दम नाव ज़गत०



(७६)

द्रौपदी विलाप ॥ जय राधा कृष्ण ॥

श्लोकः– हा कृष्ण मनसि वासिन् क्वा'सि यादव नन्दन।
इमां अवस्थां संप्राप्तां अनाथां किं न रक्षसि॥
व लो श्याम. लालो ब. कोताह इ चालै
सभाये अंदर छिम कडान ज.म. नाल।

१ ल'जिस वो.परन मंज़ व'जिस क'मि ब. शापन
ग'जिस शर्मि दावै ल'जिस गिस ब. ज़ालै०

२ म्य वुञक्यन करान छुमन. कांछ़ा हिमायत
यि क्या ओस दयन ल्यूखमुत म्य कपालै।

३ च्य रुस्तुय रछयं कुस अबल छस ब. ना'री
च. रछतं त. वृछतं छसै कमि हालै।

४ प्य'यिय मा न्यंदर च्वय सदा छुक न. बोजान
ग'यि को.त दया वृञक्यनस हे दयालै।

५ च. छुक दीन बन्धु म' म'शराव दीनस
हृषाकेश. अशञे हरान छुसया चालै।

६ म्य वोञ रूज़मच छम न. कांमि ह.ञ आशा
तमन्ना म्य टाठि छुम त. रट.हत ब. नाल।

७ सभासद बनेम.ति छि मोनिक चित्र ज़न
दया छकन. वृञक्यन इबान हे दयालै।

८ दया सागरो कर दया "नील-कठस"
च. दिस पान. दर्शन यिस अन्त. कालै।



(७७)

जय जगदम्बे ॥

ओरुत प्रारान छुक बर तलै बलै दर्शन. सू.नि ।
घनेम. च मा'जि छम चा'ञ कलै बलै दर्शन. सू.ति ॥

१ संसारग म्य ग्युँदनम छलै मिलनोवनस म्य'चि सू.ति
अज्ञानन वो को.रनस नलै बलै०

२ मायायि कोरनं मन चं.चलै मस्त गोस लोभस सू.ति
मोहन आवरुस रो.टनस तलै बलै०

३ पापन ह.दि बारि छु अल.अलै चा'रिथ छुम र ज़े सू.ति
मंज़िलस किथ वात छुस निर्बलै बलै०

४ सो रुम न नाव चोन सुय छुम मलै छ्यो.नुस ब. इत गं छ सू ति
आवागमनच कास गांगलै बलै०

५ मन दर्पण म्य कर निर्मलै मल्युन छु गरदे सू.ति
दयायि हंज़ करतस सैकलै बलै०

६ व्या'पित सोरुय छक जल स्थलै भ्रम छुम अज्ञान. सू.ति
डुइ कास युथ भासि कुन केवलै बलै०

७ ज़जरयोमुत छुस बो कवलै फों.ल चानि अनुग्रह सू.ति
सरताज़ बो बन. दयायि ज़लै बलै०

८ मा'ज्य रटतं दामनस तलै खोचान छुस भय. सू.ति
प्रेमच न्यंद.र म्य पांव जल ज़लै बलै०

९ भक्ती दिम तिछ युथ नय डलै बनि चानि कृपायि सू.ति
अद म्य ज़न्म गछि सफलै बलै०

१० अशि ज़ल. गों.ड़ दित पाद बो छलै तिम रट. हृदयस सू.ति
लोल.सान करक बो मोर छलै बलै०

११ ,हंसा' आमुत छ्य बर तलै मगान आ'चंर सू.ति
मो.कलावतन य'मि मायायि छ्लै बलै०

(७५)

ग्रोस कस रूज़ित अदरी वैर   क'मि निय. प्राटित म्या'ञ पर. पहा'र
मुरलीधर. सु'द छुमा यी खैर   क'मि निय. प्राटित म्या'ञ पन.पहा'र

१ थो.कमुत सुदामा घर. यलि ग्रा'व नेत्रव त्रोवुन अ'शि द'रियाव
यति कुस राजा रोज़ान गैर   कमि०

२ कति छुम घर. बार यो.तको.त ग्रास फाकै वां'लिंजि गोम तलवास
गाम.च. कोत म्या'ञ तुलसी वार   कमि०

३ कति गयि पा'द. इम गुल त. गुलज़ार
ग्रांय कति योतनस मोक्त. फँवार

रंग. मंदोर्यन ल'ज़ ना ता'र   कमि०

४ ग्राय कर यो.त इम दास दा'सी शुयै म्या'नि गय मा.वन वा'सी
मायि ह च. सार्या द्रायि ना सा'र   कमि०

५ को.त गयि मा'सूम सुन्दर पोश लोल ग्राम वुछहक रोवुम होश
मूरान गुलि ग्रोस प्राटान दा'र   कमि०

६ ग्रोरुत सुदामा गव परैशान व्य'खच.य माया ग्रोस डेशान
द्रायस सुशीला बुथि वन हा'र   कमि०

---

(७६)

मेव. कनि मो.क्त. वो.थ च दन बागस
नागस प्यठ लो.ग हंस. दरबार।

जल. कनि अमृत नो.न द्राव नागस
बागस मंज़ चाव संत. अट.हार ।।
(हंस. दरबार परम. हंस. दरबार)

१ बुद्ध क्या वाति अथ रागस त. त्यागस
वरणि आव शक्तियि त्रिभुवन सार
तस रुस्त क्या छु ती भु पूजि लागस नागस०

२ त्युथ दशहार कर तिथिस.य प्रयागस
यथ दह इन्द्रिय छि दह अवतार
का'हिम द्वादशांतस पूज़ि लागस नागस०

३ नाम० रूप कल्पित ज़ोन ह्यथ रागस
अस्ति भाती प्रिये रूप पत् द्राव सार
शर्मन्दगी च़'जि मंद. वैरागस नागस०

४ प्रियम. कर्म. फलन·य यम. नियम द्रागस
प्राव.नावि अनुग्रह किय अंबार
तृप्तियि पंपोश फो.लि लल. त्रागस नागस०

५ होश. पोश फो.लि उद्योग. पोश. बागस
दास. भाव. किञ आस ख'दमतगार
'कृष्ण' सेवा कर आत्म. रूप. आगस नागस०

(८०)

प्राव कैवल्य हा केवलो योग चाने बनि आज़ादो ।
भोग. सुखा हा निष्कलो य'लि चलनं पाप.नि ला'दी ॥

१ चोन दूर्यर ह्यक कव ज़'रित कमि बलै ह्यक. च्यय निशि इथ
छुमन. करार गम चानि गलो योग०

२ गर्भ. नयन मंज़ फीरि फीरि वुछ म्य लो.कचार यौवन त.पीरि
बांड ब'नि ब'नि कम जाम वलो योग०

३ पय अज़ताम लोभुम न. चोनुय धर्म हीनस म्य ओस कर्म लोनुय
नठ छम वति निशि मा डलो योग०

४ मन दर्पण छुम म'ल. गोमुत मोहकुय मदिरा छम म्य चोमुत
ज्ञान. गंग जल मल कल. छलो योग०

५ नारायण कस गछ़ शरण छोटनं किथ. पा'ठि जन्म मरण
हे शरणागत वत्सलो ! योग०

६ य'च़ कोल चानि वते द्रासै बुजरुकुय व्य'यनै पासै
बुजरस त्रा'वित वो.ज म. चलो योग०

७ मन काफ़ूर अन. चानि वेरे रत्न ज्योति फिरवै शेरे
गाल मल 'ठाकुरस' निर्मलो योग०



(८१)

(गजल) —श्रीमती अरनी माल

१ दौरि दुनिया सोरि आख.र यार छांडुन पननुय
आव हर जा ज़ेरि ज़मीन नेरि तस नो.य य'मि खो.नुय
२ नूर डेंशुन छु न. आसान सूर मलुन ह्यु व पानस य।
रहबरस कुन पान गालुन वथ सु हाविय तस कुनुय॥



(८२)

(गज़ल)

ज़ानखै कर जान फिदा'ई यौर वफा'ई केंह छयनो॥

१ अच अन्दर लोल. भागस लाग आशक बुलबुलो
तति गछनै खलूति शा'ही योर०
२ यो दवै करक बादशा'ही तस ज़मीनस जाय छयो
तो.त छु वातुन तनहा'ई योर०
३ पाक तार.चि यलि तोलनं पाक छु पानै क्या ह.लुय
नरि ज़ंग अ'छि दिन गवा'ही योर०
४ नमरूदन दम दिचा'ई कान त'मि लय आस्मान
खून तोर. प्यव वर हवाई योर०
५ कारि बद छय रोय सिया'ही बार गो.ब छुय कोत तुलक
वुछत. तह.ज़य बारगा'ही योर०
६ 'उस्मानो' मंग पना'ही तति न बियन ज़सज़लो
तति अरशास थर. चा'ई योर०

(८३)

वुछित गत चा'ञ देवागत च्य विन दयि नो सोरै लो जो।
म्य अन्दर कर पनुन मन्दिर ब. च्यय पूजा करै लो लो॥

१ ब. चाञे वेरि सों.बरावय अ'छिव किञ रंग. रूपुक रस
कनव किञ शब्द. साजुक मस अ'नित खास्यन भरै लो लो॰

२ म्य कुन वु़छि वुछि असान छुक दूरि रूज़ित आस्मानन मज़
गुपित छुक दास्तानन मज़ ब. दूर्यर नो ज़रै लो लो॰

३ फिज़ा त्रा'वित म्य ख निमति जिसि
ज़मीनस तल त. पूर.णि छिम
स्यठा देवार लूर.नि छिम च्य रुस्तुय क्या करै लो लो॰

४ ब. छुस पोंपूर च्य दीपस पत च़टित इम जाम करहै गत
दिहंनै जाम. च़टन चि वृत्त क्यो.मा ह्युव मा मरै लो लो॰

५ म्य निम पंपोश. पादन तल तिमन हुंद बों.बरा सूज़ित
कंडय़्न प्यठ छुस मरे रूज़ित ब. चाने आसरै लो लो॰

६ ज़मीनस जन्मकिस व'विम.ति अशिकि दुर्दान. कोंह भ'विम.ति
अ'छिन मज छि र'छ्रित थ'विम.ति तिमै खावे जरै लो लो॰

७ इमन जोयन अन्दर यो.दवय छ़ चाने सहज़ धर्मुक जल
बठय़्न हुंद छ़क सम्योमुत मल म्य चावुम आगरै लो लो॰

८ पनुन म्य तेज़.कुय आगुर इमन ज़च़न अन्दर भासुम
कुन्यर भा'वित दुई कासुम गटे हंदि गाशरै लो लो॰

(८४)

अज़ वाति बूज़ुम मोल म्योन कोसम वतन वथरावसा'य ॥

१ लछ़ जन डवित संताप ताप अतः करण घर. नावसय
ठाकुर कुठिस मज रंग. रुत प्रग आदरुक पा'रावसय।

२ सों.त्ररित र'सिलि र.ति कर्मं. फल मस खा'सि भ'र्य भ'र्य थावसय
अशि गंग वाज़े खोर छलस रुमालि गुम. वुथरावसय।

३ तिम पाद हृदयस प्यठ रटित दुख दा'दि जन्म.कि भावसय
कोछ़ि क्यत रछुन लोक.चारकुय स्मृत चित्तस अद पावसय।

४ भावुक घन्यर लोलुक सन्यर वां'लिज़ मुचरित हावसय
नो.व नागरादस सूँ तिज़न स्नेह मायि हुद वुजनावसय।

५ गुरु भावनाये सू.ति शेर नो.मरित खो.रन तल त्रावसय।
घर. बा'र ता'य आसुन बसुन सोरुय पनुन पुशरावसय।

६ गट. प'छ़ि चन्द्र जन नाम. रूप अख अख कला व्य'गलावसै
सिर्यस अन्दर लय प्रावि जून सार्यय बनन त्यछ़ मावसय।



(८५)

स्मरण पन.न दिचा'यनम प्रेमुक निशान. व्य'सिये।
र'छ़रुन तो.गुम न. रीवुम ओसुम न. बान. व्य'सिये ॥

१ पत कालि छुम न द्य़ तमुत सो॰न मोखत दान व्य'सिये
अ'नि सारि क्या लभक वोन्य तिम मोखत दान व्य'सिये॰

२ वां'लिंजि मंज़ थवुन गोछ हावुन थ'वुम अथस प्यठ
राह कस छु कोर म्य पानस नुकसान पान॰ व्य'सिये॰

३ हावुन छ़ राव रावुन चावुक समर छ॰ खा'मी
थावान ज़ि छाव॰ बापत बानन छि ठान व्य'सिये॰

४ यन सुय निशान रोवुम तन म'च़ गयस ब॰ फलवाल
न्युन ह्योन न कँह ति फेरान छस वान॰ वान॰ व्य'सिये॰

उत्तर

५ व्यसरुन पनुन वनस क्या वननस ति वार मा छम
बुथ मा सम्यस दोहस थिय्थ गछ कोत शवान व्य'सिये॰

६ यछ पछ म॰ हार व्याखा ह्यत यूर्य वाति कांछाह
तस छा क'मी निशानन भ'र्य भर्य खज़ान॰ व्य'सिये॰

७ डोलान कोहन वनन मंज़ शोलान छि गुलशनन मंज़
ज़ोतान छि तारकन मंज़ क'त्याह निशान॰ व्य'सिये॰

८ व्य'सरित ड'लित पथर प्यथ बुथ क्या दिमव त'मिस निशि
पुत फेरनुक पकान छा युत ह्यु व बहान॰ व्य'सिये॰

९ मानव ज़ि अ'सि ह्यमव पोत छोर्या तसुँद मुहब्बत
पैवंद यि आदनुक छा शुर्ये कारखान व्य'सिये॰

१० दिल फुटिम.त्यन छु तोषन य'च़ गरि'मत्यन छु रोशन
गछ़ व'र्यमत्यन सुदामन— प्रिछ़ गा'यबान व्य'सिये०

११ अंदि प'खि तति छु आसान बोद. ओर सूर दासुन
बोज़ान छु माय ला'गित लोलकि तरान. व्य'सिये०



(८६)

तरवुन छु करनोव हक दित वनन
कांह मा. स. त'रिव अपोर।
पत. तार बन्यव न. आलुस म. क'रिव
उद्यम. त'रिव अपोर॥

१ करनावि तार छुन. घरि घरि बनन
वुञक्यन छय बेला जान
निश्तुर त. यि सात म. राव.र.विव
वज़िव त. त. त'रिव अपोर पत०

२ घरवेठ सोंबरान छिव मार. गा'मति
छ़य'नित थ'कित पेमति
घर. रोज़ि य'तिय कथ क्युत भ'रिव
छ़'रिय त'रिव अपोर पत०

३ अन अन वननस कन मो था'विव
गो.बरा'विव क्याज़ि पान
गो.ब ओर ह्यत वति प्यठ क्या क'रिव
लो.तिय त'रिव अपोर पत०

४ चूर युस क'रिव सु पानस फ'रिव
कर्मुक छु अटल नियम
सो.न रुफ छा'रित गोड. क'र्य म. ग'रिव
संतोष त'रिव अपोर पत०

५. प्रछ. गा'र य'लि लगि बर दित ख्यनस
इसबात सु.य गयि चूर
थरि थरि मा हरद. थ.र ज़न ह'रिव
औधार्य त'रिव अपोर

६ प'ज़ि पान होव ऱ्षि रस्त्यन ऋषण
पशन ति भ'रक प्रय
अथ ऋषि धर्मस प्य.ठ तोहि ति ध'रिव
सम दृष्टि त'रिव अपोर पत०

७ ऱ्ति भाव था'विव ऱ्तिय ब'निव
ऱ्तिय क'रिव कार
यी य'ति क'रिव तिय तति सो.रिव
सत्कर्म. त'रिव अपोर पत०

८ अपारि बदलै विद्या छय पर.ज
योग.च छय तत बोल चाल
प'रिवै य'ति श्री गीता प'रिव
योगै त'रिव अपोर पत०

९ अपारि ब्रह्मय छु छारान त. गारान
य'च छुस ज़ि तुहुंद लोल
य'ति क्या छु प्रावुन ज़ि वियोग ज़'रिव
पज़ि प्रेम त'रिव अपोर पत०

१०   वाव तस क्या करि तारक मन्त्र
यस आसि दय. सुँद नाव
पानै छु करना'वि चिन्ता म. म'रिव
ड'रिथ म. त'रिव अपोर   पत०



(८७)

गज़ल

यार. संदे दादि दोदमुत दिल बहारस क्या करे।
वाव योदवै सोंत कालुक आसि नारस क्या करे।।

१ कां'सि प्रारान दारि प्यठ युस वांसि हारे धारि ओ'श
आवशारुक तस हवस क्या शालमारस क्या करे

२ कां'सि पलज़ुन कांसि हुँद ज़ेवर बनुन यस योछ न. ला'नि
सो.न बना'वितन संगि पारस तस विचारस क्या करे०

३ होश ड'जमच् जोश व'खमच् पोश. गहनस तोषि क्या
रोश यस चोल ओश त्रा'वित गोश्वारस क्या करे०

४ कालिदासस तालि क'व्र पत कलि वोनमुत गाटल्यव
तालि यन युस लोग ज़ालस गाटजारस क्या करे०

५ लोल मस ज़ाल्यं त. गाल्यम यस बुडित मा'लूस गव
भीम नशके त्राविहे मस चोन खुमारस क्या करे०

६ रंग हा'वित अम दिवान ओस कहवचन खोट स्योन सो न
अ'मि कोड्डुस अदर्युम खोचर नोन लोल नारस क्या करे०

७ डालि निम. क्या बाल यारस ओर त. शुद्ध पाथ्य न. दिल
छ्यनि मतिस यत दागदारस नाबकारस क्या करे०

८ ब्रोठ छुय चो.र क्रूठ मंज़िल गा'फिलो बस कर म. चे'र
यस म'तिस माघस जिगर शेहल्यव न. हारस क्या करे०



कोरनम यी टा'ठि त. क्याह वनस।
थोवनम न. बाकय केंहति मारनस॥

सोय रुम छम मनकिस आईनस।
यि कोर न. कां'सि ति दुश्मनस॥

सो.रुम सु लाल० रुख मनस।
ज़लाव लो.ग कज़लि वनस॥

फोरुम सु नार खरमनस।
लो.गुस न. केंहति ज्येठनस॥

दिलस ह्यो.तुन त. जिगर तत्यव।
शोर गव ज़ि नार हा॥

—मा० ज़िंदा कौल

ॐ नमो भवान्यै ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(सप्तम - तरंग)

(८८)

धर्मुक धैर कोर खति हा'रवनस.य
रंग. रंग. पोशन क'र्य अंबार।
मादलि तुलसिय़ि आरवलि व्यनसय ॥
नारायणस.य छु जय जय कार ॥

१ घरि द्राय भावनायि सू.ति दर्शनस.य
चाय पर्बत राज़नुय दरबार—
आय चक्रेश्वरस.य प्रदक्षणस.य नारा०

२ समेरु पर्बत. कोह ख'ति सो नस.य
सिद्ध पोठ सार्यव.य प्रोव अधिकार
नाश गव दारिद्रस अ'किस क्षणस.य नारा०

३ जय जय छु गोकुलस त. बिंद्राबनस.य
जय जय छु नोन द्राव कृष्ण अवतार
जय जय छु गोपियन त. गोवर्धनस.य नारा०

४ जय जय छु वसुदेवनिस च्य'ड ह्यनस.य
जय जय छु देवकियि यमि चोल बार
जय जय छु दुख. अंद बंद रोज़नस.य नारा०

५ जय जय छु बलभद्रस त॰ अर्जुनस॰य
भकितयि मंज़ इम द्राय सरदार
जय जय छु तत विश्वरूप दर्शनस॰य नारा॰

६ जय जय छु दशरथ राज़निस गुणस॰य
माजि कौशल्यायि बार बार
जय जय छु अजोद्यायि रामजुव ज्यनस॰य नारा॰

७ जय जय छु राम चन्द्रस त॰ लछमणस॰य
सीता मातायि जय जय कार
जय जय छु भरतस त॰ शत्रुघ्नस॰य नारा॰

८ जय जय छु वाव॰ लोकपाल नन्दनस॰य
य'मि गोंड लचि सू.ति लंकायि नार
जय जय छु सुग्रीवस विभीषणस॰य नारा॰

९ मन म्योन पत॰ लारि मधुसूदनस॰य
काम॰ क्रोध॰ कंसस दिवनावि मार
होश कति हारि मारि मोह॰ रावणस॰य नारा॰

१० कोह आव ब्रोंठ दोह वोत प्यठ खनस॰य
तार दियि करि पचालस पार
सतचिय स्थित थावि शुद्ध चित्त मनस॰य नारा॰

११ वन वुन सोन गव मंज़ त्रिभुवनस॰य
थवनुय तस प्यठ ग्यवनुय सार
मानवुन छु भक्त राज़स त॰ निर्धनस॰य नारा॰

१२ हीत. अकि मायातीत निर्गुणस.य
महामायायि सू.ति विवाकार
श्वेत पीत वर्ण सोर.न टोठ रातस दिनस.य नारा०

१३ वनवुन यि केंछाह ओस प्रत वनस.य
ती वातनोव गोपियव गुपकार
वार. आव शंकराचार उलसनस.य नारा०

१४ अनुग्रह चोन मंज़ अन्नस.य धन सय
वांसि ताञ पोशनाव होश व्यबहार
कृष्णस' तोषि मज पोश वर्षणस.य नारा०

---

(८६)

१ कमल चरण रटोय शरण च्य आये
प्रियम भरव त. ध्याना सोरव करव नमः शिवाय

स्तुता परन परन शरण च्य आये
प्रियम भरव त. ध्याना सोरव करव नमः शिवाय

२ चय छुक भक्तन वरण शरण च्य आये
चय छुक दुखन हरण शरण च्य आये
चयय मोक्ष दातस मोक्षय मंगव करव०

३ बड्यव योगव सू.ति सत् संगव करव०
उत्तम पदव त. सुन्दर भंगव करव०

अधर्मियन स.तिय जंगव करव०
संसार. समन्दरस तरव करव०
अज़ ताम तिय वोन महा जनव करव०
तम्युक निर्णय अ'सि क्या वनव करव०
'कृष्णन' सत सोर त. सत बोज़ कनव करव०
मोकलाव रटि मायि पनन्यव घरव करव०



(१०)

सन्यास बे परवाय मस्तानै, पा'यै हो लगै म्यानि जानानै

१ कावन अथि इम श्यछि सोज़ानै पोज़ बोज़ डंजि छ्मन.रोज़ान दिल
रोज़खै त. बोज़क लोल अफसानै ज्यूठ नो वनै म्यानि जानानै०

२ लूख क्याज़ि कन तलके दुर्दानै ओरुक योर म्योन वननै हाल
व्याक मा छ् व्य'य सुंद दोद ज़ानानै पान. हो वनै म्यानि जाननै०

३ मोहन च्यति छिया मन मोंहानै चानि खोत. सुंदराति उपद्यव कांह
च्य'ति छुयना सु वील. ज़ार बोज़ानै आर इयतो म्यानि जानानै०

४ अं'दरिमि राग अग्न धूव्य प्रज़लानै लोक़ त्याग छ्य न्यबर मोलमुतसूर
ओबर तल यि वुज़मल छ्य द्रेंठ ईवानै सूर गोसाञ्जि म्यानि ज़ानानै०

५ यं'बरज़ल चश्मन रूद अरमानै शबनम रोस्त कुनि वुछहोक ज़ांह
सों'बलस कस छि तिम पाद पूज़ानै पूज़ हो करै म्यानि जानानै०

६ वरि घरि सोंरहक देव सुंद द्यानै क्याज़ि रटहक गोफ त. बाल
मन म्योन कं यंज़िहे खल्वत खान चूरि हो थवत म्यानि जानानै०

७ दूरि रूज़ित दोल. लोयथ कानै छिह लं'गित ब्ययि ब्यूठ ज़खमन क्रोर
यति योर स्योध कर तीरि मिजगानै सीन. धारयो म्यानि जानानै०

८ रग रूप प्रतअंग छुक खोबानै देवता स्वभावस वातिहिय न. कांह
हंग संग नय आसहक रोशानै आशु तोष हा म्यानि जानानै०

९ मन क्याज़ि योर कुन छुय न.नरमानै कोमल तनि चा'ञि पश्मीन पोट
फर्यशर मोख छिन नख.ठहरानै नाज़ुक बदन म्यानि जानान०

१० यूत नय च़ आसहक शेर नोमरानै कद चोंन ओस खास स्वर्गच थ'र
पोत छायि शूभिहिय सर्वि बोस्तानै अभिमान रस्ति म्यानि जानानै०

११ शानन प्यठ केश छुय परेशानै तालि प्यठ गंडित जट. सर्पाकार
काल बंबूर गण ज़न छ़ नां'पानै अंबर मोय म्यानि जानानै०

१२ कोंग तेहजव छ़ बोड प्रोवमुत शानै कार्तिक मास पूर्ण चन्द्रस मज़
निथ वुछवनि सु खाल केंह भाग्यवानै पूर्ण चन्द्रम म्यानि जानानै०

१३ ज़ाविलि बोजलि वुठ कुनि २ आनै असनचि त्रायियलि कुमलानछिय
दा'न पोश बर्गन छि मंद छ्रावानै वुठ कुमलाव म्यानि जानानै०

१४ मा'सूम अथ खोर माज़ि रुस्त पानै परम राग रंग कनि प्रज़लान छिय
नम चा'नि छा अक़ीक़ किन मिरजानै आदनयासुंदर म्यानि जानानै०

१५ यथ हुस्नस न. ज़ेवरुक एहसान खा'लिस सोनस मूल मायि त क्या
युथ रूप छा भूषणस ओरुज़माने साद शाहज़ाद म्यानि जानानै॰

१६ इम चानि खतुखाल याद पावाने दूरिरुक दोद ताम म'शरान छुस
दोद बलि यलि वैद्य आसि वातान दा'दिस वात म्यानि जानानै॰

"स्व॰ मास्टर ज़िंदा कौल"

---

(६१)

१ दान मनसा'वित अथ धारनोवथस
अथ पत नित म'चरोवथस
य'च कोर.थम अवमान मदनो! ईछा स ज़ान

२ रस रस कमि ताम वति पकनोवथस
कुन ज़ोन वति प्यठ त्रोवथस
अनज़ान - सरिगरदान मा'र. मति। ईछा स ज़ान

३ मन वारि म्याञि आश पोश रुवनावित
संग दित बार. फोलनावित
पाने कोरथस फान मस्ताना। ईछा स ज़ान



(६२)

दिल फोलि दर्शन चाने सूरमति सर्फ गोसाञे
दिमयो गोड अशि वाञे सूरमति सर्फ गोसाञे

१ शिव छुक कैलास वा'सी शक्ती छय चा'ञ दां'सी
तति छय वज़ान शीन शाञे सूर०

२ जटि छुय च.'द्रम. लोमान हटि छुय वासुक शोभान
गौरी शंकर. साने सूर०

३ मृग. शाला छुक व लिथ.य पानस भस्मा म.लिथ.य
खुर कास असि डयक.लाने सूर०

४ जटि छुक गंगा त्रावान पापव निश. मोकलावान
यमराज़ भय चोन माने सूर०

५ छुय त्रिशूल काल. संहा'री पान. छुक कल्याण का'री
चानि क्रोध ज़ग मा फाने सूर०

६ नन्दकेश्वर चोन वाहन पूर्ण कर मन. कामन
कुस न चोन महिमा ज़ाने सूर०

७ रुद्र गण छिय चा'नि संगी सा'रिय चरसी बंगी
कामदेव दो.द च्.खि चाञे सूर०

८ आ'रित छिय आशि छ़ारान कोन.छुक मवसर तारान
प्रारान तन मा प्राने सूर०

९ मोलानाथ. सोन संकट आवागमनुक चय चठ
इत गछ़. रोज़ि बे माने सूर०

—श्री प्रेमनाथ जी साबनू 'प्रेमी'



(१३)

ओम् पर.वुन हंस ताजदार, कमि वन.कुय जानावार।

१ ज़ाल. लगिना सुय अनका माल. गंडहस छुम तमन्ना
नाल. रटहन सुय बाल यार कमि०

२ कोछ़ ब. दिमयो हा कावो गछ़त वनतम दियि दर्शन
वछि वां लिंजि मावस असरार कमि०

३ पोशनूलव पोर यि हंसो कुकिल़ बोलान गोविंद.गो
हर मुख.छा किन.हरिद्वार कमि०

४ प्यठ गोशन र'टनम जाय का'लि पोशन प्ययि मो हाय
वोंद हंदयस त. रोश च़लियार कमि०

५ खत ब. लेखस हटिके रत. ज़ा'विलि खत सू.ति शो'मिदार
इयि नत. छुस ब. दा'वादार कमि०

६ बा'लि अनतने दूरि मा का'लि का'लि जिगरस गा'म परगा'लि
ना'लि जामे तस छि ज़रकार कमि०

७ हंस पख.वय पत. लारोस आरि आरोस डंडक वन
दोह दरि लगि सोरि लोक चार. कमि०

८ दरद. सोज़क संतूर साज़ सासि परद. ग्यवि कस्तूर राग
ब.ति तिय तिय वनान कोल.तार कमि०

९ 'भास्कर' चेन त सासन मंज़ रुम रुम खास छु भासा'नी
ललवुन छुम सु सिरि असरार कमि०

---

(१४).

व्यल ता'य मादल व्यन. गुलाब पंपोश. दस्ता'य।
पूज़ायि लागस परम. शिवस त. शिवनाथरस्ता'य॥

१ जटा मुकटा. प्यठ गंगा वसान छुस ता'य
देवियि त. देवता विष्णु ब्रह्मा छिस दस्तबस्ता'य
भक्ति भावुक जय जयकार आ'सिन तस ना'य पू०

२ दया सागर. लोल विज़यायि कोरनस मस्ता'य
हा पोश मते होश ह'लिम.ति थव ध्यान ह्यस ता'य
असार संसार छ'लरावान सोर रोज़ि कस ता'य पू०

३ पंपोश पादव सू.ति इतम अस्ता'य अस्ता'य
चरणन ब वंदै ज़्व जान ह्यथ वांलिज वस ता'य
राग चानि सू.तिन पोश वुज्यम नाग.रादस ता.य पू०

४ पा'यं पा'यं लगोय ना शिव शंकर शिव नावस ता'य
दर्शन चान्युक छुम य'च् लोल सू.ति हावस ता'य
टोठतम सदाशिव जगत ईश्वर छुस बेकस ता'य पू०

५ अमर नाथस नीलकंठस कल. वंदस ता'य
विचार सू तिन "कृष्णस" प्यठ आर इयिनस ता'य
यछि पछि सू तिन गछि अर्पण शिव भावस ता'य पू०

कीर्तन :- जयति शिवा शिव. जय जय जानकी राम।
जय जय लक्ष्मीनारायण जय जय राधे श्याम ॥



(१५)

(गज़ल)

शरीर ज़ोलन अ'मि मदनवारन. बे आरस आर नो छुये ॥

१ प्राण ज़ोलन पवन.कि नारन शशि कलि हुंद म्य नार छुये
समाह कोरन म्य ओंकारन बे०

२ ल.यि लोसं म्य तोस चारन रुम चा'यंमस म्य मोयि मोये
दम.किय पन ज़न छस खारन बे०

३ बडि मनसर.यार छस ब.गारन माह ईश्वर अथ मंज़ छुये
काम क्रोध लोभ मोह छुस ब. थारन बे०

४ वुछत मार कू ति क'यं अहंकारन नार गोंडनक हा मोयि मोये
फान कोरनस अनफासकि नारन बे०

५ बदन ज़ोलनं अ'मि मदन वारन हये व्य'सि यार इयम नाये
विचार् मनसर• गारहोन विचारन बे०

६ शास्त्र वल छसया गारन ना'लि 'रा'ह्मिस' शास्त्र छ्ये
ताज बरसर शास्त्र दीन दारन बे०



(१६)

सतज़न बन मन कर कैलास•य बस्तियि मंज़ वनवास•य रोज़॥

१ चित्त• किञ भस्म मल वल अतलास•य
साधु प्रकृच् सन्यास•य रोज़
उँों शिव शंभू कर अभ्यास•य बस्तियि०

२ विषय त्यागुक धर माघ मास•य
सत्संगकुय उपवास•य कर
आत्म तीर्थ मन नाव मोह•मस कास•य बस्तियि०

३ पान प्रज़ना'वित पानय म• आस•य
सर्व संकल्पन ग्रास•य कर
तल• प्यठ• त्रा'वित त्राव तलवास•य बस्तियि०

४ महामाया ह्यत रछुन दास•य
शिवनाथ हृदयावास•य छुय
तोति तस नाव द्राव साधु सन्यास•य बस्तियि०

५ श्री कृष्ण महाराजन ख्यूल रास.य
गोपियि शुराह सास.य ह्यथ
बाल. ब्रह्मचा'री तोति नाव द्रास.य बस्तियि०

६ 'कृष्ण' अं'दरिमि त्याग. मल सूर सास.य
न्य'बरिमि राग. उल्लास.य कर
शुकदेवस गव यी व'नित व्यास.य बस्तियि०



(६७)

कर सन. कुनुय बनि सू.ति तस जानानस.य जानानस.य ।
तन लोल. नारन ज़ा'जनम अनजानस.य अनज़ानस.य ।

१ मय्रकिस दूकानस व'थि छि बर पैमान भ'र्य भ'र्य क्या ज़बर
चन रुस्त ब. छुस आ'सित अंदर खुमखानस.य खुमखानस य०

२ निश आ'सिथ.य दूर्यर म्य प्योम रूसिस न. पय नाफुक नन्योग
छांडान सुगंध दिल तारि गोम नादानस.य नादानस.य०

३ गोस नज़ि पयस मो.क़ंजारकिस कोचस ब. गोस व्यवहारकिस
सों.बरनि लो.गुस मसारकिस सामानस.य सामानस.य०

४ देव आ'सिथय ज़ीव नाव प्योम सो.न आ'सिथय म्यज़ि त्राम गोम
मो.क्तस म्य फोतय खाम गोम दुरदानस.य दुरदानस.य०

५ अद्वैत अमृत कुय सु मस चन. सू.ति ब. बनहा एक रस
दु.य रोज़िहे कति म्य त. तस कुनि आनस.य कुनि आनस.य०

६ य'च़ काल कुय तस निश जुदा   गोमुत ब. छुस मेलि ना सना
तस रुस्त म्य आराम ज़रा कर   देवानस.य देवानस.य०

७ यत दा'दिस.य गछि़ वैद्य वनुन   तस बावहा बो सिर पनुन
नत.राज़ि दिल क्या छुम वनुन   बेगानस.य बेगानस.य०

८ 'नीलकंठ' प्रेम.चि वति च.नेर   वातक मुकामस पुत म. फेर
प्रावक च़. अद.कें ह लगिन चे़र   निर्वाणस.य निर्वाणस.य०



(६८)

अम छु संसार शम त. जीवो   दम म. कर कांह खा'लिये।
करत. शम दम सो.रत.सोऽहं   आसि गछ़नुय का'लिये ॥

१ इछ़ छय शोभान ओवरस.य मज़   वुज़मला हाय त्युथ छु आय
आयि गयि कू.ति काल हारन   शीन ज़न तिम ग.लिये०

२ बाज़िगर सं.ज़य यि बा'ज़्याह   सोर संसार ज़ानतन
मय च्य चोमुत मोहकुय छुय—छय च्य कमिचिय चा'लिये०

३ रूदि ना य'ति राज़ ता'य रक   रूदि ना य'ति शूरवीर
अथ मूरान ख्यत त. अफसोस   कु.त गयि धन. वालिये०

४ 'नीलकंठो' बन शरण सत्गुरु   च़रणन मन. किञ
युन त. गछ़नुय तस छु माया   दाम यस गव ना'लिये०



(९९)

इतना तो कर ले स्वामी जब प्राण तन से निकलें।
गोविंद नाम लेकर फिर प्राण तन से निकलें॥

१ श्री गंगा जी का तट हो या जमुना जी का बट हो
और सांवरा निकट हो मेरे०

२ श्री बिंदराबन का स्थल हो मेरे मुख में तुलसी दल हो
विष्णु चरण का जल हो मेरे०

३ सांवरा सन्मुख खडा हो बंसी का स्वर भरा हो
तिरछा चरण धरा हो मेरे०

४ सिर सोहना मुकट हो मुखडे पै काली लट हो
यह ही ध्यान मेरे घट हो मेरे०

५ निकलें जो प्राण मुख से तेरा नाम बोलूं सुख से
बच जाऊँ घोर दुख से मेरे०

६ मुझ 'दास' की इस अरज़ी—को मानना न फरज़ी
आगे है तेरी मरजी मेरे०

---

(१००)

ध्यान का वैदा करके सजन तूने
ध्यान लगाना छोड दिया।

१ सीस तले पग ऊपर थे
जब माल के पेट में लेट रहा
तब ईश्वर से इकरार किया
तूने भूल के वह सब तोड दिया ध्यान०

२ देख लुभाय गया जग की
रचना सब सुन्दर साज बनी
उस सरजनहार की सार नहीं
तूने भोगन में मन जोड दिया ध्यान०

३ घर काजन बींच फसाय रहा
दिन रात न मौत की याद रही
उमरा सब बीतत जाय चली
तूने क्यों प्रभु से मुख मोड दिया ध्यान०

४ बार ही बार फिरा जग भीतर
जीवन की सब जूनन में
'ब्रह्मानन्द' भजा भगवंत नहीं
भव सागर में सिर बोड दिया ध्यान०

१०१)

कीर्तन—देवी च़रण चा'निय भक्त सो.रन छिय ।
इमोय शरण करोय नमो नमस्ते ॥

१ संकट हरण कवच चा'निय परन छिय
कमल चरण चा'निय भक्त'न वरन छिय
प्रेयम भरन यत सव सरस तरन छिय इमोय०

२ यति पूर्य त्रावक तत जायि नेत्र जरन छिय
मंगल रूपी ध्यानस चा'निस सो.रन छिय
'कृष्णस' सू.ति ह्यत स्तुता चा'न्य परन छिय इमोय०



(१०२)

त्रिज़गत नाथ. परम. आनन्दै सत्चित् रूप. च्यय पान वंदै।

१ कुस व'नित ह्यकि महिमां चोनुय क'मि चोनुय प्रभाव ज़ोनुय
हे निरञ्जन. हे निद्वन्दै सत्०

२ चानि आसर. हरि ह्रै हे सत्य रूप. च्यय पत ब. मरै
छुस ब. लज्जित स्यठा शरमंदै सत्०

३ कुस च्य'य ह्यु'व बनि परम. मित्र बंध बांधव सा'रिय छि शत्रुय
निर्मल. निष्कल. गोविंदै सत्०

४ सव.सरस लो.भुम न. तार.य गोलुम च्यय पत लो.कचार.य
मोकलावतम मोह.नि फंदै सत्०

५ ऋषि बालुक छुस छमन. चाहत मनस.य म्य ग'छम धन संपत
छम म्य चाह ज्ञानन.च ज्ञान. इंदै सत्०

६ संपदा आपदा ज्ञान. र'स्तिस आपदा संपदा ज्ञान. स'स्तिस
ज्ञान. हीलस वखनान अंधै सत्०

७ रचना ज़गत.च स्वप्न माया सत बननिय पनञी छय छाया
ज्ञान निश मत थवतं म्य अंदै सत०

८ 'ठाकुरस' चा'न्य अभेद भक्ती यलि बन्यस सो.य गयि मुक्ती
नत. क्या करि खा'ली चंदै सत०

---

(१०३)

गा'फिल स. बन पायस प्यतो. तस जानि जानस वो.न दितो।

१ दो.र च्यय पनुन सो.र ज़ोनथुय रज़ि गो.य सरुफ पोज़ मोनथुय
सत्संग गंगि अमृत च्यतो तस०

२ दिल साफ थावतो आईनै मल गालतस तुलतस च. खय
छो़टि पा'ठिय कथ मटि च.य ह्यतो तस०

३ दिलन.य सहल कोर मुश्किलय ब्रे ठयोक त. ज़ेठयोय मंज़िलय
स्यज़ि वति पकनस प्यठ ह्रतो तस०

४ यलि च.य दिलसय संकल करक चलनय च्य शाक त्रावक च. फक
शुद्ध सात्वकी भोजन ख्यतो तस०

५ ज़ान जानि जान छुय पान पनुन छुयनो च्य कैंह छां'डित अनुन
सत्संग द्वार वार. पय ह्यतो तस०

६ वननुय छु कैंह बननुय छु कैंह 'ठाकुर' पान पननुय छु कैंह
गुरु मुख सर कर वर दितो तस०

(१०४)

१ हे प्रभु ! अज्ञान का'सित योग दिम विज्ञान दिम ।
अंग हीनस दिम म्य काया मुर्द जिस्मस जान दिम ॥

२ शक्ति र'स्तिस दिम म्य शक्ती भक्ति र'स्तिस दिम म्य भक्ती
एक भक्तिस दो.शर्व दिम ई म्य धर्मस दान दिम०

३ पकनस क्युत ओन ल. रोन छुस भक्ति क्युत छुस न्यथ नोन
ज्ञान वाल्यन योगियन क्युत गिंदनुक सामान दिम०

४ हीन छुस विद्यायि अंदर दीन छुस श्रद्धायि मंज़
हान छम प्रत कुनि कर्म.चि सत् ज़नन मज़ मान दिम हे०

५ ओंठ कुन पानस अ'नित श्रवण करुम व्याख्यान दिम
लूक युथ मोहित गछन त्युथ मुखस निर्वाण दिम हे०

६ क्रम गछ़न अद ईर. खस हिवि होशकुय तूफान दिम
गोफ शा'ल खोच़न म्य पान सहसुंद ह्युव त्राण दिम हे०

७ जय जय श्री रामच.न्द्रस त'मि सुंदुय वर दान दिम
क्षय गछ्यम इन्द्रिय शुत्रन वीर धर्मुक कान दिम हे०

८ यसि युक्तियि बनि मुक्ती तमिकुय विज्ञान दिम
दित मनोजय वासना क्षय सत स्वरूपचि ज्ञान दिम हे०

९ सर्व मंगल परम सुख दिम हर्ष दिम कल्यान दिम
अंत कालस मज़ ख्यालस सत् स्वरूपुक ध्यान दिम हे०

१० बाग दिम बंगाल दिम हमाम दिम डालान दिम
रायि रोस्तुय इम बनन निम ज़ायि आलीशान दिम हे०

११ ज़ीवतुक भ्रम चलन बापत पानसय ख्य.व पान दिम
ध्यान 'कृष्णस योग ह्यत दिम भोग अमि यमि सान दिम हे०



(१०५)

१ बनुन आज़ाद ज़ि यक निर्णय
करुन गछि पा'नि पानस जय ।
क'रित भक्ती च्य मुक्ती छय
करुन गछि पा'नि पानस जय ॥

२ ब हर सो वुछ तसुन्दुय रूप
विवेक.य नोम प्रज़लाव धूप
त'मिस रुस्त वुछ छय मा कांह शय करुन०

३ चित्त.य नोम शीश युस छुय चोन
विद्वानव ज्ञान बानव ज़ोन
करुन निर्मल त. कासुस खय करुन०

४ चित्तक गुर वार पकनावुन
द'छिनि खोव.यं म. वुछिनावुन
विचार.कि कोच त्रावुस हय करुन०

५ सिलाह सामान युद्ध वेष गंड
दिवान गछ सर्व विषयन दंड
सो गयि निष्काम कर्म.चि क्रय करुन०

६ प्रमाद आलस्य पथर त्रा'वित
उद्योग.कि जाम. पा'रा'वित
च. कर संकल्प चू'स तय करुन०

७ रटुन मोह. राज दिस गर्दन
छु दुर्योधन च. बन अर्जन
ननक बहादुर बनक निर्भय करुन०

८ श'त्रु गालित च. मित्रन मंज़
क'रि संयोग. हर्षुक संज़
लभक विश्राम स्यद्ध गव तय करुन०

९ छु वथरित फश त हर्षुक प्रय
ख'सित संयोग न्य'न्दरे शोंग
भ'रित खास्यन छु आनन्द मय करुन०

१० यि जानुन छुय स्यठाह मुश्किल
यि गव संयोगकुय मंज़िल
बि गव निर्वाण थानुक पय करुन०

११ रटुन मन बुद्ध चित्तस कुन गछ
ब. सोऽहं सो अंदर कुन अछ
अचे.तस सू.ति सुचे.त करन करुन०

१२ सो.रुन सत् चित्त आनन्दय
लभक त्यलि परम. आनन्दय
स्व आनन्द तत अंदर गछ़ि लय करुन०

१३ अगर ज्ञानक च़. पननुय पान
करुस अर्पण च़. मन बुद्ध प्राण
पन.व्न मर पा'नि पानस प्रय करुन०

१४ ह्तो 'विष्णो' म० गछ दिलगीर
पूर्व कर्मुंक यि छुय तासीर
पन व्न कर बुद्ध टोठिय दय करुन०



(१०६)

१ देहकिस द्वारस ल.यि त्रो पराव.ञि
मोह. निशि चि़त्त छुय प्रावुन हो।
वावस मंज़बाग चोंग संदारुन
सत् विचा़रुन सोऽहं सो ॥ सत्०

२ मनचै पञ्चिवयि गाश ह्यत. सारुन
शशिकलि प्रभात फो.लवुन ह्यव
द्वादशांत मंज़ चि़त्त सिर्यि गछ़ि खारुन सत्०

३ गुरु शब्द निरोध किञ. हां'गिञि हारुन
यछ़ि वोंद पछ़ि सिंधि सावुन ह्यव
पुक्तकार मोक्त समंदर गछ़ि खारन सत्०

४ प्राणस त० पवनस मन मिलनावुन
ध्यान धारणायि किञ धारुन ह्यव
तमि योग ज्योति रूप ब्रह्म विस्तारुन सत्०

५ ज़ाग्रत ज़ा'वित स्वप्न प्रकटावुन
सुषुप्ति मंज़ सुख़ प्रावुन ह्यु़व
तुर्यायि सू.ति चित्त लयि संदारुन सत०

६ पच्चव रुस्न मद होस्त विस्तार तारुन
शमशेरि धारि ह्यठ लारुन ह्यु़व
पख उपज़ावित वुफि गछि तारुन सत०

७ दम ह्यथ दमनस मन. सोतुर गारुन
देह मायायि ज़ाम कारुन ह्यु़व
ज्ञान सोन. चित्त कहवचि गछि़ खारुन सत०

८ 'चन्द्रो' अन्दरी वाव ह्यत तारुन
ओबर तल सिर्यि प्रकटावुन ह्यु़व
अंधकार च़लित गटि गाश ह्यक सारुन सत०

---

(१०७)

१ जाफ.र पोशस छु लक्ष्मी अंग ता'य।
सो.न सुन्द रंग ता'य पूज़ायि लाग॥

२ सत्य देव लक्ष्मी नारायण ता'य
सर्व देव ह्यथ कासिय दुर्गत
पोश पूज़ कर तस अन्न धन मंग ता'य सोन०

३ मादलि हियि पंपोशन ढेर कर
तुलसी छा'वि छा'वि शेरतस पान
सुन्दर ड्यकसय ट्योक लाग कोंग ता'य सोन०

४ सुय दियि मोक्ष आय अन्न धन द्यार
धारणा ध्यान ज्ञान योग विचार
वसनस नाव खसनस क्युत ग्रंग ता'य सोन०

५ सत्पुरुषन निश ह्यछ करुन भक्ति भाव
तिहुन्दन पादन तल पान त्राव
पान थव दास भाव तिम बरहंग ता'य सोन०

६ साध छुय पूज़नीय तसुन्दुय मन छु सेर
मुश्का ह्यत चरण कमलन नेर
आ'ल मान राधा कृष्ण जान रोंग ता'य सोन०

७ यूत ज़ानक त्यूत पूज़ि मंज़ लीन बन
भक्ति भावस मंज़ आधीन बन
सुय छुय रुत सात सो.य रच् ज़ंग ता'य सोन०

८ सोय दया मंगतस भक्ति भावस सान
योस कासिय रोग देह अभिमान
व्यवहारन छुक ओनमुत टंग ता'य सोन०

९ ज्ञान कुलिसय छिय शम दम लग ता'य
शान्ती मूल मोक्ष त्युहरुय छुस
ख्यत भक्ति भाव रस मंथय टंग ता'य सोन०

१० ब्रह्मांड पान ज़ान वार. सैरस नेर
मार्यनय तीर्थ यात्रायन फेर
ज़ोर. मुचराव चित्त तोरगस डंग ता'य सोन०

११ अज्ञान• गटि मंज प्रजलाव दीपय
शंकर 'कृष्ण' एक रूपय छुय
यी वनान साध संत क'रित सत्संग ता'य सोन॰



(१०८)

श्री परमानन्द जियनि 'शिवलग्न' मंज़ केंह श्लोक ॥

१ रस पूर्ण परम सदा शिवह । सत् चित्त आनन्द विज्ञान रवह ॥

२ दीन चा'नि नव निध अष्ट सिद्धह जीवन हृदि करुणा निधह
गलि गलि अमृत इमव च्यवह सत्॰

३ कुंभज मजना चा'न्य करह गागरि मंज़ इतम सा गरह
ज़्यव दिम तिछ़ युथ चानि गीत ग्यवह सत्॰

४ छय़्ग्मच् सो आशव पाशव सान आशो मटि छुय पान दपान
हे शिव ! थ'वमै म्य आशवै सत्॰

५ पानस पानै छ़ मेलनुय गिंढुना छ़ गिंढुन त• गेलनुय
सोन नेरि नार मंज़ गलि ज़ुवह सत्॰

६ देह दृष्ट गलि च़लि अभिमान अद बनि सत् स्वरूप ज्ञान
कृष्णस युथ जि मेलि उद्धवह सत्॰

७ युस इछ़ि सुय सुय तस इछ़े गछ़ि यस सुय सुय तस गछ़े
इछ़ि पछ़ि त'मिसय प्रारवह सत्॰

८ लोलय छु ओर योर मुलवनुय लोलय छु ओर योर ललवुनय
लोल सू.ति सुय लोल ललवह सत्०

९ कंह छुन लोल रुस्त आसवुन लोलय छु सार व्याध कासवुन
लोलके गाश गट कासवह सत्०

१० लोल बोज़ बोल वोज बोवनै लोलय छु चोदाह भवनय
शोलवुन छ लोरुय लोलवह् सत्०

११ लोल सू ति उलसन आयि ज़ग
लोल सू.ति छम भ'रित पय ता'य रग
लोल परमानन्द प्राववह सत्०

१२ 'परमानन्द' बोज़ दय गत वो.थ त्राव सा'र्य मत मो च़ मत
कथ बोज़ नत. क्या यि क्रव क्रवह सत्०



(१०१)

१ यस छु हटि वासुक तस छु जटि पोज ।
गो.सोज हा'य गो.सोज हा'य गो सोज हा य गो.सोज ।।

२ युस देव सर्व देवन हुंद छु आद
सुय वरि पाप हरि करि प्रसाद
यस देवस छि पंपोश हिव्य पाद
हर मुख बर तल लायोस नाद
पादव त'लि छ़स पकान सिध वोज गोसोज०

३ युस थ्यकनुय छु देवियन त· देवन
तस देवस छि सर्व देव सेवन
आत्म रूप आसवुन छु मंज़ जीवन
प्राण धा'रियन क्युत छु मंजीवन
सुय नंग नोन च्योन दियि गंग वोञ गोसोञ०

४ पूर्णायि सोस्ता छु नूर भ'रिथय
ब्रह्मांडन पालना करिथय
सुख मुख सू.ति छुय दुख ह'रिथय
वर-अभय सू.तिन छुय व'रिथय
य'मि सू.ति पानस न्युव सो.दि वोञ गोसोञ०

५ जन्मन हंज़ व्या'ध ज़ालवुन छुय
ज्यन मरणकि गुण गालवुन छुय
माजि मा'लि संदि खोत पालवुन छुय
साञि कर्म भूतरा'च् वालवुन छुय
आत्म बोधुक रूद शांतियि शोञ गोसोञ०

६ प्रेम मस चावि म'शरावि हन हन
सत भावि नित थावि निष्कल मन
मोक्ष दावि करनावि आनन्द गण
सन्मुख न'ञ ह.वि ज़ोतन तन
'कृष्णास' प्यठ आवि शांतियि शोञ गोसोञ०



(११०)

१ श्री निराकारै त्रिभुवन सारै प्रारै पनने यारै बल ।
भस्मा धारै छम चा'न्य लादन साधन प्यमयो पादन तल ।

२ लमयो जामन रटयो दामन शिवनाथ छम चा'न्य मन कामन
त्रिज़गतपालै इत सानि सालै चावतं प्यालै अमृत ज़ल०

३ त्रिभुवन सारो हनि हनि मंज छुक मायायि सू.ति छुकन इवान द्रैंठ
सच्चित्त आनन्द गोविद केवल ज़ाय चा'न्य हृदयुक पंपोश डल०

४ मनकिस बागस फुलया द्रायें रछव.नि लछ.नावि अछपोश छाव
शोक चानि प्रेमुक बुलबुल छू नालान
बोलान लोल.नैं दिदरित. ज़ल०

५ हे 'कृष्ण' ! वासना शुद्ध थव स्योध थव
बुद्ध थव सतसय कुन सन्निधान
सतस.य कन थव सतस.य मन थव
सतकिस कुलिस वसि आनन्द फल०



पर त. पान य'मि समुय मोनुय य'मि हिवुय मोनुय दिन क्यो रात
य'मिस अद्वय मन सां'पुन त'मिय ड्यूठुय सुर गुरु नाथ

—ललेश्वरी

(१११)

—स्व० मास्टर ज़िंदा कौल

१ कर सना ह्ययि ज़न्म यथ हृदयस अंदर श्री कृष्ण देव।
कर सना इयि माति असि पोज रुत सुन्दर श्री कृष्ण देव॥

२ कर सना गट कूठरे अनि गाश वुज़मुत स्व प्रकाश
बांदिवान.चि बेडि फुटरित खोलि बर श्री कृष्ण देव०

३ वैर लोभ त. द्वेष ता'य अन्याय रूपी दानवन
चक्र सू.ति अभिमानचे फुटरावि थर श्री कृष्ण देव०

४ ज़ोर जर रस्त्यन दरिद्रन दलितन करि यावरी
द'दिम.त्यन शेहलावि दित शीतल नजर श्री कृष्ण देव०

५ अर्ज़नस दित आज्ञा बददिल म. वन थोद वुथ च. लड
कासि ना असि दीनता पस्ती हचर श्री कृष्ण देव०

६ कृष्ण पूज़ा क्या छय? पालुन त'मि सुँदुय थोद कर्म योग
धर्मचे वति हुंद बनावुन राहबर श्री कृष्ण देव०

७ यमि न. वरतावस ओनुन गीतायि हुँद अक ओड श्लोक
लाभ क्या ध्यक.नावनुय लूकन अंदर श्री कृष्ण देव०

८ का'र नोमरित दित बुथिम्य अथ अ'सि वदव ना शर्मि सू.ति
वुछक्यनस असि मंज़ अगर इयि चक्रधर श्री कृष्ण देव०

९ सा'नि दुख ता'य दा'दि त'मिसं दि इम्तिहान निष्ठायि मंज़
हाल निशि न त. सानि व'निज्या बेखबर श्री कृष्ण देव०

१० कृष्ण स.दे लोल इम आम.ति छि यो त श्री कृष्ण मक्त
अज कर्यक प'ज़ि किञ सफल ज़न्मुक सफ़र श्री कृष्ण देव०



(११२)

पा'नि पानस दितो वो.नये ।
हाविथ शुभ दर्शुनये ॥

१ संसार कठोर छु हुन्ये.नये वुछत यति केंह न. लारुनये
कुनि रंग नाव तारुनये हाविथ०

२ मक्ति कामधेन रछुनये वासनायि घास दिस ख्योनये
गुरु शब्द वो.छ लागुनये हाविथ०

३ विचार ह्यस दिस घोनये ज्ञान अमृत ह्ययि द्युनये
संतोष दज्जि फ़यारुनये हाविथ०

४ वैराग ल्यजि कारुनये ध्यान. ज़ागि सू.ति ह्ययि ज्योनये
ह्यन लो.लि ललनावुनये हाविथ०

५ चित्त क.यि शेहलावूनये सोऽहं दोन त्रावुनये
रात दोह ह्यन मंदुनये हाविथ०

६ नेर्यस प्रकाश. थ'वियेे देह गुरसस मंज़ न'वियेे
आत्म देव ग्यव रछुनये हाविथ०

७ दारि बर बंद करुनये यि रत्न ह्ययि चमकुनये
दो.गुन गछि ओंगुनये हाविथ०

८ प्रज़नाव पान पनुनये अद कति ज़गत भ्यो.नये
चित्त प्रकाश ह्यथि उलसुनये हाविय०

९ फलि निश कुल कति भ्योनये फ'लिस.य मंज़ सु आस. वुनये
सुय फोल. हावान फो.लुनये हाविय०

१० कति रोज़ुन त. मरुणये दु.य गलि पत रोज़ि कुनये
कुस धारि कस होरुनये हाविन०

११ इच्छा कुल गालुनये त्यलि क्याह नो.न वनुनये
'भक्तिस' हाल भावुनये हाविय०

—स्व० श्री नन्द लाल जी आलवासी

---

(११३)

१ परिपूरण छु नूर. भो.रमुतये—सूर.मोतये आंगन चाव।

२ शांत निर्मल ओंत कास.वुनये
भासवुनये सास रव ज़न
शिव शंभो अलक्ष्य बोल वुनये सूर०

३ नंग भस्मा अगन मो.लमुतये
हटि भुजंग जटि छस गंग
ड्यूकि चन्द्रम टिक. शोलवुनये सूर०

४ अलक्ष्य बूज़ित तिम. गूर्य भाये
असुधायि सान करान विनती
धन. बारव भो.रहस फो.तये सूर०

५ जोगि दोपनक योगी ज़ा'निव
भोग त्रा'वित छुस निराहार
कामदेवस भस्म कोर मुतये सूर०

६ लोभ च्छोभ नहीं ना अभिलाषा
आशा यह एक मन में
कृष्ण दर्शन करनि आमुतये सूर०

७ राधे श्याम को बोलो आदेश
ईश जोगी वेष धर के
तमि अभिप्राय योर आमुतये सूर०

८ बृज जसुधायि ह्यस व्यस.रा'नी
स्वामी सा'त्र विनती बोज़
खोचि बालुक छु रात ज़ामुतये सूर०

९ चानि दर्शन गछि तस छाये
राय क्या छय माय भरह्स
अघोर भैरव. फेर गछ पो.तये सूर०

१० जोगि वो.नस छक अनज़ा'नी
मान योगियन हुँद सरकार
राज़. ज़गि हुंद मा़जि ज़ामुतये सूर०

११ मार जगि हुँद वार. छुस वातुन
गालुन छुस दुष्ट संबन्ध
पालन कर्म वेदव वो.नमुतये सूर०

१२ ज्यन भवनन भय. सुय कासान
भासान सु नित्य ननि नो.न
मूल ज़गि हुंद ब्योल वोव.मुतये सूर०

१३ योग. मायायि संयोग क'यथ.य
प्रेम. भ'रिथ.य नित हर्षाण
कृष्ख. शंकर क'रित नाल.मोतये सूर०

१४ ईच्छण. किन्न कोरुक वार.संवाद
दर्शन. आ'सि हरषा'णी
ती वो.नुक ई ज़गतस ह्योतये सूर०

१५ देव आकाश पोश वर्षा'णी
अछ-रछ़ मच़ नच़नस गयि
द्राव शम्भू सु आकाश खोतये सूर०

१६ नाद लोयुम त'तिय लोल म'तिये
रासुक भास या'ञ्य वनि आम
सास "भास्कर" ज़न पूरि खो.तये सूर०



(११४)

१ वन्दयो मुञ्ज ब. पादन छारथो राम. राधन।
२ विचार ना'गि वति लारै नुनर.कि तार. प्रारै
ब्रह्म.सर. किञ्ज दिमै वन्य छारथो०

३ अंछिन हुंद गाश म्योनुय खुश इक.वोन नुंद. बोनुय
कांलि राव्यम हिये तन छारथो०

४ कश. तीर लोयथं म्य लशि छम नार.अ रेह
अशि फय्ंयन ईयेम तन छारथो०

५ महांलिशि किञ इमांयो हरसुख वंनि दिमांयो
हंस. द्वार. गंछित रटै वन छारथो०

६ च. रूदहम कथ शाये क्रेंक. नंदियि वो.ठ व.लाये
गंग.बल युन छु आदन छारथो०

७ गोस. नो केंह म्य चोनुय दयन यंलि वान. जोनुय
चार. नो लांनि वादन छारथो०

८ च. ज़ि गोक म्य निश दूर इज़ि त्यलि यलि गछ्यं सूर
वुज़ि पोञ नाग. रादन छारथो०

९ नाव तन त्राव कीनह माव मीर दो.द म्य सीनह
हाव मुख थाव लादन छारथो०

१० बरञि बल युथ न. रावै राम. राम क्रल त्रावै
आलव दिज्यम म्य नादन छारथो०

११ नेत्रन मंज़ रटै पाद वुथि शेरि किञ दिमै नाद
मरयो वुजि छु आदन छारथो०

१२ नाराण नाग. प्रारै वांगत जाय छारै
प्रारै सू.ति साधन छारथो०

१३ सिर्यस छु गाश चोनुय तस छु "प्रकाश" चोनुय
सो.य छै योग. साधन छारथो०

(११५)

१ सिर्यि वुज़नोवुम चंद्रम. सोवुम
तारकन दोवुम शून्य मंज़. थान।
गाश.सू.ति गाशुक गाश ग्रज़नोवुम
सुबह रूप होवुम श्याम. लालन ॥

२ दिन त. रात पा'द गयि लिर्यि ग्रक्रम. सुबह
चन्द्रमन प्याल. म य' शबनम सू.ति
तमि प्याल. श्याम.लाल दामा चोवुम सुबह०

३ मन गुलि आफ्ताब ज़न फो.ल नोवुम
सिर्यि गंज़रोवुम परमात्मा
तत कुन मुख हा'वित सुख ग्रोवुम सुबह०

४ आत्म. तीर्थ.मार्तण्ड. मंज़ तन ना'वम
पितृ लोकस दा'वम तृप्ती
तमि कर्म.ऋ्यन हुंद ऋण मो.कलोवुम सुबह०

५ निर्वासनकुय आसन ग्रोवुम
तति बेहनोवुम प्रत्यक्ष देव
निर्मल पंपोश. डल फोलनोवुम सुबह०

६ श्री 'कृष्णस' सू.ति दोह गुज़रोवुम
शामन होवुम त'मि श्याम. रूप
सुबहस सू.तिन शाम मिल नोवुम सुबह०

(११६)

१ अ'रिञ्ञि रंग गोम आवन हिये।
कर इये दर्शन दिये॥

२ श्याम. सोन्दर पामन ल'जिस
आम. तावह् कोताह ग'ज़िस
नाम. पैगाम तस कुस निये कर०

३ कंद नावद आरुदमुतुय
फंद क'रित चोलुम कोतुय
खंद. क'यनम लूकन थिये कर०

४ सुलि वोथवो संगर मालन
लाल. छारोन कोहन त. बालन
आरान छुस ब. तहंज़ि जिये कर०

—अर्निमाल



(११७)

१ मुझे राम से कोई मिला दे।
बिन लाठी का निकला अँधा—राह से कोई लगादे मुझे०

२ कोई कहे वह बसे अवध में
कोई कहे वृंदावन में
कोई कहे तीरथ मन्दिर में
कोई कहे मिलते बन में
देख सकूँ में उनको मन में—ऐसी जोत जगादे मुझे०

ॐ नमो भवान्यै ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(अष्टम् - तरंग)

(११८)

१ स्मरणि चान्यि पाप सा'री हा'री—हारै पर्वत चि हा'रिये ।

२ संकट कट छुक हे मुकट धारी
तेज़ चानि प्रज़लन आव संसार
सिंह आसन चिय छय सवा'री हारै०

३ गौरी नावस लगोय पा'यें पा'री
चाव प्रेम दो.ध चडवा'रिये
ज़ाग्नक अभिनव गुप्त आचा'री हारै०

४ न'टि लछ़लि आकाशन ग्रटन ता'री
नोन नीरित वोन महिमा चोन
परम शक्त मा'न्यिक शंकराचा'री हारै०

५ शिव शक्ति रूप ज़ा'नित चो.पा'री
गुलि ग'डित नन्य वुन्य या'री स्य कर
ह्यथ नखस नियनक मं'ज़ कष्टवा'री हारै०

६ नित्य सुमेरुस ता'न्य ला'यं ला'री
कति आ'स वातन चि शक्त ओस सख्त
पर्वत. प्रदक्षिण. पाप निवा'री हारै०

७ शारिका नाव छुय भाव छुम चोनुय
नो.व न'वराव त्राव प्रोनुय याद
हाल मोव वाल पापन हंदि बा'री हारॆ॰

८ आद्य शक्त पान.छक सर्व अधिका'री
पूज़ा करव.नि सा'रिय च्यय
साध सत वैरा'गि जोगि ब्रह्मचा'री हार॰

९ चक्रेश्वरस.य छु जय जय कारय
सार्यव.य रो.ट दरबार.य सुय
सिद्ध पीठ ध्यठ गयि सिद्ध ह्यत सा'री हार॰

१० चानि सू.ति सा'यं देव ज़ीव व्यवहा'री
चानि सू.ति उल्लसन आव संसार
चानि सू.ति सा'नी छय दुनियादा'री हारॆ॰

११ अष्टादश भुज़वय सू.ति पर्वत.
हि्त.कार. पुछि् छक बत. बा'गरान
सर्व व्यापक छक सर्व उपका'री हार॰

१२ कर्म लेखा छक पान. परम शक्ती
कर्म सान्य पनञिय भक्ती लेख
कृत कर्म फल छक दिव. व.नि सा'री हार॰

१३ अज़पा गायत्री ज़पहोथ अंन्दरी
श्री सुन्दरी योग. न्य'न्दरे मंज़
मन. प्राण. ध्यान ज्ञान. विचा'री हूरॆ॰

१४ परमात्म॰ रूप॰ छुक ज़गत॰चि साची
जितेन्द्रिय इन्द्राची छुक
प्राण शक्ति सू॰ति छुक पान॰ व्यवहा'री हारै॰

१५ पान॰ छुक योगी पान॰ ज्ञा'नी
वाणी रूप भवानी छुक
बुज़ सू॰ति ह्यस रटन॰चि विस्ता'री हारै॰

१६ चामर लाग॰होय पोश चा'यै चा'री
चण्डी च॰य छुक चेतन स्वरूप
चित्त शक्त छुक चेनव॰न्य चोपा'री हारै॰

१७ मोह ज़ाल मंज़॰ नेरनुक उपाया
कर राज॰ हंसुन साया त्राव
हंस नाद सू॰ति तार यमि हंस द्वा'री हारै॰

१८ हीमाल पर्वत॰न्य राज़॰ कुमा'री
चरणन लगोय पा'यै पा'रीये
'कृष्णन्य' भक्ति बोज कन धा'यै धा'री हारै॰



(११६)

१ हीमाल॰ पर्वतने घरि ज़ायक।
आयक करने जगि पालना॥

परम शक्त परम॰ शिव छ्यांड॰नि द्रायक
कर्म॰ सू॰ति सां'पन्यिक शिव शक्ति रूप
भगवत् माया बोज़॰न॰ आयक आयक॰

३ परमात्म. सिर्यि मंज. तेज़ा द्रायक
प्रज़ल.नि आयक संसारस
यमि मंज़ द्रायक त'थि मंज चायक आयक०

४ जगत.चि दाता छक फल दायक
यस च.य दिख तस दिथि शिवजी
सुय च्य लायक च.य तस दायक आयक०

५ वरण इयिय ह्यथ वैकुँठ नायक
वीगिस खसनस छुय छायक
मान.यँव्य पतिव्रता सती द्रायक आयक०

६ 'कृष्ण' लोल. तारव सेतार वायक
वाणी भवानी च्यय गछिय सिद्ध
सुय करि नाद बिंदु बोज़नस लायक आयक०



(१२०)

मिलाप

१ पानै म्य पान हा'वित आशायि धारना'वित ।
तन्हा चो लुक म्य आवित कस ? म्यानि जोगि रायो ॥

२ वुछनोवथस मनुक मल सो.न म्योन द्राव सरतल
वुछमक न, वार. को.रथं चस म्यानि जोगि रायो

३ ह्यकखै वुछित च. तिम छोव मुचरित ब. सीन. हावय
चय वन च्य रुस्त भावय कस ? म्यानि जोगि रायो

४ यव किञ बे सुम छुय कोमल हृदयस कठोर वाणी
ग्रावन दिमव यतिय छ़यन बस ? म्यानि जोगि रायो

५ लो.भमक त. वो.ञ म. रावुम बालन कोहन म. छावुम
सत्संग. प्लाल. चावुम मस. म्यानि जोगि रायो

६ भगवान सोन बूज़िन असि आश चा'ञ रूज़िन
हथ वा'सि माजि मा'लिस लस. म्यानि जोगि रायो

७ नित्य इष्ट देव. संध्यन पंपोश. पादन.य तन
बंबुर ब'नित चवान गछ़ रस. म्यानि जोगि रायो

८ पज़ि प्रेयमके प्रभावय भोगान सुख त. सावय
निराग राज़. योगस खस. म्यानि जोगि रायो

९ दय. सुद प्रसाद सत्ज़न भक्तन छि बा'ग रावान
प्रेमुक चवान त. चावान मस. म्यानि जोगि रायो

१० ब.ति चा'ञ दा'सिया छुस च्यय मूल. माल. अर्पण
युथ छुक च़. इष्ट देवस तस. म्यानि जोगि रायो

११ उपकार. म्यानि बापत थो.द योग. पीठ त्रा'वित
असि निशिति क्यूंच़ काला बस. म्यानि जोगि रायो

१२ भाषण मधुर मधुर कर फुटराव शकरस मो.ल
अभिमान कोसमन हर अस. म्यानि जोगि रायो



(१२१)

१ आमच़ मनस रच़ वासना ईश्वर सफल करिनासना।

२ एकांतकिस गुहलिस अंदर उपरामकिस शिहलिस अंदर
पंपोश॰ पादन दो॰न मलान पननिस गुरुस बो आस हा॰

३ पूज़ायि विध कॆंह ज़ान॰ मा लोलस निषध कॆंह मान मा
छ्यूपि चूरि कुनि म्यूठा दिवान लो॰त तथ खो॰रस बो आस हा॰

४ य'च़ लोल॰ अ'छि वछ़ थाववुन अ'छ़ टींटि रुस्त वो॰श त्राववुन
सुन्दर मुखचि इकांती वुछान तस सुन्दरस बो आस हा॰

५ वाणी तस ज़ विज्ञान मय ज़न साम ग्यवनस पान दय
तन मन ब'नित कन बोज़वुन मधुरिस बो आस॰ हा॰

६ सन् शब्द नोन विस्तारिहे उद्गीत स्वर थोद खारिहे
करवुन मनन स्वादुल चवान श्रवणुक सुरस बो आस हा॰

७ बूज़ित श्रवण पादन प्योमुत संसार निश मोकलित गोमुत
पुशरित पनुन सोरुय गत परमेश्वरस बो आस हा॰

८
'वुज़ तात॰' व'नि व'नि गारिहम
कर॰ पदन॰ हृदयस सारिहम
जल बिंदु ज़न मीलित॰ गोमुत
सुख॰ सागरस बो आसहा॰



(१२२)

१ हतो जीवो तसंज थव कल च. प्रावक सर्वदा मंगल

२ खबर मा छै ब. कव. ज़ायोस करनि क्याह योर ब.य आयोस
सु मेहनत कर लभक रुत फल च०

३ म. रावर क्षण त. दिन तस विन सोरुन हरदम च. जीनित मन
प्रेयम ज़ल चय मनुक मल छल च०

४ सतन सू.तिन च. सत् सांपन च. सत् आ'सित असत् मो बन
अचल आ'सित म. बन चञ्चल च०

५ क'रित तय वोथ च. थानन फेर र'टित दम दम क'रित च.य नेर
वज़िय ज्योति वुज़ी शशिकल च.०

६ इमन अंदर नज़र था'वित पनुन तेज़ा दियम हा'वित
सिर्यि चन्द्रम अग्न वुज़मल च०

७ न्यज़ितहठ वठ च. इन्द्रिय ज़ाल
यि काम क्रोध लोभ त. मोह मद गाल
उदासीन रोज़ त. भोग अन्न ज़ल च०

८ गछुन युन योस गछिय च्यय हान
तम्युक काहण च. ज्ञान अज्ञान
विचार कर बनि सू मुश्किल हल च०

९ च. भूतन करत. बिसर्जन स्व आत्म चि ज़ान आबाहन
ज़्यनह मरण. चि चलिय गांगल च०

१० च़ मित्रस अथि पतुन जर थाव समुद्रस वस त. वस्वास आव
च़ लाल खारकत. लाग ड्रूगल च़०

११ हंस आ'सित च. मो बन काव हंस बन दीध त. पोत्र अंज़राव
स्व स्मृत अन सिरन मो डल च०

१२ अ'द.र्य किञ सारिकुय कर त्याग न्यब.र्यकिञ सारिकुय थव राग
वैराग तनि राग. ज़ाम वल च़०

१३ च. 'नीलहकंठ' कर सन्यास नदी उपाध पानस कास
च. सू.तिन तत समुद्रस रल च०



(१२३)

१ मनि मंज ललवथ कन्हैया लालो।
भय हर बाल. गोपालो वे ॥

२ भय. मज कडतम् दयि अकालो
रक्षपाल. हा कृपालो वे
प्रेम. रस. भरतम् मनकुय प्यालो भय०

३ गोपियन सु.तिन मारव.नि छ़ालो
दुख हर, भक्त रक्षपालो वे
ज़न्म गम कास्तम् कठ.नि कालो भय०

४ दूर्यर चोनुय कोताह च़ालो
वलनै आस ज़न्म ज़ालो वे
ध्यान. दुकारि तथ बनि परनालो भय०

५ खटतं मत. पान रटथो नालो
आस्तम् च. ना'ली नालो वे
लूस्मुत प्रार. वोञ्य कोताह कालो भय०

६ हारान वुछत. छुस अशञ्ये चालो
लालो ! छंति गा'म लालो वे
बालि आम बुज़र ता'थ क'हि संभालो भय०

७ दोह आम सोरान छ'ति गा'म वालो
पलि केंह ति पोवुम न. मालो वे
अथ छोन त. न्यथ नोन छुस बे हालो भय०

८ यलि बनि संयोग आसि कुस कालो
दूय रोज़ि न. कुनि कालो वे
गुरु शब्द एकुत बनि नन्दलालो भय०

९ नय छुक आकाश नय पातालो
नय छुक जंगल त. बालो वे
वनि छुकन इवान आ'सित ना'ली नालो भय०

१० मन सर.कुय बन राज़ निरालो
'नीलकंठनि' छुय सालो वे
रछतम संकट यमि कलि कालो भय०



(१२४)

१ नाद बिन्द. परमानन्द नन्द लालै।
गोकुलानन्द. गोविन्द. गोपालै॥

२ मधु कैटभ मारव.नि हा दो.श्र चूरै
मन. मंज़लिस मंज़ करै गूर गूरै
गोपी नाथ. बाल. त्रिज़गत पालै गोकु०

३ यादव कुलके माधव रामै
हे निर्मल निष्कल. निष्कामै
गूर्यं बालकन सू.ति मारवनि छालै गोकु०

४ राधा-कृष्ण च्यय नादा लायय
श्रीधर प्रेम. स्वर मुरली वायय
रोज़ राम. बोज़ साम वे.दचि तालै गोकु०

हृदयस मंज़ बसवनि नित्य लसव.नि
असवनि आसवनि गरुडस खसव.नि
नाल.मति रटहत मो दिम डालै गोकु०

६ हनि हनि मंज आसवनि वासुदेवै
रास मंडुल खेलव.नि कृष्ण देवै
नित्य भासवनि सत यमि कलि कालै गोकु०

७ पंकज तनि वैजयन्ती माला
तरज़ अकि ना'लि ता'य मौज दुवाला
संत छ्रिय व'लित बसंत दुशालै गोकु०

८ केशव. शिव रूप नारायणै
वुन दित नोन गोक बिंदराबनै
चोन ह्योत चं न प्रेम. मस प्याल प्यालै गोकु०

९ विदुर जियनुय घर. यलि चाख.य
भावनायि सू.ति ख्योथ सिवमुत हा.खय
कति गोख तति कोरवन हंदि सालै गोकु०

१० द्रौपदियि अकि कृष्ण. नाव सू.ति शामै
पैद.नयि तस ति कू.ति वस्त्र त. जामै
ईति क'डिस दुर्योधनन.य नालै गोकु०

११ चाञि मायायि सू.ति मंज़ द्वारिकाये
मथुरायि हंज़. हिश. लरि ता'य जाये
पैद. गयि अकि दम. मंज़ कमि हालै गोकु०

१२ अज़ामल द्राव बोड भाग्य वान.य
निचविस नाव तस ओस नाराण.य
मृत. विज़ि फ़्रूर तस श्री अकालै गोकु०

१३ श्री भगवान् छुख पान. प्रत शाये
कुस बोत कुस वाति चान्ि मायाये
मोकलाव असि यमि मोहनि ज़ाल गोकु०

१४ 'कृष्णस' शिव रूप. दर्शन दित चय
सुय च़य च़य सुय केवल छुख न. चय
श्याम. प्रभात. रूप हावतस कालै गोकु०

(१२५

१ लत ला'इथ ससारस—पत. लारस ल'तिये ।

२ हंस. नादकिस जानवारस ना'लि जाम. छिस छ'तिये
बुफि तार्यम हंस. ठ्ठारस पत०

३ सूर कोर त'मि अंधकारस युस वोर सूर म'तिये
बु.ति धारणाय ध्यान धारस पत०

४ अथ तेज्र रूप आकारस फेर ब्रं'ठि ता'य प'तिये
पोंपुर ज्रन गत. मारस पत०

५ लोल फंबकिस अंबारस रेह म्य दिच् सूर. म'तिये
स्रेह म्य छुम वोत्र कति प्रारस पत०

६ आरवल मंज्र लोल नारस द'ज़मच् 'प्रियम सू.तिये
शेहजारस मंज़ छ आरस पत०

७ नित्य लग.हा सत विचारस सत भारनाव स'तिये
स्वर फिरत. चित्त सेतारस पत०

८ वंदुन छुम पान यारस अंदुन छुम य'तिये
चन्दुन गोम देव. दारस पत०

९ ग्रज व'छ़ सोंद.य नारस यति आ'सित छु त'तिये
वन. वन स.य कन धारस पत०

१० छाल मा'र्य मा'यं लोकचारस क'र्य म्य पोशन फो.तिये
शेरि लागस जटा धारस पत०

११ 'कृष्णन' दुप बाल यारस करहस नाल य'तिये
मेलि श'स्तर त. संगि पारस पत०



(१२६)

१ चाल. छुम अशिजे कोनाह ब. चाल. लाल.।
बाल. गोपाल स्या'ञ पालना कर ॥

२ गिदनस आमुत पायस न. ध्योमुत
न्याय अज़राव नत रावय बो
त्रा'बित म्य कर-म डाल बाल. विशाल लाल. बाल०

३ कृष्ण ! चा'ञ द्र य छुम वायै बोज़क
लायय न. मोक्त मालि पुछि मो खोच
अक रटत नाल लाल. ब्यियि गंडै लोल माल. बाल०

४ देवता यी आ'सि अंदि प'खि बोज़नस
सेव करनस तस भगवानस
संतूर वायनस भैरव वेताल ताल. बाल०

५ पुशरुन छु मोक्त मालि माल कव छच'थं
मोक्त हार पुछि ब. मोक्त हारन छस
वात्यक न पनञिय वनतम छिनाल. लाल. बाल०

६ ह्यरि बोन लोभमक न. लूक मा ह्यडनम
छुक बालुक त. छुय न. हर्ष-शोक केंह
कृष्ण इम वनान छिय बननै छ़नाल.लाल बाल०

७ मनस ब्राह्मणस व'निस मंज न. आखो
ज़नार्दन. सु न. व.निस मंज़
काल ओस पोज़ त. म्य मारनं अकाल लाल. बाल०

८ मोक्त मालि पुछि पुक्त. प्राण गव ब्राह्मणस
सकत गोस पानस ज़ि वापस चाव
इथि नय कद वुछान पान ज़ाल. लाल. बाल०

९ अ'रिस वुरिस रूग प्योस वा'तित
च'रिस गाटस खुर क्याह आस
राज हंस ज़ाल लोग चलनम न. ज़ाल. लाल. बाल०

१० संसार भ्रम छुय बा'ज़्या त. बाज़ा
सूरसुत बाज कस फीरित आव
शश, पंज, चहार, सेह ब्ययि दुखाल लाल. बाल०

११ परमानन्द मोक्त हार. कथि कन थव
स'नि स'नि यति क्याह छि सोन डेशान
मुक्त गछि युस करि मोक्तस माल. लाल. बाल०

१२ 'परमानन्द' चन्द. छोन वुछान पानस
नत कति ओस तति मोक्तस मोल
प्रावि मुक्त त्रावि युस धन द्यार माल लाल. बाल०

---

(१६७)

भगवान् कृष्णुन मोक्त ववुन

१ गोकुल हृदय म्योन तति चोन गूर्य वान. ।
चित् विमर्श दीप्तिमान. भगवानो ॥

२ मोक्त मालि रोस्त ताम कृष्णस डेंशान
लारन त. नाल. मति रटानो
मुख डयूंठनस ता'य मुक्त आ'स गछान. चित्त०

३ शाह छुसन फोरन त. तोरै छुस प्रछान
मा'जि मोक्त ब्योल छा ववानो
म्य'ति वोव ब्योल खल कोन छक सोंबरान. चित्त०

४ ह्राव बो कू.ति लछ कुलि खसान.
बागस छि सास ब'दि बागवानो
तसली गोस छुम कृष्ण म'च़रावान चित्त०

५ मोक्तस त. म्य'चि छुन बालुक ज़ानान.
म्य च्य क्याह छि य'च़ फिकिर असानो
मोचि़ क्याह पतकुन यि यस आसि मोचान. चित्त०

६ कृष्ण य ह्यकि स्यकि मोक्त आसि करान.
यछ़ पछ़ कोन छुव 'आसानो
रूदमुत संशय रूद मोक्त. वालान. चित्त०

असुधायि मोह. माया ह्यस डालान.
मोक्त क्याह ज़ि त्युथ मोक्त आसानो
युत छुन मोक्त मंज़ राज़ द्वारस ति मेलान. चित्त०

८ अंबना'वित छुसन. तमन्ना नेरान
रंबवनि मोक्त मालि सोरानो
छ'करित मालि बालि छुम तंबलावान. चित्त०

९ ह्यत क्या गछि़ वोञ सु प्रोहत वनान.
हीत छुमन रीत क्याह् कव ज़ानो
ब'नित क्याह आम वनित कव ज़ान. चि़त्त०

१० करनम न. पछ़ मोक्त छुन आसान.
पछ़ क्याह छय श्री नाराणो
म्यचि़ मुर्य आ'स दित य'च़ आ'स भरान चित्त्०

११ जसुधायि ह्यस होश नज़ि रूदमुत दान.
मोक्त दान. पुछि दान मनसानो
मोक्तसर ज़ि मायायि कांह् छुन जानान. चित्त०

१२ ज़गतस मोह अंधकार आव वलान.
बुद्ध छकन सिद्ध छिन प्रावानो
ऋद्ध सिद्ध तस यस संतोष आसान चि़त्त०

१३ गरज़मंद लूक आ'सि गा'मति देवान
कृष्णञि कथि पछ़ छिय करानो
नेरि मा बीरि टंग द्यव नेरि अरमान. चि़त्त०

१४ पकन कृष्णस पत. पत. लारान.
जंगलस मंज़ बाग डेंशानो
मोक्त कुलि भ'र्य भ'र्य त. मोक्त फल नेरान. चि़त्त०

१५ भ'र्य भ'र्य छि मोक्त लंग पथर नमान.
मुफ्त ज़न सु मोक्त डार मेल।नो
मथुरायि बूज़मुत मोक्त द्युन गुर्यन दान. चि़त्त०

१६ आश्चय मायायि आयायि वुछान.
कारण त. ऋषि मुनियन सानो
अ'नि ज़न छि तिम ति तति असि हि़व्य गछा़न. चि़त्त॰

१७ सोबरा'वि लूकव मोक्त अंबर खान
नन्द गोप मोक्त. ओस बा'गरानो
पंच, त्र्य भाग.नि फो.त फो ति सेनान. चि़त्त॰

१८ प्रोहत सूजमुत गगोष्ट त्रक सोंबरान.
दक्षिणा यि पूरि पूरि रिंज़वानो
पछ़ छयन् लूकन इवान त. नवान' चि़त्त॰

१९ घर. आख म'र्य भ'र्य वो.ञ छुकन. रोचा़न.
मोक्तय छि लूख तृप्त गछा़नो
भगवान छु चो.पा'र्य मो.क्तय छकान. चि़त्त॰

२० घर. आव प्रोहत ह्यत सोरि सामान.
धर्म त. दान य'च छु करानो
गूर्य कामधेनन मो.क्त, माल. पा'रान. चि़त्त॰

२१ सास. बोज़. मोक्त. माल. तमि मालि खोत. जान.
रत्नव ज'र्य ज'र्य छि वुगानो
सो.ञन छि बोग ह्यत सु प्रोहत सोजान. चि़त्त॰

२२ तव पत गोकुल.कि जग होम करान.
देवता कृष्णस छि पूज़ानो
इच्छ़ा भोज़न ब्राह्मणन ति ख्यावान चि़त्त॰

२३ नचनस त॰ गिंदनस गूर्य मायि तोषान॰
शुर्यन रटनस न॰ पोशानो
कृष्णस त॰ राधा मातायि वनवान॰ चित्त॰

२४ प्रोहत सु सूजमुत मोक्त॰ दछिणायि सान
ग्यवान त॰ य'च् गव रिवानो
धन॰ अवणस छुन॰ म्योन ह्युव खज़ान॰ चित्त॰

२५ बछ भानस वति कुन अ'छि लोसान
ब्राह्मणस छु ताम दूरि डेंशानो
राज्य ज़न प्रा'वित बाज ह्यत ईवान॰ चित्त॰

२६ भा'रन छु मोक्त सो॰न स्वार्गी सामान
सास॰ ब'दि लूक ह्यथ छि पकानो
बार॰ बार॰ डेंशान त॰ बार॰ बार॰ वनान चित्त॰

२७ कोरमुत सु तदबीर घरि छुक रोज़ान॰
भगवत मायायि डेंशानो
वुछनस न॰ वननस न॰ बोज़नस न॰ ईवान॰ चित्त

२८ वनि क्याह कांछ वनि छा ईवान॰
ब्राह्मणस ति छिन॰ प्रज़नाग्रानो
सुशीलायि ज़न त॰ सुदाम वातान॰ चित्त॰

२९ डीशित मोक्त माल रत्नव त॰ सो॰न सान
मोक्त॰ माल पनञिय छय मंदछानो
पन॰ पहा'र पनञिय छु सुदाम छ़ारान॰ चित्त॰

३० डीशि डीशि सोर देश असन त. गिंदान.
राधा मालायि तुतानो
डयक ब'ड कोस इछ़ प्रज़ि मंज़ आसान. चित्त्०

३१ संपता नच़नस त. वच़न वनान.
हर्षस गोमुत सु बृक्ष भानो
शरण कृष्णस छय राधा गछ़ान चित्त्०

३२ ब्राह्मण अभ्यागत त. ऋषरण सोंबरावान.
पजन. खोत आसि धन. खर्चानो
रज़िता'य प्रज़ि मंज़ आश्चर्य ज़ानान चित्त्०

३३ जग. होम ज़प तप ऋषि मुनी पूज़ान.
तुतान दोशवति त. वनवानो
देव कन्यकन मनि प्रकाश प्यबान. चित्त्०

३४ देवियि त. देवता धारणायि धाराण.
राधा कृष्ण. कृष्ण. ज़पानो
राज्य लक्ष्मियि मा'ंजि को.छि को.छि क्यत ह्यवान चित्त्०

३५ व्यस. ता'य दास इम' खास खास आसान.
तिमन.य मू.ति घरि गिन्दानो
घरि घरि करिहे मनि कृष्णुन ध्यान. चित्त०

३६ यी मनि फोरान त. ता आस सो.रान.
प्रेम सू.ति वा'णियि वनानो
ब्ययि ब्ययि व'नि व'नि त. ब्ययि ब्ययि बनान. चित्त्०

३७ "परमानन्द" तति पादन प्यवान.
साधन सुय फल मंगानो
टूठिनस राधा सहित कृष्ण. भगवान. चित्त॰



(१२८

१ मधु कैटभ मारवनि युद्ध वेष धारवनि।
शुद्ध शांन दोघ चूर. गूर.गूर. करयो ॥

२ शहर शहर. गाम गाम. राम. राम. परयो
दक्षरण उत्तर पछम पूर. गूर॰

३ छिय बसंत रग जाम इन. चानि फोजम शाम.
लजि-लजि मूर. मूर. गूर॰

४ कर हृषो केश. राग द्वेषकिस शीशस
खजि-खंजि चूर. चूर. गूर॰

५ बंबूर. गीता छय गोपियि गावान
स्वर्ग. मंडल.चि हूर गूर॰

६ सिर्यि दर्शन दित. मोह् गटि मंज़ नित
इत. नूर.कि नूर गूर॰

७ होश अ'लिशि पोश.किस गोशस प्यठ बेह
श्याम. रंग बंबूर. गूर॰

८ तुलमो छावय हियि तन नावँ
फ'लिल. मुश्क. काफूर. गूर०

९ मन.नकि तेलन. निधि ध्यासन टोठ
श्रवण.कि कन. दूर. गूर०

१० राज़. योग राज़ बोज़ सा'नि ताज़ ताज़ स्वर
प्रेम. साज़. संतूर. गूर०

११ देह. अभि मानुक कुल ह्ययि छननुय
तीव्र. वैराग. सूर. गूर०

१२ हे हरिहर. ! पाप पाप हर "कृष्णस" कर
अनुग्रह पूर. पूर. गूर०



१ मंज़ पोश. बागन प्यठ नागरादन।
फेर.नि द्राहम साधन सू.ति॥

२ कन थावत प्रेम भ'रत्यन नादन
आदन बाज़ि छम लादन चा'अ
पूर्यर करतम था'विम.त्यन वादन
फेर.नि द्राहम साधन सू.ति



(१२६)

शिव निर्वाण

शिव शंकर भव भय हर हर. लगयो चरणन ।
गुरु लगयो पादि कमलन् सत् गुरु लगयो चरितन् ।।

१ चरणन् तल वार. वरतन् वरदा छुक शरणन्
शरण.य च्यय आस कासतम मल म्य अन्त: करणन्
कर शंकर कर रटहम कर अर हर मरणन्
मर मर छुम ज़्यन मरनुक अमरेश्वर भगवन्
पादि कमलन तल म्य पालतम पालवुन छुक कालहन्
हन्य हन्य चय शिव वुछहथ यव दु.य गल्य हन हन शिव०

२ दय अद्वुय द.इ म्य गच्छतम कर, दय दय निशि दिन
दीन दयाल कन म्य थावतम दीन वचनन त. वदनन
ज़र ज़र छुम ज़ुज़रणकुय ज़ीरनावतम मत. हन्
हननावन. हननावतम मन्य मोह युथ मुनियन्
देहपुष्ट मन तुष्ट थावतम देवजुष्ट छुक दुष्टहन्
वानै ईश्वर पानै तोषतम् पान वन्दयो तोषणन् शिव०

३ अन्त कुस ज़ान्य च्य अनन्तस सन्त व्यसरेय चिन्तनन्
क्याह निश्चय करि वेदान्तीय यत्य वेद लग्य पन्थनन्
ब्रह्मादिक गय मोहस् तत्व च्योन क्या व्यज़रन्
तत्पुरुष चय तत्व म्य भावतम वथ म्य हावतम ज़ाननन्
गथ छय सिद्ध शुद्ध मुनियन् सथ छथ्म शाप मोचनन
शाप मोचन ज्ञान लोचन पा'यं आर्या लोचनन शिव०

४ तेजोरूप तेज़ च़य छुक सोम सूर्यन त. अग्नं
तेजोरूप च़.य भासान बाह्य अन्तर योगियन्
स्वप्रकाश त. स्वानुभवगम् शान्ततेजः ज्ञानियन्
शिव म्यत्य दित कर्म सुम स्यज़ जान यछ ज़न कादिकन
ज़ान ज़ानुन जाननीय च़.य क्याह ब. ज़ान. च्यान्य ज़ानब व्यन
ज्ञान उपदेश वार. वरतम् फर अज्ञान पटलन शिब०

५ निष्कारण सर्व कारण च़य कारण कारणन
त्रेकार छुक च़.य कारण सृष्ट स्थिच तय प्रलयन्
च़.य कर्ता च़.य भर्ता च़.य हर्ता ज़गतन्
व्याप्य व्यापक भाव व्यापीत च़य निरन्तर भवनन्
भुज़ि क्याह वन. चजि क्याह छुक युस न ज़ोन कांसि ज़ान्य व्यन
ज़ान सोरुय चान्य दया चान्य कृपा भगवन शिव०

६ देव पोज़ छुक देव पूज़नीय पूज़ा व्यध पूज़नन्
विज़ि विज़ि भुज़ि पनि पूजहथ युथ च पूज़नख विष्णन
भाव बामन फुलनाविथ माल करहय कौसमन्
बो स मन्य व्यन लागहय भ्यय गुन्ध्य करहय कौसमन्
सोवुन्द यछि पछि हन्दय् पोश लागहय पादि कमला।
पादि कमलन तल म्य पालनम तल ह्यथ क्यथ विघ्नन शिव०

७ शुद्ध निर्मल शिव पूजहथ यव सपन्य शुद्ध मन
शुद्ध मन च्यय ध्यान धारीथ शुद्ध स्फाटिक विकसन
नीलकण्ठस च्यय हटि वासुक चित्त् आत्मस् तमोगुण
सुधा धारा गंग ह्यरि शेरि छ्यय तारव.न्‌ सु.ज़ि नरकन
शिवा धारमंच वाम भागस चित्त् शक्त चित्त् आत्मन
धर्म रूप वृषभ वगि त्रिशूल त्रि अवस्थाय अथि सन् शिव०

८ श्वेत सुन्दर छुत भस्मा तन्य प्रकटयोग सत्वोगुण
रुण्ड माला गल्य गंडम.च रोष कोरमुत इन्द्रियन
क्याह छय जटा मुकट शोभान छल गुण्डमुत रजोगुण
टिकि शाय हिरि डिकि चन्द्रम प्रकटयुथ च्योन शुद्ध मन
दिक् वासन निर्वासिन वास च्योन मन्य सुमनन
त्रिवाम छुख ज्ञान बुज़तय त्रिकार रूप त्रिनयनण शिव०

९ माया तीत माया चान्य त्रिगुण सू.ति विकसन
निर्गुण छुक गुण उल्लङ्घित माया गुण विलसन
भूत भावत भूत पंचक देह खर कुर अहमन
दह इन्द्रिय मन बुध ह्यथ प्राणबल सू.ति प्रसरण
सच्चिदानन्द रूप आत्मन ज़ीवभावस कुर शयन
तादातम भाव देह के लोभ प्राकृत बल ज़ीवनन शिव०

१० मोह ज़ाल सू.ति ज़ीव गण्डने आव कर्मनिन बन्धनन
काम क्रोधन स्थित रटनस प्यठ मनस बुज़ त इन्द्रियन
द्वन्द्वभावत रागद्वेष सू,ति काप्य लुग षट् शुत्रन्
गुण सङ्ग सू ति न्त गछ्य् लुग पुण्य पाप वश बांध.जन
मुक जारोक पाय चय शिव मोक्षदा छुक भक्तिन
भव बन्धन मुकलावतम छुक च.य भव. ! भव. भयहन् शिव०

११ निष्प्रपञ्च च्योन सोरुय प्रपञ्च वाञ्छ छम कस बर. कन
हे हरे हर विरिञ्चि बोजतम क्याह वन पञ्च दैवतन
वन च. क्याह कर. चञ्चल मन. संसार वयन ख्येंचलन
पञ्चवदन मुकलावतम केंह अन्त छुन न च्यान्य वयन
कून. कून. कून कुनोय तोषतम केंह अन्त छुन हेरि बुन
रुति मुख मुख सुख वरतम सुख सुन्दर दुःख हन् शिव०

१२ सम दितम संपदा यव सम सुम रोज़हा समयन
सम यस गछ़िय चान्य दया लग्य सुम स्यज संयन
सम्य समिरस. प्रथ गुण किन्य समयन तय साधनन
सुम आहार सुम विहार सम निद्रा त. जागरण
संभालिथ पानस सुम सुम शुजरिथ शायहन
लग्य समाध योग सम स्यज़ विजि सत् गुरु वचनन् शिव०

१३ भक्ति प्रिय भक्ति दायक. दय युस इच्छहन भक्ति ज़न
भक्ति भावत. भक्ति भावनाय च्यय कुन लग्य निशि दिन
भक्ति वत्सल भक्ति छलबल. बल. फिरि गुड विषयन
दरि श्रद्धाय ध्यान धारीथ रटि प्राण बुद्ध चित्त त.मन
यम नियम शम दम सम्य मन. सुरि सुय दय त्राण त्राण
मन ज़ीनिथ पोज़ चीनिथ गछ़ि ज़ीनिथ भवनन शिव०

१४ यस संस्रति पोत अच्य मन सुस्त आस्यतन विभवन
लोर आस्यन अन्न धन्नन घरबारन त. सन्तनन
व्यवहार क्यन काम्यन प्यठ परद्यन हज्य काम्य ज़न
प्रारब्धुक भोग भोगान् भोगवुन ज़न स्वप्नन
रागीज़न सार्यस.य सू.ति त्यागित सर्व कामनन
गच्छि़ संसार सर तरीथ लट करान सूह ज़न शिव०

१५ युदवै कांसि ओरै यीयि भंग संग मेल्यस साधुजन
साधुजन युस सम्य चित्त ताय ममताय निश आस्य भिन्न
भ्युन्न रूत क्रुत द्वन्द्व भावन छ्यन दित सर्वे कामनन
शम दम ज्ञान विज्ञान सुस्त रुस्त कपटन त. कल्पनन
ब्रह्म तत्पर आस्य आस्यस परेहट सर्व विषयन
बुड दुर्लभ ब्रह्म रूप त्योग लभ्य ज्य वु ह्योह साधुजन शिव०

१६ युस कांह यछि पानस रुत क्रुत आव्य प्राव्य शुद्ध मन
शुद्ध मन भक्ति भावतगुण कन थाव्य साधु वचनन
साधु वचनव प्राव्य जाग्रत ज़ाग्य ज़ाग ह्यथ समयन
समय वात्यस शम यम नियम. पानै ता'र्य तस मुच़रन
दीन दयाल. हे कृपाल कांस्य गथ छ्यन चा'न्य ब्यन
सत् भाव छम सथ चा'न्यी सत् गथ दिम भगवन शिव०

१७ त्यल्य च्योनुम भुज़ि क्याह छुस यलि वाच़म चेनवन
चेनन आयम दया चा'ञ चेननावान सेवकन
भवत युदवे मुक्त थावहम मुक्त छुस निष बन्धनन
सुप्रकाशत: अविनाशी माशवीथ ज़्यन मरणन
सत चि़त्त आनन्द रूपस स्थिथ न्यन ह्यथ निर्गुण. गुण
प'ञ़ दया चा'ञ भगवण करि क्याह म्या'ञ वन.वन शिव०

१८ शांत निर्मल भांत छम चा'ञ मानतम सार वन. वन.
अख शुभ दृष्टि शिव करतम नाव चोन शुभाअशुभन
शुभदायक शुभ दृष्टि चा'ञ सार शोभा शोभियन
शोभवुन च़.ई त्रिन भवनन शोभ्रहथ पोषवर्षणन
शोभरावतम ज्ञान सग्दा शोभ यथ. यीय ज़गतन
शोभ स.रुय चा'ञ दया चा'ञ कृपा भगवन् शिव०

१९ अविनाश. बढ आश पूरतम नाश करहा कल्पनन
आशा पूर. आशा चा'ञ आश छम राश पपनन
गटि हन्दि घाश. चि़त् प्रकाश. घाश अनतम नेत्रन्
माशविथ रूज़ सर्व कल्पनन नाशविथ सर्व वासनन
प्रकाश. शान्त. सु प्रकाश. च़.ई घाशुर घाशरन्
पर. प्रसाद गुरु प्रसाद करू प्रसाद भगवन् शिव०

२० संसारचीय. छुच् आशा शुर्य मुर्य ताय सन्तनन
भा'य बन्ध तय धन संगत घर बार तय स्त्रीज़न
सोर असोर भ्रम सोरुय मृगतृष्णा यिथ ज़न
शिव च.य म्योन शुर्य मुर्य तय भा'य बन्ध तय सारी ज़न
च्यय मोल मा'ज च्यय घरबार च्यय संपत् द्यार धन
च्यय सोरुय च्यय सारय सहा रोज़तम भगवन् शिव०

२१ लोभ छुम न सुरगण हुन्द क्षोभ तित. भिय नरकुन
रुत क्रूत सुख दुःख भोगान फल पनन्यन कर्मन्
हर नाव सू ति थर.थर अचान दूरि यम. किंकरण
शिव भक्त संज सहाय छांडान माय. पनन्य देवगण
अख शुभ दृष्ट शिव छम चाञ लछ विभवन त. स्वर्गन
सुय शुभ दृष्ट शिव करतम पानै वरतम भगवन् शिव०

२२ नब नाथेश्वर चय छुक नव निधान छुक सेवकन
नव्य खुत.नुव नुव बु वुछहथ लगि नुव नुव नवनन
नव गंडिथ नव रटीथ नव प्रणाव व्याहरण
नव दक्षपाल ह्यथ रोज़तम ईश राछ निश विघ्नन
नवदुर्गा करि पक्ष म्योन युस रक्षक शरणान्
नव द्वार पुर. खस वुफ ह्यथ नववुन्य शिव भवनन् शिव०



गोविन्द माला

१ निस्पन्द सांपन सो वुन्द सू.ति नित्य भगवत धारना धर
गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द कर ।

२ मानुष्य जन्म दुर्लभ देवन सुलभ जीव प्रोवृत च
गुरु शास्त्र पुर्षारथ पूर्वक निर्मल बुद्ध सांपनी
क्यों सोया मोहनी सजया पर जाग रे चत्रे नर गो०

३ अब है गोविन्द मिलने की भारी सब काज तजा कर
गोविन्द चर्णारबिन्द अमृत पी के मन रजा कर
मानुष्य देह फिर हाथ नहीं आवत भवसर पार उतर गो०

४ श्रीमान सर्व लोक पाल दीन दयाल भगवान बाल गोपाल
कोमल श्यामल अंग, देव आभरण, गल तुलसी माल
गगन सदृश्य अविभूत दर्शन आश्चर्य.मय अक्षर गो०

५ त्युथ शुभ समय कर सन ईयम युथ म्य वरि रघु राये
रघु कुल दीपक दर्शन दियं करि म्योन मोक्षोपाये
श्याम सुन्दर राम चन्द्र दर्शुन आसि नख. शांत भासकर गो०



लेखक :— "संतोषी"

दिम म्य रच् त. शुद्ध वाणी महाराज्ञी भवानी।
यछ् त. पछ् छम म्य च्या'नी महाराज्ञी भवानी॥

१ मगहाय चे्य ब. वरदान छुम न. मंगनुक म्य त्युथ ज्ञान
रूज़ मा चा.ञ म्य निगरानी महाराज्ञी०

२ यलि न. च्. थवख म्या'ञ कल वन. कस ब. छुस दुर्बल
कुस लभन चे्य ह्यु ब. दा.नो महार.ज्ञा०

३ यल. छु चोनुय योत दरबार पूर. ब.रि ब.रि छि अंबार
तोलनस छि ब्रह्म ज्ञानी महाराज्ञी०

४ कांह् अखा ति आशावान वाति युस चे् निश माथि सान
लभि न ज़ांह सु मान हा.नी महाराज्ञी०

५ यस च्. राज़ख पान डखिदार दिख सुमन भक्त अधिकार
पोरि कुस तस प्राणी महारज्ञो०

६ भवितभावस च. छुख ला'र फल दिनस छाचे् निशि ता'र
छुय चे् नाव ईशा.नी महाराज्ञी०

७ छख शिवा च. शिव शक्ति चय हय युक्ति त. मुक्ति
च्य उमा च्य ब्रह्माणी महाराज्ञी०

८ नव निधान छिय चे ब'ंडि कोश दिम म्य परम सुख त. 'संतोष'
छुस मंगान ब. सुय च्य ज्य'नी महाराज्ञी०



लेखक :- "त्रैलोकी नाथ" हशरा

मा'ज्य शारिका.य कर दया वर दया ही भवा.नी
कर दयायि हज़ दृष्टी सु. छि ब'ड मेहरबानी ।

१ आय लारान चे निश योर कर्म खुरि बावा.नी
मत. वुछत. कर्मन कुन सारी छी पशेमानी ।०।

२ कुताम रोज़ि युन त. गछुन कुताम रोज़ि क्रेशुन त. वदुन
तार दिवान सारिन्न.य छख असि ति रोज़ तारानी ।०।

३ कुपुत्र छु माजि आसान मा'ज्य छन तस.ति रोशान
असि मगान चा'नी दया जगतच राज. रानी ।०।

४ नखि छख डखि छख चई चे.य सिव काँह ति छुन बियाख
दंह त. रात चोनुय फिरान अख अज़ाब रूहानी ।०।

५ ओश वसान चालि चाले मा'ज्य भवा.नी हावी दर्शुन
केंह ति छुन. नगान बोज़ुन केंह नय छी असि ज़ानानी ।०।

६ बूज़मुत छु हलि मुशकिल बनि असि तवय आय योर
अख रछा करत वुन्य गोर हीमालच राज रानी ।०।

७ दासा छु दर इन्तिज़ार भवसागरस दिस तार
ल्यमभि मंज़ पंपोश खार बोज़तय चय म्याञ्ज ज़ारी

मा'य शारिका.य कर दया ॥



ॐ नमो भवान्यै ॥

श्री शारिका लीला-लहरी

(नवम् - तरंग)

लल वाख

१ अभ्यास किनि व्यकास फोलुम,
सौ प्रकाश जोनुम यिहोय दीह ।
प्रकाश ध्यान मौख यी दोरुम,
सौख्य बोरुम कोरुम तिय ॥

२ गौर कथ ,हृदयस मंज भाग रटम,
गंग ज़ल नाविस तन त मन ।
सौ दीह जीवन मौखतय प्रोवम,
यम बयि चोलुम पोलुम अख ।।

३ पानय आव पानस सतिय,
पानय पनुन कोरुन व्यचार ।
पानय पनुन पान नेछि नोवुन,
पानय गुपुन पनुन पान ॥

४ ललि गौर ब्रमांड प्येठय क्रिन्य वुछुम,
स्यशकल वाचम पादन तान्य,
ज्ञानकि अमरयत प्रकरथ बग्म ।
लूबय मोरुम अन्द वन्द तान्य ॥

५ क्या करम दग्म कोरुम,
तिरथन नावम पननिय काय ।
पापन सौंबरिथ बसम क.रुम,
तति कुस ओस तय योत कम. आय ॥

६ पवन त प्राण सोमुय ड्यो.ठुम,
मीलिथ रूटुम शेर खोरं तान्य ।
दीह यलि मोठुम अद कयाह मोतुम,
न कुनि पवन त न कुने प्राण ॥

७ मनस स'तिय मन.य गोंडुम,
च्यतस रटम चौर्पाय वग ।
प्रकृच. सतिय पौटुय वोलुम
सर. मे कोरम लवम वथ ॥

८ कथा बूज़म कथय करम,
कथाय करम चौपार्य सथ ।
शास्त्र किनिय कथय बूज़म,
कथायि हावम सतच वथ ॥

९ पूरक कौंबक रोच़क कोरुम,
पवनस त्रावम प्यठय किन्य वथ
अनाहतस बसम कोरुम,
केंह नो मोतुय सौय छम कथ ॥

१० केंहनस प्यठय क्या छुय न. चुन,
मौचिय केंह न त न. चुन त्राव ।

पोत् फीरिथ छुय तोतुय अ. चुन,
यिहोय व.चुन च्यतस थव ॥

११ कर्मुक कुला नो छुय बिनिथ ग.छुन,
वनिथ ग.छुन क्याह छुय पाय ।
कशफुक फलछय मीलिथ ग.छुन ।
व.लिथ रो.जुन कुम छुय न्याय ॥

१२ कायस अन्दर रुदुम अचिथ ।
न्यायस थवनम चौपयि शाय,
पाय केंह लोबुम नो माय छस क'रिथ,
ज़ायस न आयस लोगुम नाव ॥

१३ कोसम बागस घोतमय अ.चुन ।
पचियय मन त अ.चुन त्राव,
सरुप दरशुन छु तोतुय अ.चुन ।
कोत छुय ग.छुन पकुन त्राव ॥

१४ कामस सतिय प्रय नो ब.रम ।
क्रूदस घुतुम पवनुन फेश,
लूबस मूहस चरण चटिम ।
तृष्णा चजिम गयस खोश ॥

१५ ल्यक न थौक प्यठ शेरि ह्यचम ।
न्यंदा स.पतिम पथ ब्रोंठ तान्य,
ललि चिहन कल ज़ाह नो छ्यनिम ।
अद यलि स. पनिस व्यपिहे क्याह ॥

१६ ज़गस अन्दर कऽ त्याह पऽलिम ।
सारिय छि छांडान दयि सं'ज वथ,
लछि मं.ज अकिस दया ज़'निम ।
मऽनिम यी दप्यजि ईशर गथ ॥

१७ गायत्रेय अजपा छल. अकि तऽजिम ।
सूहम सतचिय क'रमस थक.
अहमस लोत पऽठय जठरय वऽजिम ।
गौर कथ पऽजिम च.ऽजिम चख ॥

१८ कौल तय मौल कथ क्योत छुय ।
तऽत. क्योत छुय शांत स्वभाव,
क्रयि हुंद आगुर वति क्योत छुय ।
अन्तः क्योत छ़्य गौर. सोंद नाव ॥

१९ ज्ञान तय ध्यान क्याह सन. करिय ।
च्यतस रठ त्रकरय वग,
मनस त पवनस मिलवन क.रय ।
सहजस मज़ कर तिरथ स्नान ॥

२० प्राणस सतिय लय यलि करम,
ध्यानस थवतम न रोज़नस शाय ।
कायस अन्दर सो.रुय वुछुम,
पायस पोवुम कदमस ग्राय ॥

२१ मनस ग्राय चज पजिकुय अन्न व्योम,
तव कुय बल गौम करमस क्रय ।

आगुर वातिथ अमरथय जल चोम,
छिवलय मन गोम ब्रमस प्रय ।।

२२ म्यथ्या कपट असथ त्रोवुम,
मनस कोरुम सुय वोपदीश ।
ज़नस अन्दर कीवल ज़ोनुम,
अनस ख्यनस कुस छुम दूष ।।

२३ कायम बल छुय मायस ज़ागुन,
प्राणस बल छुय शब्द स्वरूप ।
आयस बल छुय तत्व व्यद जानुन,
ज्ञानस बल छुय आदि अन्त तान्य ।।

२४ गगनस भूलस शिव यलि ड्यूठुम,
खस लबि न रोज़नस शाय ।
सिर्ययिकि प्रभाव. व्यशमय. ज़ोतुम,
ज़न गव थलस सत्य मीलिथ कयाह ।।

२५ वा.व,च ग्राया पानस वुछिम,
वानस डोठिम स्रोरि रंग वस ।
ध्यानस अन्दर. दम. दम. मीलस,
गौनन त्रोवुम मुचरिथ बर ।।

२६ रो.ज़नि आयस गछन गछयम,
पकुन गछयम वावलूक पाल ।
केहनस प्यठय न.चुन ग.छयम,
अचुन गछयम सूक्ष्म प्रकार ।।

२७ वाख छोह् दिथ मौखस बीठम,
मौखस ठीठम रोज़नस शाय ।
दौखस अन्दर न्यंदर मीठम,
बौद यलि ज़ीठम मीठम कथ ॥

२८ शेलायि हंज़्ऽय वौतमा बाजम,
सोंबरुम ट्योक पोष आसन पठ ।
मनस अन्दर व्य. चार कोरुम,
वुछम त ड्यू ठुम शेल कनिवठ ॥

२९ जनम प्राविथ व्यबव छोंडुम,
लूबन बूगन ब.रम प्रय ।
सोमुय आहार स्यठा जोनुम,
चोलुम दौख दौख वाव पोलुम ॥

३० ज़ल. प्येव पकुन ध्यकुन लूकन,
नारस अचुन मारस व्यद ।
आकऽश्य गमनो वुफुन आसुन,
कपट बासुन आसुन व्यथ ॥

३१ अन्दर आनिथ न्यबर छोंडुम,
पवनन रगन फ्युर नम सौर ।
ध्यान किन्य दयदगि कीवल जोनुम,
रंग गव सन्गस सत्य मीलित कयथ ॥

३२ ॐ कार शरीर कीवल ज़ोनुम,
शब्द रूप रस गंध स.तिय ह्यथ ।

आत्मस्वरूप सु पानय ओसुम,
परम तौथ दोरुम शेरस प्यठ ॥

३३ जन्म प्रावित कँम सोदुम,
धर्म पोलुम सौय छम सथ ।
न्यत्रन अन्दर प्रयम दोरुम,
चोरुम त मोनुम यिहोह् अख ॥

३४ सौरगस मा॰जुन कयाह छुय वासुनो,
नरकस वासुन आसुन दूश ।
चख र, शु न आसुन शिवमय खासुनो,
पान्य आसुन कासुन बीद ।

३५ मनस गुन छुय चंचल आसुन,
च्यतस गुन छुय गछुन दूर ।
जीवस गुन छुय बंद्धि त्रेश आसुन,
आत्मस गुन छुय न आसुन लीफ ॥

३६ शिव त शक्त कत्यू डोंठिम,
तिमव रटम कामंस जाय ।
दायस दऽर ससि सने मीठम,
तीलिथ रूजम त्राविथ लर ॥

३७ शेरस सतिय सोदा कोरुम,
हरस कौरुम गौड सीवन ।
शेरस प्येठय किन्य न॰ चान डयूठम
गछान डयूठुम आयम पछ ॥

३८ कुनुय अछुर वु वरि पोरुम,
सोय म्य रोटुम हृदयस मज !
सोय म्य लोत पाट'य गोरुम त चोरुम,
आ स़ स सरतल ग़यस सोन ॥



श्री कृष्ण कार जी

१ वंदे शिला त्वम् ईश्वरीय श्री शारिका देवी नमः
म्यहरे चराचर सुँदरी श्री शारिका देवी नमः ॥
२ अव्वल तुई आखिर तुई बातिन तुई ज़ाहिर तुई।
गाईब तुई हाज़िर तुई श्री शारिका................
३ जगरा सशे सामा तुई शाहे शहन्शांहा तुई ।
जिसमे जहां व जान तुई श्री शारिका......... ॥
४ लक्ष्मी जहां आरा तुई ममाई देश अफ्ज़ा तुई।
बुद्धी महाविद्या तुई श्री शारिका................ ॥
५ देवी जगत माता तुई शिव शक्त गुरु दाता तुई।
माता पिता भ्राता तुई श्री शारिका......... ॥
६ हाजत रवाऐ आलमें शाहे शुजाअत अक्रमे ।
कायम मुकामे दाम में श्री शारिका .... ॥
७ अज़हर से कारन बर्तनी दर्हर से आलम सर्वरी।
बर्फर कि इन्द्र मुश्तरी श्री शारिका............ ॥
८ सीमवो जरो बहरे दुरो लोलोऐ लाला गवहरी।
ज़ेबे दु आलम अनवरो श्री शारिका.........— ।

९ सहम व गजन फर वा हनत शिवजो अस्त ज़ेरे आसनत
लालो जवाहर दामनत श्री शारिका.......... ॥
१० तू चार दह रत्ने गिरा तू नव निदाने बेकराँ।
तू कानि गवहर दर अमा श्री शारिका........ ॥
११ शक्ते तू कुदरत शुद्ध अचान तहते तू भखते जाविदान।
तखते तू अरशे लामकान श्री शारिका........ ॥
१२ नागे त्रिलूकी तिरथ जात सरचश्मे आबे हयात।
आबस बकाये कथनाथ श्री शारिका............ ॥
१३ गरदे रहत् कोहलये बसर खाके दरत् नूरे नज़र।
संगे समीरत सीभव जर श्री शारिका........... ।
१४ नूरे जहांने दावरी ताबन्द मेहेर अनवरी।
माहे फिरोज़ा अख्तरी श्री........ ॥
१५ चिकरी शरव्हाजत् खा साजद् गदा रा पादश।
वाह - वाह चह लक्ष्मी थापना श्री.......... ॥
१६ रोगन चरागे पाम्परी सिन्दूरी खासा लाहोरी।
चहरव् कुनम् ज़रदोजरी श्री.............. ॥
१७ दर बारगाहत रोज़ व शब नारद मुनीशर बाअदब।
दरबानि दरगाहत् तलब श्री—————— ॥
१८ गुल अज़ सरे खुद मी कुनम,
ब्रिनज अज़ दिलो जान आपरम्
पूजायतू खाहम् श्री———— ॥
१९ अफ सुरदा अम मन बेनवा उफ तादा अभ बेदस्तव पा।
दस्तम् बिगीर अई देवता श्री शारिका——— ॥
२० ही इश्ट देवी शारिका दासे तु केहतर कृष्णाकार।
गोयद त्वता जोयद दया श्री शारिका———— ॥

पं० जानकीनाथ कौल 'कमल'

शिव - शंकर

मन स्थिर कर, मन्तर पर
शिव - शंकर शम्भो !

मन शु'द्ध बनि साक्षात् ननि
हनि हनि गटि मन्ज़ गाश
सुव्यचार ब्ययि श्रद्धायि पर—शिव०

प्रभातस अछ मन्दिरस
गंग - ज़ल तन ना'विथ
ध्यान - धारणायि मनि - मन्ज़ सुर—शिव०

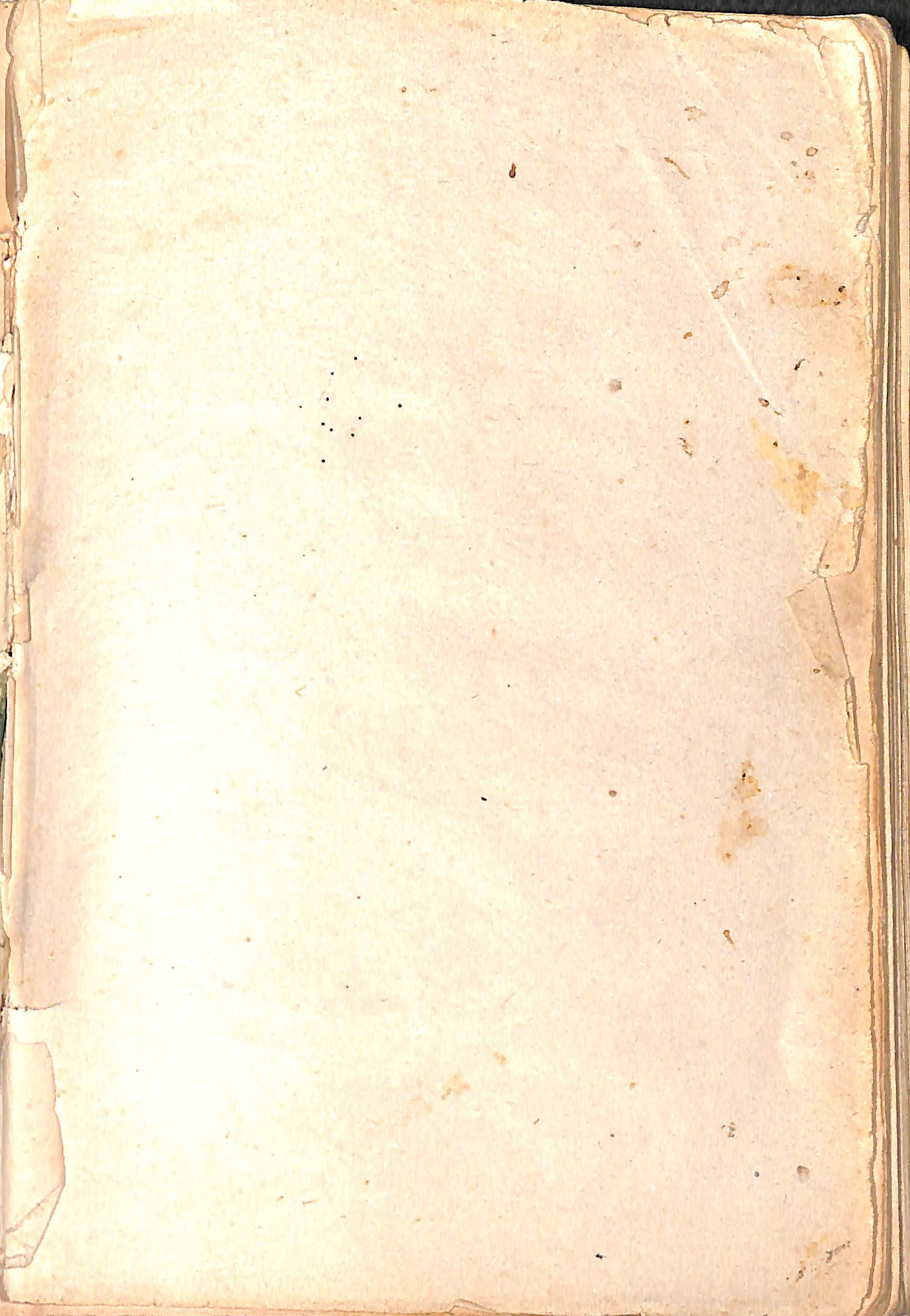
शिव नाथस गो'ड दि अशि - जल
शेरि लागुस भाव - पोष
मन - प्राण वार तुता कर—शिव०

इन्द्रिय नैवेद्य स्वम्बराव
मन - त्राम'रि मन्ज़ थाव
देह दीप ज़ा'लिथ वार पर—शिव०

वास'नायि धूप थाव दज़वुन
विज्ञान - दीप व्रज़वुन
व्यज़ - पूर्वक व्यज़्ना कर—शिव०

सहस्त्रदल 'कमल' फोलराव
शिव - अनुग्रह यि'थ प्राव
शिव न्यथ सुर चलि ज़्यत मर
शिव - शंकर शम्भो !





PANDZ

Bansi Art Press, Nai-Sarak
Phone : 73999